注意

この資料には以下のような問題によりスキャニング出来ない箇所が含まれます。

・糊付け等による開き不良

・原本破損

・製本上の問題

・その他

रामायणअध्यात्मविचार

अरण्यकाण्ड

जिसको

श्रीमद्गुणिजनग्राहक परोपकाररत अवधसमाचार-
धीश श्री मुंशी नवलकिशोरजीने कोलाख्य नगर-
निवासि पंचोली यमुनाशंकर नागर ब्राह्मण
से वेदान्तशास्त्र के विचारकर्त्ता पुरुषों
के निमित्त अपने व्यय से बनवाया ॥

जिसमें

श्रीपरब्रह्म परमात्मा रामचन्द्रजी महाराजका चरित्र अध्यात्म
तथा वेदान्त शास्त्र की रीति से श्रुतिसमन्वयपूर्वक
वर्णन कियागया है ॥

寄贈
昭和46年度科学研究費購入図書
東外大・東洋文化研
合同海外学術調査団
氏

दूसरीबार

103

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी०, आई, ई) के छापेखाने में छापागया
नवम्बर सन् १९०५ ई०

इस पुस्तक की रजिस्टरी [illegible] मुताबिक सन् [illegible] ई० के [illegible] नम्बर पर हुई है इसलिये,
किसी को छापने का अधिकार नहीं है ।

रामायण अध्यात्मविचार अरण्यकाण्डका सूचीपत्र ॥

अंक	नामप्रकरण	पृष्ठारम्भ	पृष्ठपर्य्यन्त	अंकसंख्या
१	जयन्तकाक चरित्र वर्णन	१	६	२
२	रामादिका अत्रिऋषि के आश्रम पर जाना	६	१७	४
३	रामादिका शरभङ्ग ऋषि से मिलना	१७	२३	३
४	रामादिका सुतीक्ष्ण ऋषि से मिलना	२४	२९	२
५	रामादिका अगस्त्य ऋषि के आश्रम परजाना	३०	३६	२
६	रामादिका पञ्चवटी में निवास वर्णन	३७	४०	१
७	रामजी का लक्ष्मणजी को उपदेश करना	४०	४९	३
८	लक्ष्मणजी का शूर्पणखा की नाक कान काटना	५०	५५	१
९	रामजीका खरदूषणत्रिशिरादि का बध करना	५५	७१	७
१०	रावणका सीताहरण करना	७१	९०	७
११	रामलक्ष्मणको सीता के विरह में विलापकरना व सीताको ढूंढना	९०	१००	१
१२	रामजीका जटायुकी क्रियाकरना	१००	१०४	२
१३	रामलक्ष्मणका शबरी के आश्रम पर जाना	१०४	११५	५
१४	रामजीका सीताके विरहमिष उपदेश वर्णन	११५	१२०	२
१५	रामलक्ष्मणका पंपासरपर निवास वर्णन	१२०	१२५	३
१६	रामजीका अरु नारद ऋषिका समागम	१२५	१३७	५

東京外国語大学
157122
47.3.31
図書館蔵書

ॐपरमात्मने नमः ॥

अथ अरण्यकाण्ड की ॥

भूमिका ॥

१ ॥ प्र० ॥ शिष्यउवाच ॥ हे गुरो ! आपने पूर्व कहा है कि सम्यक् ज्ञानस्वरूप रामजीके निमित्तसे राजा दशरथ का वनगमन है परन्तु अबतक उसका कोई प्रसंग आपने कहा नहीं, अरु हे भगवन् ! पूर्व आपने कहाहै कि क्षेत्रज्ञरूप राजा दशरथ अन्तसमय उक्त रामजी में आसक्त हुआ उनका स्मरण करते देहत्याग उनमें प्रवेशको पाया, अरु अपने कर्मके फल भोगार्थ रामजी के निमित्तसे वनयात्रा कर दुःख सुख भोगताहुआ, परन्तु हे भगवन् ! जो जीवात्मा सम्यक् ज्ञानस्वरूप रामजी में प्रवेश पावताहै सो। "यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय। तथा विद्वान् नामरूपादिमुक्तः परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम्"। इत्यादि श्रुति प्रमाणसे समुद्रमें नदीवत् अभेदहुआ मोक्षहोता है, तब राजा दशरथ उक्त रामजी में प्रवेशको पाया हुआ मोक्ष न होय के संसाररूप अरण्यमें कैसे प्रवेशको पाया, अरु सुख दुःख कैसे भोगा सो आप कृपाकरके कहिये। अरु जो जो चरित्र रामजीने किये अरु तिनके निमित्तसे राजा दशरथके कर्म भोगहुए अरु उनहीं चरित्रोंद्वारा ईश्वरावतार भगवान् रामजीने लोकों के कल्याणार्थ गुह्य उपदेश किये सो सर्व हमारे बोधार्थ आप कृपाकरके कहिये ॥

१ ॥ उ० ॥ श्री गुरुरुवाच ॥ हे सौम्य ! इन तुम्हारे सर्वप्रश्नों का उत्तर आगे अरण्यकाण्डके प्रसंगसे कहेंगे। हे सौम्य ! शास्त्रकारों ने कहीं कर्मविधानमें ऐसा भी कहाहै कि जब तक मृतक हुए मनुष्य का ज्येष्ठपुत्र सपिण्डीकर्म करतानहीं तावत् वो प्रेतत्व से निवृत्तहोय अपनीगतिको पावता नहीं, अतएव उक्त राजा दशरथ की सपिण्डीकर्म रामजीने चित्रकूटपर आपकिया तब उसका प्रेतत्व निवृत्तहोय उसने अपनी भावनाके अनुसार रामजी में

प्रवेशको पाया ताते अब उसका प्रसंग काककी लीलाद्वारा कहेंगे अरु विशेष सीताहरण के प्रसंगसे कहेंगे। हे सौम्य! तुमने कहा कि राजा दशरथ का मरणोत्तर रामजी में प्रवेश होने से श्रुति प्रमाण उसका मोक्षहोना चाहिये सो न होयके उक्त राजा दशरथ रामजीके निमित्तसे वनयात्रा कर अपने कर्मका फल सुख दुःख भोक्ताहुआ सो बनै नहीं। हे सौम्य! जो पुरुष प्रथम साधनोंद्वारा अपने अन्तःकरणको शुद्धकर। "आत्मा वा अरे द्रष्टव्यःश्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः। इत्यादि प्रमाण से आत्मा का श्रवण मनन करता है तब उसका सञ्चित अरु आगामी दोनों कर्म। "ज्ञानाग्निदग्धकर्म्माणम्"। इत्यादि प्रमाणसे भस्म होजाते हैं, अरु आत्म अध्यास करतसन्ते निरहङ्कार हुआ अपने शरीरके प्रारब्धभोग भोगके तिसके समाप्त होने से देहत्यागता है तब वो विद्वान् देहत्याग सम्यक् ज्ञानस्वरूप साक्षी विज्ञानघन आत्मारामजी बिषे समुद्रमें नदीवत् प्रवेशपाय मोक्ष होताहै। हे सौम्य! "स्वप्नान्तंमेसोम्यविजानीहीति"। इत्यादि श्रुति प्रमाण से सुषुप्ति अवस्थामें अरु मरणके समय अरु प्रलयमें सर्वजीव परमात्माको समान प्राप्तहोते हैं, परन्तु जो उक्तप्रकार साधन करके अरु आत्माके श्रवण मनन ज्ञानसे अशेष कर्म को दग्धकरके जो मरणसमय देहसे उत्क्रमण न होय वहांही अपने बिम्बरूप अधिष्ठान आत्मामें प्रवेश पावताहै सो मोक्षहोता है अरु जो उक्त प्रकारसे अपने कर्मादिकों का अभाव किये विना ही आत्मामें प्रवेशपावता है सो मोक्ष न होके ज्योंकात्यों निकल आवता है अरु अपने कर्म्मों का फल भोगता है [जैसे जो लवणकी डली रूखी होती है सो अपने कारण जलमें गई जल रूपही होती। अरु जो डली चिकनाई साथ चिकनी हुई जलमें जातीहै सो अपने कारण जलके साथ मिलीहुई भी ज्योंकीत्यों निकलआवती है] हे सौम्य! तैसेही जो पुरुष अपनी काम कर्मरूप चिकनाई को अभावकर अपने कारण आत्मरूप जलमें जाता है सो आत्माही होताहै, अरु जो अज्ञानी कामकर्मादिरूप चिकनाई के साथ चिकनाहुआ अपने कारण आत्मारूप जल में गयाहुआ भी ज्योंका त्यों निकलआवताहै। ताते हे सौम्य! मोक्षहोने न होने का विचार उक्त प्रकार समझना, अरु राजा दशरथको पूर्वज्ञान कर्मकासमुच्चय करनेवालाकहाहै ताते उक्त राजा दशरथ जो राम जीमें आसक्त चित्त हुआ प्रवेशको पाया सो चिकने लवणवत् सकाम क्रियाके संस्काररूप चिकनाई करके चिकनाहुआ पाया है अतएव उसको उक्त रामजी में प्रवेशपाये सन्ते भी संसाररूप अरण्यमें अपने कर्मोंका फल सुखदुःख भोक्तव्य आया। अरु जो ऐसा कहो कि एकही शरीरकरके परस्पर में विरुद्धधर्मा जे अज्ञानी जीव दशरथ अरु ज्ञानस्वरूप आत्मारामजी इनदोनोंका व्यापार कैसे बनेगा, तो श्रवणकरो हे सौम्य! देखो सामान्यरीत्या सर्व शरीरमें अन्तःकरणोपहित साक्षी ज्ञानस्वरूप आत्मा अरु अन्तःकरण विशिष्ट चैतन्य अज्ञानी जीवात्मा सो वास्तव में एक रूप होतसन्ते भी अन्तःकरण रूप उपाधिकरके विरुद्धधर्मा हुये दोरूपसे नित्य स्थितहैं तिनका एकही शरीरसे सर्व व्यापार सिद्धहोताहै, अरु यहां विशेष करके [जैसे किसी पुरुषके शरीर में प्रेत प्रवेशकरता है तब एकही शरीरके इन्द्रियादि अवयवों द्वारा उस प्रेतका भी अरु उस शरीरी जीवात्मा का भी दोनोंका व्यापार सिद्ध होताहै, तहां जब प्रेतकी चेष्टा व्यापार बलवान् होताहै तब तिसकरके शरीरी जीवात्माका व्यापार आच्छादित होताहै अरु जब शरीरीका व्यापार बलवान् होताहै तब प्रेतका व्यापार आच्छादित होताहै] तैसेही एक रामजी के शरीर में दशरथ का अपने लिंग शरीर द्वारा प्रवेश होनेसे जब जब उसका अपने कर्मके आश्रय सुख दुःख हर्ष शोकादिरूप व्यापार होनेको बलवान् होताहै तब तब रामजी का विशेष चरित्र तिरोधानहोताहै, अरु जब ईश्वरावतार रामजी की इच्छानुसार अपने भक्त मुनिजनोंको दर्शनदेना उनसे अपने स्वरूपकी स्तुतिद्वारा अपने स्वरूप अरु महिमाको लोक बिषे जनाहितार्थ प्रकट करावना इत्यादि व्यापार प्रकट होताहै तब उक्त दशरथका व्यापार तिरो-

धान होताहै, इसप्रकार एक रामजीकेही शरीरद्वारा उक्त रामजी का धर्मरक्षणार्थ अपने चरित्रों द्वारा गुह्य उपदेशादि करने रूप व्यापार, अरु उक्त दशरथ का अपने कर्मानुसार दुःख सुख भोक्तृत्वादि व्यापार समझना, अरु इस अरण्य काण्ड को षोडश प्रकर्ण से वर्णन करेंगे ॥

तहां

१ जयन्त काक की कथा २ रामजीकाअत्रिकेआश्रमपरजाना ३ रामजीकाशरभंगसेमिलना ४ रामजीका सुतीक्ष्ण से मिलना ५ रामजीकाअगस्त्याश्रमजाना ६ रामजी का पंचवटी में निवास ७ लक्ष्मणजीको उपदेश करना ८ शूर्पणखा की नाक काटना ९ खरदूषण का वध करना १० रावण का सीता हरण करना ११ रामजी का विलाप करना १२ गृध्रराज की क्रिया करनी १३ शबरीके आश्रम पर जाना १४ रामजी का विरह मिश उपदेश १५ पंपासर का वर्णन निवास १६ रामजी अरु नारदका समागम

इस प्रकार इस अरण्यकाण्ड का प्रकर्ण विभाग विचार है। हे सौम्य! रामजी ने अपने बिषे वल्कल जटा आदि मुनिवेष, अरु धनुर्बाण खड्गादि क्षत्रिय वेष इसप्रकार उभय वेष धारणकरके कर्म्मी अरु ज्ञानीका समुच्चय अपनेबिषे देखायाहै,तहां कर्म्मीका वेष वनयात्राके प्रारंभसे पुनः अयोध्यागमन पर्यन्त धारणकरके संसारी जीवोंके अर्थ संसार में जन्मपाय यज्ञोपवीत संस्कारसे प्रारभ्य।"आदौस्ववर्णाश्रमवर्णिताः क्रियाःकृत्वासमासादितशुद्ध मानसः"इत्यादि प्रमाणसे।यावत्पर्यन्त अपनेस्वरूप ज्ञानार्थ यथार्थजिज्ञासा न उत्पन्नहोय तावत्पर्यन्त निष्काम विहित कर्म करना अरु समाप्यतत्पूर्वमुपात्त साधनः "। इत्यादि प्रमाणसे धनुर्बाणादि क्षत्रियवेष निरन्तर धारण करके ज्ञानप्राप्तिके साधन जे प्रणवादि उपासना तिसको यावत् शरीर रहै तावत् करताही रहना, यह सूचित किया है । अरु रामजी ने साधारण कर्म्मी का वेष अरु असाधारण ज्ञानीकावेष धारण करके कर्म्मीके वेषद्वारा तो अपने बिषे कर्म वशात् राजा दशरथ का प्रवेश देखाया, अरु ज्ञानीके वेष

द्वारा अपनी ज्ञानस्वरूपता देखाया, ताते रामजीने जो उभयवेष धारणकर जो जो लीलाकिया है सो सो बाह्य देखने में तो अन्यप्रकार प्राकृत जीवोंकी चेष्टावत् प्रतीत होती है, अरु तिसका अन्तर लक्ष्य उभय प्रकारके धर्मका बोधक है, एतदर्थही ईश्वरने अपने बिषे रामकृष्णादि अवतार शरीर धारणकर जो जो प्राकृत मनुष्योंवत् अपनेबिषे मोहादि देखाये हैं सो सो सर्व बाह्यदृष्टि से देखने में तो अग्राह्यहैं अरु जो उनका अन्तर लक्ष्य देखिये तो सर्वप्रकार ग्राह्य अरु धर्मबोधक कल्याणकारी हैं । हे सौम्य! "एष सर्व्वेषु भूतेषु गूढोत्मा न प्रकाशते"। "तिलेषु तैलंदधिनीव सर्पिरापः श्रोतस्त्वरणीषु चाग्निः"। इत्यादि श्रुतिप्रमाणसे सम्यक् ज्ञानस्वरूप आत्मा रामजी, जैसे तिल में तैल, दधिमें घृत, श्रोत में जल, अरु काष्ठमें अग्नि, तद्वत् सर्वमें गुह्य व्याप्त हैं, तहां यंत्र द्वारा तिलसे तैल, मन्थनद्वारा दधि से घृत, खननद्वारा श्रोतसे जल, घर्षणद्वारा काष्ठसे अग्नि, इत्यादिकों को प्रत्यक्ष करते हैं तैसे । "तस्याच्छरीरात्प्रवृहेन्मुञ्जादिवेषीकांधैर्येण "। इत्यादि प्रमाणसे श्रुति शास्त्र के विचारपूर्वक पञ्चकोशात्मक उपाधिसे पृथक्कर धीरजपुरुष अपने आप ज्ञानस्वरूप आत्मारामजी को साक्षात् देखते हैं जैसे मुञ्जतृणको पृथक्कर तद्गत एशीका (तूरी सेंठा) को प्रत्यक्ष देखते हैं तैसे । हे सौम्य! जैसे ज्ञानस्वरूप आत्मा रामजी सर्व देहादि अनात्माबिषे गुह्य (छिपेहुये) हैं तैसेही उनके धर्मबोधक उपदेश; जो उन्होंने अवतार धारणकर लोक हितार्थ किये हैं सो; उनके प्राकृत मानुषीय चरित्रोंवत् चरित्रों के अन्तर गुह्य हैं, अतएव उनका जानना सर्व को सुगम नहीं जिनपर उनकी कृपा होती है सोई जानते हैं, अरु कृपा तब होती है जब शुद्ध मनसे श्रद्धापूर्वक उनका श्रवण मनन करते हैं अतएव जिसको रामजी के चरित्रों का गुह्य अभिप्राय जानने की इच्छाहोय सो श्रद्धान्वितहोय उक्त रामजी के श्रवण मनन ध्यान परायण होवे ॥

इति अरण्यकाण्डकी भूमिका ॥

ॐ

अथ शान्तिपाठः ॥

ॐ शन्नोमित्रः शं वरुणः शन्नो भवत्वर्य्यमा ।
शन्न इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः ॥
नमोब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि ।
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि ॥
सत्यं वदिष्यामि तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु ।
अवतुमामवतुवक्तारं शान्तिःशान्तिःशान्तिः ॥

श्लोकः

मूलंधर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददम् ।
वैराग्याम्बुजभास्करंत्वघहरं ध्वान्तापहंपापहम् ॥
मोहाम्भोधरपुङ्गपाटनविधौ खेसम्भवंशङ्करम् ।
वन्दे ब्रह्मकुलं कलंकशमनं श्रीरामभूपप्रियम् ॥
सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुं पीताम्बरं सुन्दरम् ।
पाणौ बाणशरासनं कटिलसत्तूणीरभारं वरम् ॥
राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितम् ।
सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे ॥
ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्त्तिम् ।
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ॥
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतम् ।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तन्नमामि ॥

ॐपरमात्मने नमः ॥

अथ रामायणेऽध्यात्मगोचरे किष्किन्धाकाण्डः प्रारभ्यते

"शान्तिःपाठ"

ॐ सहनाववतु । सहनौ भुनक्तु । सहवीर्य्यंकरवावहै ।
तेजस्विनावधीतमस्तु माविद्विषावहै ॥
ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः ॥

भूमिका

॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हे सौम्य ! पूर्व आरण्यकाण्डके प्रसंगसेसूचित किया कि जो ज्ञानकर्म का समुच्चय सेवन करनेवाला अपनी अन्तावस्थामें सकाम क्रियाके वश हुआ देहत्यागताहै तब उक्त समुच्चयके प्रभाव से ब्रह्मलोकको प्राप्त होत है परन्तु उसके जे अन्त समयके सकाम कर्म हैं;कि जिनके वशहोय मरण को प्राप्त हुआहै; सो उसको वहां ठहरने देते नहीं तब वो । "आब्रह्मभुवनाल्लोकाःपुनरावृत्तिनोऽर्जुन" । इत्यादिप्रमाणसे पंचाग्नि के क्रमसे इस मनुष्यलोक में जन्मपाय अपनेकर्म्मोंकेफल भोगता है तहां जब उसके पूर्वले अवशेष रहे सकाम कर्म अपना फल देनेको सम्मुख होतेहैं, तब उसकी पूर्वकीजो परोक्षानुभूति ब्रह्म विषयिणी प्रज्ञाहै तिसको प्रथम विषयानुराग उत्पन्नकराय धर्षण करतेहैं,पश्चात् अपनी प्राबल्यतासे उस प्रज्ञाको मृगतृष्णा के जलवत् असत्य देखनेमात्र शुक्तिकामें रजतवत् अतिसुन्दर अरु परिणाममें रज्जुमें सर्पवत् भयका देनेवालानामरूप क्रियात्मक संसार तिसमें आसक्त करते हैं तब उस प्रज्ञासे पूर्वके ज्ञानवैराग्यके संस्कार पृथक् होय संसारकी ओर होतेहैं, अरु जब उक्त प्रज्ञासे ज्ञान वैराग्यके संस्कार पृथक् होतेहैं तब वो अहंकारादि आसुरी सम्पदाके वश होय अनेक प्रकारके क्लेशभोगतीहै, अरु पूर्वकी परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा के अभाव हुये क्षेत्रज्ञ

जीवात्मा इस संसाररूप अरण्यमें अनेक दुःख भोगता विलाप करता पुनः उक्त प्रज्ञा की प्राप्त्यर्थ क्रमसे तीर्थ यात्रा देवार्चन प्रतिमा पूजन तप आदि साधनोंमें प्रवृत्तहोय साधारण परा विद्यापाय'श्रवण, मनन, निदिध्यासन, साक्षात्कार, इन साधनों में से निदिध्यासनरूप साधनकी सविकल्प समाधि को पाय तहां कुछकाल विश्राम करताहै। यह संक्षेपमात्र सूचितकिया॥ अब इस किष्किन्धाकाण्डके प्रसंगसे प्रथम मंगलाचरण पूर्वक राम अरु हनुमान्का समागम पश्चात् उक्त रामजी के निमित्त से सत्त्वगुणात्मक निवृत्तिरूप ऋष्यमूक पर्वत पर; कि जहां कर्म्म काण्ड पूर्व मीमांसारूप बालिकी प्रवृत्तिनहीं; तिसपर ज्ञानकांड उत्तर मीमांसारूप सुग्रीवसे समागम कहा जायगा, पश्चात्पूर्व मीमांसारूप बालिके बाधरूप बध पूर्वक उक्त सुग्रीवको वेदमंत्र रूप वानरोंका राज्यप्राप्ति कहा जायगा,तदनन्तर चातुर्मास के प्रसंगसे धर्मनीतिका उपदेश कहाजायगा, तदनन्तरउक्त सीताऽन्वेषण के निमित्त उक्त वानरों की यात्रा कही जायगी, पश्चात् योगरूप विवरमें स्वयंप्रभा(भेदभक्ति)से अरु हनुमदादि वानरों का समागम कहा जायगा, तदनन्तर उक्त समुद्रके तटपर साधारण हठयोग व्रतरूप सम्पातिसे उक्त वानरोंके समागम पूर्वक सागरके पारगमनार्थ उक्त वानरोंकाउत्साह अरु जाम्बवान्कृत हनुमान् की प्रशंसा कहीजायगी, इस प्रकार सप्त प्रकरणकरके इस किष्किन्धाकाण्ड को अध्यात्मविद्यासे समन्वय करताहुआ वर्णन करताहौं तिसको सावधान होय श्रवण करो॥

॥ प्रकरणकी अनुक्रमणिका॥

१ मंगलाचरणपूर्वक राम हनुमान् समागम २ राम सुग्रीव समागम ३ बालिकाबध अरु सुग्रीवकोराज्यप्राप्ति ४ चातुर्मास प्रसंगोपदेश ५ सीतान्वेषणार्थ वानरोंकी यात्रा ६ स्वयंप्रभा वानर समागम ७ सम्पाति वानर के समागम पूर्वक सागर पार गमनार्थ उत्साह हनुमान् स्तुति॥

इति भूमिका

ॐपरमात्मने नमः।

रामायणेऽध्यात्मविचारे किष्किन्धाकाण्डः

ॐ

अथ रामायणे ऽध्यात्मगोचरे किष्किन्धाकाण्डे राम हनुमत्समागमवर्णनन्नामप्रथमं प्रकरणं प्रारभ्यते॥

श्लोक॥

कुन्देन्दीवरसुन्दरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ शोभाढ्यौवरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ॥ मायामानुषरूपिणौरघुवरौ सद्धर्म्मवन्तौहितौ सीताऽन्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौतौ हिनः १ ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनञ्चाव्ययं श्रीमच्छम्भुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितंसर्व्वदा॥ संसारामयभेषजं सुखकरं श्रीजानकीजीवनं धन्यास्तेकृतिनः पिबन्ति सततं श्रीराम नामामृतम् २॥

अर्थ॥

॥श्रीगुरुरुवाच॥ हे सौम्य! प्रथम भगवान् रामजी से प्रार्थना करते हैं कि हे रघुकुलके श्रेष्ठ रामलक्ष्मण दोनों भ्राता! आप मुझ को अपनी अनन्यभक्ति प्रदान कीजिये, अरु आप कैसेहौ दोनों भ्राता कुन्द अरु नीलकमलवत् श्यामगौर अरु अतिसुकुमार हौ, अरु आप दोनों भ्राता बलके आयतन अतिबलीहौ अरु विज्ञान (विद्या) के धामहौ [अर्थात् यावत् वेदादि विद्या हैं तिन सर्वके आप आश्रयहौ,] अरु अपनी अलौकिक शोभा-

संयुक्तहुये उत्तम धनुषके धारणकर्त्ताहौ, अरु वेदजिनकी प्रशंसा करते हैं अरु गो ब्राह्मण जिनको अतिप्रियहैं, अरु अपनी इच्छा रूपामायाकरके सशक्ति मनुष्यरूप धारणकर सद्धर्म्मजे पितुराज्ञा का पालन अरु गुरु शुश्रूषारूप कवचके धारक सर्वके हितकारी सीताके अन्वेषण में तत्परहुये वनके मार्गमें विचरतेहौ [अर्थात् मुमुक्षुओं के कल्याणार्थ ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञारूपा सीताके अन्वेषणार्थ संसाररूप आरण्यमें साधनरूप मार्गमें विचरते सूक्ष्म उपदेश लखावते हौ] तिस आपको नमस्कारहै ॥ १ ॥ हे सौम्य ! अब रामनामकी प्रशंसा रामजीके समक्ष करते हैं कि हे भगवन्! वो पुरुष धन्य अरु परम सुकृती कृतकृत्यहैं जो आपके श्रीराम नामरूप महा अमृतको, जो कि वारंवारके जन्ममरणको अभावकर अमरभावको प्राप्त करनेवाला है; पानकरतेहैं पुनः वो कैसाहै आप का रामनामामृत जो वेदरूप क्षीरसागरसे प्रकट हुआहै, अरु वो कलियुगके दोषरूप रोगोंको नाश करनेवालाहै, अरु आप अविनाशी है [अर्थात् कलंक रहित सदाशुद्ध वेदके साथ नित्य उदयअस्तसे रहितहै] सो आपका रामनामामृत जैसे चन्द्रमा में अमृत रहताहै; तैसे शरद्ऋतुके पूर्णचन्द्रमावत् निर्दोष परमउज्ज्वल सदा शोभनीयजो श्रीशिवजी महाराजका मुखचन्द्र तिस विषे व्यवधानसे रहित रहता है, अरु पुनः संसारके जे जन्म मरण लक्षणरूप अनिवार्य रोगहैं तिनको नाशकर अमर (ब्रह्म)पदको प्राप्त करनेवालाहै, अरु सीताको जीवनदाता प्राण काभी प्राणहै [अर्थात् ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञाको अधिष्ठानरूप जीवनका दाताहै]। "प्राणस्यप्राणः"। "नप्राणेन नापानेन मर्त्यो जीवति कश्चन। इतरेणतु जीवन्ति यस्मिन्नेतावुपाश्रितौ"। इत्यादि प्रमाणसे ॥

"सो०" मुक्तिजन्ममहिजान ज्ञानखानि अघहानिकर ॥
जहांबस शंभुभवानि को काशी सेइयकसन १
जरतसकलसुरवृंद बिषमगरलजेहि पानकिय ॥
तेहिनभजेसि मतिमन्द कोकृपाल शंकरसरिस २

१ अर्थ हे सौम्य! काशीक्षेत्रमें श्रीशिवजीमहाराजकरके तारकं मन्त्रका उपदेशपावनेसे सर्वजीव मोक्षको प्राप्तहोते हैं, अतएवकाशी क्षेत्र मुक्तिका उत्पादक होने से उसको मुक्तिकी जन्मभूमि कहते हैं, पुनः कैसी है काशी ज्ञानकी खानि है [अर्थात् ज्ञानदोप्रकारकाहै तहां एक परोक्ष (शास्त्रीय) ज्ञान दूसरा अपरोक्ष (आत्मानुभव) ज्ञान, इनकी तो मानो काशी आकरहै। अरु पुनः कैसी है काशी पापोंका नाशकरनेवाली है। ऐसी जो मुक्तिकी उत्पादक अरु उक्त उभयज्ञानकी आकर अरुपापोंको नाशकरनेवाली काशी कि जिसविषे साक्षात् शिव पार्वतीजी निवास करतेहैं तिस काशी को क्यों न सेवन करिये किन्तु विवेकी पुरुष को अवश्य काशी सेवन (निवास) करना योग्यहै ॥ १ ॥ अरु जो काशी के नाथ साक्षात् शिवजी महाराज हैं सो कैसे कृपालु हैं कि जब देवता अरु दैत्योंने मिलके समुद्रका मन्थन किया तब प्रथम उसमेंसे हलाहल कालकूट विष निकला तब उसकी विषमय ज्वाला करके इन्द्रादि सर्वदेवता जलनेलगे, तब सर्वदेवताओंको उक्तविष कर के दुःखित देख शिवजी महाराज ने उस विष को पानकर अपने कण्ठ में धार देवताओं को क्लेशसे मुक्तकिया। ऐसे जे परम कृपालु भगवान् शिवजी कि जिनकी कृपालुता को उपमा देने योग्य कोई नहीं तिन शिव जी महाराजको अरे मन तू क्यों नहीं सेवता (उपासता) किन्तु तुझको अपने कल्याणार्थ शिवजी का सेवन करना योग्यहै ॥२॥ अथवा "काशीक्षेत्रंशरीरं"। इत्यादि श्रीशङ्कराचार्यजीके वाक्य प्रमाण अब अध्यात्मविद्याकी रीति से शरीरको काशी रूपसे वर्णन करतेहैं हे सौम्य! जैसे काशी पंच वीस कोशमें होने से उसको पंचक्रोशी कहतेहैं, तैसेही यह शरीर पांच तत्त्वोंके पंचवीस विभागसे पंचकोशात्मक है तातेयह पंचक्रोशी है अतएव इसको काशी कहते हैं, अरु जैसे काशी की-काशी, वाराणसी, अतःअही, अरु अविमुक्ति, यह चार परिक्रमा संज्ञाहै, तैसेही इस शरीरमें, जाग्रत्, स्वप्न, सुषुप्ति, अरु तुरीया यह चार अवस्था रूप चार परिक्रमा हैं। अरु जैसे काशी में जो

अविमुक्त संज्ञक भूमि में देह त्यागता है सो विनाही भैरवी यातना के भोगे सद्य मुक्ति पावता है । तैसेही इस शरीर रूपा काशी में जो तुरीयावस्थारूपा अविमुक्ति में देहादि अनात्म अभिमानरूप शरीरको त्यागता है सो जीवतेही मोक्ष होता है अरु जैसे काशी में ब्रह्मनालके मार्ग से विश्वेश्वरके दर्शनकोजाते हैं । तैसेही इस शरीर में योगीजन सुषुम्णानाड़ीरूप ब्रह्मनाल के मार्ग से तुरीयस्थ शिव परमात्माका साक्षात् दर्शन करते हैं ॥ अरु जैसे काशी के ज्ञानवापी कूपमें गुप्त अरु तिस के निकटही प्रत्यक्ष विश्वनाथहैं । तैसेही इस शरीर में हृदय कमलकी नाल जो मज्जा तन्तुसे सम्बन्ध पायी सुषुम्णा नाड़ी है तिसका जो हृदयगत सूक्ष्म रन्ध्र है कि जिस बिषे मस्तकके ब्रह्मरन्ध्रसे उक्त नाडीद्वारा आया जो चैतन्य तत्त्वका ज्ञानरूपप्रकाश सो हृदय कमलके ज्ञानरन्ध्र साथ मिलने से अंगुष्ठमात्रकहाजाताहै। "अंगुष्ठ मात्रःपुरुषोऽन्तरात्मा सदाजनानांहृदयेसन्निविष्टः" । इत्यादि प्रमाणसे, सो उक्त ज्ञानवापी में गुप्त (विशिष्ट) अरुप्रकट (तदुपाहित) प्रत्यक्ष विश्वनाथहैं । अरु जैसे काशी में मणिकर्णिकातीर्थ है तिसमें प्रथम स्नान कर के तब विश्वनाथ के दर्शन को जाते हैं तैसेही इस शरीर रूपा काशी में प्रथम शमदमादि अरु श्रवण मननादि शुद्ध सत्त्वगुणात्मक अन्तरंग साधनरूप मणिकर्णिका में स्नानकर पश्चात् सुषुम्णा नाड़ीरूप ब्रह्मनाल के मार्ग से आत्मरूप विश्वनाथ के साक्षात् दर्शन के अर्थ योगी लोग जाते हैं । अरु जैसे काशी के निकट परम पावनी गङ्गा का अखण्ड प्रवाह चलता है । तैसेही इस शरीर के निकट निष्काम सन्ध्या गायत्री आदि नित्य विहिताचरण क्रियारूपा परमपावनी गङ्गाका " अहरहःसंध्यामुपासीत " । इत्यादि प्रमाण से । अखण्ड प्रवाह चलता है । अरु जैसे काशीमें विश्वनाथ अरु अन्नपूर्णा विराजमानहुये सर्व का कल्याण करते हैं । तैसेही इस शरीर में । " शिवमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते स आत्मा स विज्ञेयः " । इत्यादि प्रमाण से तुरीयस्थ साक्षी आत्मा साक्षात् विश्वनाथ हैं अरु अपरोक्ष तद्विषयिणी प्रज्ञावृत्तिरूपा साक्षात् अन्नपूर्णा देवी यह दोनों विराजमानहुये सर्वका कल्याणकरते हैं । अरु मुख्यप्राण साक्षात् भैरव है, अरु सर्वविघ्नोंको नाशकरनेवाला शुद्ध सत्त्वगुणात्मक संस्कृत मन किंवा त्रिमात्रिक प्रणवोपासनारूप समस्त विद्याका आयतन साक्षात् ढुंढिराज गणपति है तिसके दर्शनकरने के पश्चात् उक्त विश्वनाथ का दर्शन होता है, अरु इस शरीररूपा काशी में यावत् इन्द्रियादिकों के गोलक हैं सोई सर्व उत्तमोत्तम देवालय हैं तिनबिषे तत्तदभिमानी देवता अरु तिनकी शक्तियांरूपा देवियां सुखनिवास करते हैं । अरु इस शरीर रूपा काशी में वेदादि अनेक विद्याके संस्काररूप विद्वान् पण्डित निवासकरते हैं, अरु दैवी सम्पदाके लक्षणरूप परमपवित्र सत्त्वगुण स्वभाव वाले संन्यासी निवास करते हैं, अरु यावत् प्राक्तन संचित संस्कार हैं सोई सर्व अनेक पूजावत् इस शरीर रूपा काशी में वास करते हैं, अरु जैसे काशीमें अनेक गलियांहैं अरु तिन सर्व बिषे महादेवके दर्शन हैं । तैसेही इस शरीर रूपा काशी में । " हृदिह्येषआत्मा । अत्रैतदेकशतंनाड़ीनांतासांशतंशतमेकैकस्यां द्वासप्ततिर्द्वासप्ततिःप्रतिशाखानाड़ीसहस्राणिभवन्ति" । इत्यादि श्रुति प्रमाणसे एक दूसरीसे मिलके हृदय साथ सम्बन्ध रखने वाली सर्व बहत्तर करोड़ नाड़ियां कहीहैं, सोई सर्व गलियांहैं, अरु यावत् शरीरस्थ नाड़ियां हैं सो सर्व पोली हैं अरु हृदयसाथ मिलीहैं अतएव हृदय कमलगत जो अन्तराकाश रूप अन्तःकरणहै सो उक्त सर्वनाड़ियोंमें व्याप्तहै अरु तिसके साथही व्यान नामक प्राणभी व्याप्तहै, अरु हृदयाकाशगत अंगुष्ठमात्र जो स्वयं ज्योति चैतन्य महासूक्ष्म आत्मतत्त्व परम शिव है सो भी अन्तराकाश साथ मिलके सर्वनाड़ियों बिषे पूर्णता से व्याप्त है सोई इस शरीररूपा काशीकी सर्वगलियों २ में साक्षात् महादेव सुशोभित हैं । अरु जैसे काशीकी महाश्मशान संज्ञाहै । तैसेही इस विद्वान् के शरीर में ज्ञानाग्नि करके समस्त अनात्म अभिमान

अरु सर्व संचितादिकर्म संस्काररूप शव (मुरदे) भस्महोते हैं अतएव इसकोभी महाश्मशान कहते हैं । अरु इसहीमें चैतन्य परमशिव आत्मा निवास करता है एतदर्थ उसको श्मशानवासी कहते हैं ॥ हे सौम्य ! उक्त प्रकारकी जो शरीररूपा काशी है तिस को सम्यक् विचारके जोउक्त गङ्गा अरु मणिकर्णिकामें स्नानकर उक्तब्रह्मनाल के मार्ग से उक्त विश्वनाथ का साक्षात्कार दर्शन करताहुआ । "तस्यतावदेवचिरंयावन्नविमोक्षेऽथसम्पत्स्यइति" । इत्यादि प्रमाणसे यावत् प्रारब्ध क्षय होय तावत् निवास करता है सो साक्षात् कैवल्य मोक्षपाय । "ब्रह्मविद्ब्रह्मैवभवति" । शिव साथ शिवही होताहै, उसको मोक्षहोनेके अर्थ पुनः काशीआदि क्षेत्रकी अपेक्षा रहतीनहीं, अरु काशी क्षेत्रमें जो मोक्षहोतीहै सो मुक्तिकोपनिषद्के प्रमाण से सालोक्यादि चारप्रकारकीहोती है, अरु इसशरीररूपाकाशीमें जोसम्यक् आत्मज्ञानद्वारा मोक्षहोती है सो पञ्चम सर्वोत्तम कैवल्य मोक्ष होती है, ताते काशीक्षेत्रसे यह शरीररूपाकाशी अधिक है, अरु काशीक्षेत्रमें जो मोक्षहोती है सोमरणके पश्चात् होती है । अरु इस शरीररूपाकाशी में जोमोक्षहोतीहै सो । "ज्ञानंलब्ध्वापराशांतिमचिरेणाधिगच्छति" । इत्यादि प्रमाणसे आत्मज्ञान होने मात्र से जीवतेही होती है, पुनःउस आत्मज्ञानी विद्वान्काशरीर चाहे काश्यादि उत्तमक्षेत्र में चाहे चांडालादिकोंके गृहादि अधम क्षेत्रमें छूट जाय उसको हानि लाभ उत्तम अनुत्तम कुछभी नहीं । " तनुन्त्यजातिवाकाश्यांश्वपचस्यगृहेऽथवा । ज्ञानसम्प्राप्तिसमये मुक्तोसौ विगताशयः" । क्योंकि वो सम्यक् अपरोक्ष ज्ञान प्राप्ति के सम कालही मोक्षको प्राप्तहोता है ॥ हे सौम्य ! उक्त प्रकार की जो शरीर रूपा काशी तिसको क्यों न सेवन करिये किन्तु अवश्य सेवन करना योग्यही है [अर्थात् यह मनुष्य शरीरही उत्तम तिसमें भी ब्राह्मणादि उत्तम वर्णकी परमोत्तम काशी को पाय इसमें सम्यक् आत्मज्ञान द्वारा जीवत्वभाव के अभाव रूप मरण को पाय मोक्ष होना उचितही है, क्योंकि पुनःइसकी प्राप्तिहोनी दुःसाध्यही

कर प्रसन्नकर्त्ता अरु उनको क्लेश देनेवाले असुरों के नाशकर्त्ता हो, अरु हे प्रभो ! आप अपने उभयरूप से शिव ब्रह्मादि करके सेवनीय उपासनीय हो, अरु आप अपने स्वरूपकरके केवलशुद्ध ज्ञानरूप विग्रहवान् हो अरु अज्ञानादि सर्व दोषों के नाश करने वाले हो, अरु हे नाथ ! आप लक्ष्मी के पति हो, अरु परमानन्द सुखकी आकर हो, अरु अपने उपासकों की परमगति (आश्रय) हो तिन आप को नमस्कार है अरु आप अपनी शक्ति उक्त सीता लक्ष्मण के इन्द्रादि करके सेवन करने योग्य हो, हे भगवन् ! जो पुरुष निर्दोष हुये आप के चरण कमल का सेवन करते हैं सो जन्म मरणरूपी ऊंची नीची तरंगों करके संकुल जे अतिभयंकर संसाररूप समुद्र तिस में गिरते नहीं [अर्थात् जे आप के शुद्ध उपासक हैं सो पुनरावृत्ति से रहित होते हैं] अरु हे नाथ ! जो पुरुष समस्त वासना को त्याग के निरन्तर आपको सेवते हैं, अरु समस्त इन्द्रियां विषयों से उपराम कियाहै जिन्हों ने सो आपकी गति को प्राप्त होते हैं, अरु हे प्रभो ! आप अपने स्वरूप करके अद्वैत हो अद्भुत हो निरीह हो ईश्वर हो व्यापक हो, अरु जगत् के उपदेष्टा गुरु हो शाश्वत हो केवल तुरीयमात्र हो तिन आपको नमस्कार है, अरु कुयोगी (बहिर्मुख विषयी) पुरुष को आपकी प्राप्ति दुर्लभ है, अरु आप अपने भक्तों के कल्पतरु हो अरु सर्व करके सेव्य हो, अरु हे सीतापति ! हे अनुपम भूपते ! आपको मैं नमस्कार करता हौं, अरु मैं आपकी शरण हौं आप मेरी रक्षा करो अरु अपने चरणकमल की भक्ति मुझको प्रदान करो । अरु हे भगवन् ! जो पुरुष आपके इस स्तोत्र को आदरपूर्वक पढ़ते अरु विचारते हैं सो आपके पदको प्राप्त होते हैं इस में संशय कुछ नहीं ॥ इस प्रकार उक्त अत्रिमुनि ने उक्त रामजी की उक्त प्रकार स्तुतिकर, पुनः प्रणामकर हाथजोर विनयकिया कि हे नाथ ! आपके चरण कमल विषयक प्रीति को मेरी मति कदापि त्याग न करे यही मेरी आपसे विनय अरु प्रार्थना है ॥

२ हे सौम्य ! उक्त प्रकार जब अत्रिमुनि सम्यक् विशेष ज्ञान

रूप रामजी की स्तुति विनय कर रहैं, तदनन्तर उक्त ऋषि की शक्ति (स्त्री) अनसूया [अर्थात् असूया (गुणमें दोषदृष्टि) से रहित सो अनसूया] तिसके चरणको ग्रहणकर परमपवित्र विवेकशाली ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञावृत्तिरूपा सीता पुनः मिलतीहुई तब अनसूया ने अतिप्रसन्न होय आशीर्वाद दे उक्त सीताको अपने निकट बैठाय परमदिव्य जे आप्तकामतादि स्थितप्रज्ञाके लक्षणरूप भूषण सो पहिरावती हुई, अरु तदनन्तर उक्त ऋषिपत्नी सीता का मिसकरके अपनी मधुर वाणी से पतिव्रताके धर्म उपदेश करती हुई कि हे सीते ! हे मुमुक्षु राजकुमारि ! अब मेरे उपदेश को सावधान होय श्रवणकरो हे सीते ! इस संसारमें स्त्री के अर्थ माता पिता भ्राता हितकारी हुये मित (नेमित) धनके दाता हैं [अर्थात् बुद्धिः कर्मानुसारिणी। इत्यादि प्रमाण से बुद्धि के उत्पादक कर्म सो उसको अपना मितफलरूप धनके दाता हैं जो इस कर्म का यह फल प्राप्त होगा] अरु हे वैदेहि ! स्त्रीको जो पति है सो अमित (अनेमित) धनका देनेवाला है [अर्थात् बुद्धि का पति जो तदुपहित चैतन्य है सो अपनी पतिव्रता बुद्धिको । "सर्व्वेषु लोकेषु कामचारी भवति" । इत्यादि प्रमाणसे अमित फलरूप धनका दाता है] ताते हे सीते ! जो स्त्री अपने अमित फलदाता पतिका निश्छल सेवन नहीं करती तिसको तू संसार में अधम स्त्री जानना, अरु हे सीते ! धीरज धर्म्म मित्र अरु नारि, इन चारों की परीक्षा विपत्ति काल में होती है [अर्थात् मनुष्य के विपत्ति के समय जो धीरज बनारहे सो धीरज, अरु धर्म बनारहे सो धर्म्म, अरु उससमय सहायता करै सो मित्र, अरु साथ सेवा में रहै सो स्त्री, सो तूने इन रामजी के विपत्ति के समय इनका संग किया ताते तू धन्य है । अथवा जब जिस पुरुषको अपने कर्मवशात् विपत्ति आय प्राप्त होय तब उसको अपने प्राणान्त पर्यन्त धर्म अरु धैर्य्य का त्यागन करना अरु उसके मित्र अरु स्त्री को अपने प्राणान्तपर्य्यन्त भी उस पुरुषका त्याग नहीं करना, अरु जो कदापि उस विपत्तिवाले पुरुषको उसके मित्र वा स्त्री

त्याग करते हैं तब उनको उसके वध करनेका पाप होता है] हे सीते ! जो कदापि स्त्री के भाग्यवशात् उसका पति वृद्ध होय वा निरन्तररोगी होय वा जड़बुद्धि (अविवेकी) होय वा धनकरके हीन दरिद्री होय वा अंधहोय वा बधिरहोय वा अकारण क्रोधी (मारपीट करनेवाला) होय वा अतिदीन (हतपुरुषार्थ) होय [अर्थात् इन एक एक दोष करके वा सर्व दोष करके भी सम्पन्न होय] तो ऐसे भी पति का अपमान करने से स्त्री यमपुर में नानाप्रकार की यातना को भोगै है, अरु हे सीते ! स्त्री के अर्थ ईश्वर ने बड़ा अनुग्रह करके एकही धर्म्म एकही व्रत अरु एकही नेम निर्मित किया है जो काया वाचा मनसा करके अपने पतिकी सेवामें रतहोना, अरु हे सीते! वेद पुराणादि शास्त्रोंमें पतिव्रता स्त्री उत्तम, मध्यम, कनिष्ठ, निकृष्ट चारप्रकारकी वर्णन की हैं, तहां उत्तमके चित्तमें तो सर्वदा यह निश्चयरहताहै कि मेरेपतिके सिवाय जगत्में अन्य पुरुषही नहीं, अरु जो मध्यमहैं सो अपनेपतिसे इतर पुरुषोंको अपने पिता भ्राता पुत्रवत् देखती हैं, अरु जो अपना धर्म अरु अपनी कुलाम्नायकोविचार परपुरुषसे रतिमान् होती नहीं सो निकृष्टहैं, अरु जिसके चित्त में परपुरुषसे संगकरने की इच्छा तो है परन्तु अपने पुत्रोंके भयसे अरु विना अवसरके पाय परपुरुषके संगसे रहजातीहै सो अधमहै [अर्थात् हे सीते ! जो प्रज्ञा। "सर्व्वंखल्विदंब्रह्म तज्जलानीति शान्तमुपासीत" । इत्यादि प्रमाणसे सर्वत्र एक अपने आप अन्तरात्मासाक्षी चैतन्यपतिको अनुभव करती है, अरु । "नान्यत्पश्यति नान्यच्छृणोति नान्यद्विजानाति" । इत्यादि प्रमाणसे अपने उक्त पतिसे व्यतिरिक्त न किसीको देखती है न किसीको सुनतीहै न किसी को जानती है ऐसी जो एक अद्वैत ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा है सो सर्वोत्तमहै। अरु जो प्रज्ञा। "ॐकारएवेदंसर्व्वम्" । इत्यादि प्रमाणसे सर्वको ॐकार रूप जानती सती तदभिमानी ब्रह्मा विष्णु रुद्र इन तीन देवताओंमें से किसी एककी अनन्यभावसे उपासना करतीहै सो मध्यम प्रज्ञाहै। अरु जो परमात्मा के विशेषरूप राम कृष्णादि अवतारी

पुरुषोंकी भेदभावसे उपासना करनेवाली प्रज्ञाहै सो निकृष्ट प्रज्ञा है । अरु जो प्रज्ञा कामना के वश हुई क्षण में किसी देवता की अरु क्षणमें किसी देवताकी उपासना करती है सो अधम प्रज्ञाहै] अरु हे सीते ! जो स्त्री पतिवञ्चक [अर्थात् अपने पतिके धनादिकों को हरणकरती] है अरु परपुरुष के साथ रतिमान् होती है सो सौकल्प भर तक रौरव नाम नरक में गिरती है । अरु हे सीते ! क्षणिक जे विषयसुख तिसके वश हुई जे अपने जन्म जन्मान्तर के भविष्यत् दुःखको शास्त्रोंद्वारा नहीं समझती तिनके समान और खोटी स्त्री कौन होगी किन्तु कोई भी नहीं । अरु हे सीते ! जो स्त्री सर्व छलको त्यागके काया वाचा मनसाकरके श्रद्धापूर्वक अपने पतिकी सेवा करती है सो विनाही अन्य तपआदिक साधन श्रमके सहित अपने पतिके सर्व्वोत्तम गतिको प्राप्तहोती है, अरु हे सीते ! जो स्त्री अपने पतिसे प्रतिकूल हुई यथेष्टाचरण करती है सो जहां जन्मलेती है तहां तरुणअवस्थाको पाय विधवा होती है, हे सीते ! यह जो स्त्रीशरीर है सो संस्कारहीन होने से अपने स्वभाव करकेही अपवित्रहै परन्तु सो अपने पतिव्रत धर्म धारणकरने से सर्व्वोत्तम गतिको प्राप्तहोती है देखो जलंधर की स्त्री वृन्दाके पतिव्रत धर्मने उसको विष्णुभगवान्को प्रिय किया, अरु हे सीते ! यह जो तुझको मैंने पतिव्रत धर्म्म उपदेश किया है सो संसारके हितार्थ किया है नतु तुझको अरु तुझे तो यह अपने पति सम्यक् ज्ञानस्वरूप रामजी । "प्राणात्प्रेयो" । प्राण से भी अधिक प्रिय हैं अतएव जगत् की साधारण स्त्री भी तेरा नाम स्मरणकर पतिव्रत धर्म को आचरती हैं तब तेरे पतिव्रत की क्या वार्त्ता है ॥

३ हे सौम्य ! उक्तप्रकार जब अत्रिमुनिकी स्त्री अनसूयाने ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञावृत्तिरूपा सीताको जगत् हितार्थ पतिव्रत धर्म का उपदेश किया तब तिसको श्रवणकर उक्त सीता ने अतिप्रसन्न होय आदरपूर्वक उसके चरण में प्रणाम किया, तदनन्तर उक्त अत्रिमुनि से सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी कहतेहुये कि हे भ

गवन् ! अब जो मुझको आज्ञा होय तो मैं आगे वनकी यात्रा करों अरु आपने मुझको अपना सेवक जान स्नेह का त्याग न करना अरु मुझपर निरन्तर कृपादृष्टि करतेरहना, इसप्रकार जब परमब्रह्मण्य देव भगवान् उक्त रामजीने उक्त अत्रिमुनि से विनयपूर्व्वक आज्ञामांगी तब धर्मधुरंधर धर्मपालक भगवान् उक्त रामजी की वाणी को श्रवणकर उक्त मुनि प्रसन्नहोय सहित प्रेमके बोलतेहुये कि हे राम ! जिसकी कृपा को ब्रह्मा विष्णु शिव सनत्कुमारादि जे परमार्थवादी हैं सो भी इच्छते हैं सो सम्यक् ज्ञानस्वरूप आप कि जिसको निष्काम पुरुष प्रिय हैं वा जो आप निष्काम पुरुषों को प्रियहो [अर्थात् जिस आप सम्यक् ज्ञानस्वरूपको । "अथाकामयमानोयोऽकामो निष्काम आप्तकाम आप्तकामः नतस्यप्राणा उत्कामन्ति ब्रह्मैव सनब्रह्माप्येति" । इत्यादि प्रमाण से, निष्काम हुये आत्मरूपसे इच्छते हैं सो परिणाममें देहसे उत्क्रमण न पाय के ब्रह्मरूप आप बिषे अभेद होते हैं सो आप धर्म्म रक्षणार्थ अपने बिषे विशेषरूप धारके इसप्रकारके धर्मबोधक श्रवणामृत वाक्य कहते हो अरु मैं प्रत्यक्ष श्रवण करता हों ताते मैं भी धन्य हों, अरु हे भगवन् ! आपके इन वचनों को श्रवणकर मैंने आपकी चतुराईको जाना है जो अन्य सर्व कार्य्यात्मक देवताको त्याग के कारणरूप आपके ही भजन स्मरण विचार ध्यान अनुभव से सर्व का कल्याण है, अरु हे भगवन् ! आपको एक अद्वैत होनेसे जब आपके समान अन्य कोई नहीं तब विशेष कहां पाइये, अतएव जैसे आपके समान अन्य नहीं तब आपके शीलके समान अन्यका शील भी नहीं ताते ऐसे अद्वैत आपका शील ऐसा क्यों न होय होनाही चहिये अरु हे स्वामी ! आप जो मुझसे आगे वनमें जाने की आज्ञा मांगते हो सो अस्तु परन्तु आप सर्व्वान्तर्यामी सर्वज्ञ हो अतएव आपही कहो जो मेरे चित्तमें वन जाने देने की इच्छा है या नहीं, इसप्रकार कहके पुनः अत्रिमुनि उक्त रामजीका स्वरूप अवलोकन करते प्रेमवश होय अपने नेत्र मेंसे प्रेमाश्रु डालने लगे अरु शरीरमें रोमांच होआये अरु वाणी गद्गद होगई अरु

अपने नेत्ररूप भ्रमर को उक्त रामजीके मुख कमलमें स्थित करते हुये अरु कहतेहुये कि जो मन बुद्धि इन्द्रियादिकों का विषय नहीं तिन ज्ञानस्वरूप निर्विशेष आपको प्रत्यक्ष घटवत् अपने सम्मुख श्यामसुन्दर रूपसे अवलोकन करता हौं ताते मैंने जप तप क्या किये सो नहीं किन्तु ठीकही किये क्योंकि जब यह मनुष्य निष्काम हुआ जप तप योग धर्म्मादि करके अपने अन्तःकरणको स्वच्छ अरु स्वस्थ करताहै तब तिस शुद्धहुये अन्तःकरणबिषे आपकी अनन्यभक्ति उपजती है, तब हे नाथ! वो भक्तिमान् पुरुष व्यवधानसे रहित आपका श्रवण मनन ध्यानादि करते हैं। हे सौम्य! सन्त कहते हैं कि उक्त रामजीका धर्मरक्षणादिरूप सुयशहै सो श्रवणकर्त्ता पुरुषके कलिमल को शमनकर्त्ता है, अरु मनन करने से अतिचंचल जे मन तिसको दमनकर्त्ताहै अरु सर्वसुखकी प्राप्ति का मूल है, अतएव जो पुरुष शुद्ध अनन्य भक्तिमान् हुआ उक्त रामजीके चरित्रों को श्रवण मनन वर्णन करता है तिसपर रामजी अनुकूल होते हैं, अरु यह जो अतिकठिन कलिकालहै सो सर्व दोष की आकर वा कोशहै ताते इस काल में धर्म कर्म ज्ञान जप तपादि कुछ भी यथार्थ बनता नहीं, ताते संसार दुःखकी निवृत्तिके अर्थ उक्त साधनोंका भरोसा न करके जो उक्त रामजीका स्मरण भजनकरते हैं। "सबुद्धिमान् मनुष्येषु"। इत्यादि प्रमाणसे सोई सर्व मनुष्यों में बुद्धिमान् है ॥

४ हे सौम्य! उक्तप्रकार सम्यक् ज्ञानस्वरूप रामजीने एषणात्रयादिसे रहित जे अत्रिमुनि तिनके उक्तआश्रमपर जाय उनको दर्शनदे उनसे उक्तप्रकारका पूजन आतिथ्यपाय उनकरके कीहुई स्तुतिद्वारा लोकहितार्थ अपने स्वरूप महिमाको प्रकट कराया अरु उक्त ऋषिपत्नी अनसूयाके अन्तर स्फुरण होय अपनी प्रिया ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञावृत्तिरूपा सीताको पतिव्रत धर्म्म उपदेशकराया क्योंकि जो उक्त सीता पतिव्रत धर्म्म अरु तिसके प्रभावसे सज्ञात, होगी तो आगे अपने हरणकर्त्ता अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञानरूप रावणके वैभव विभूतिको देख उसके वश न होगी। अरु उक्त रामजीने अत्रिमुनिके आश्रमपर जाय उनसे मिलने अरु सत्कार पावनेरूप अपनी लीलाके प्रसंगसे सर्वको यह सूचित किया कि परम कृपालु ईश्वर अपने शुद्ध भक्तोंके अभीष्टानुकूल अपने बिषे विशेषरूप धारणकरके उनको दर्शनदे उनके किये निष्काम विहित धर्म्मकर्म्मको सुफलकरताहै। अरु जो कदापि कोई ऐसा कहे कि जो निराकार निर्विकार महासूक्ष्म निर्विशेष परमात्माहै सो अपने बिषे विशेषरूप धारता नहीं, सो उनका कहना बने नहीं क्योंकि उनके वाक्य मानने से जो कोई भक्तजन उस निर्विशेष अविषय परमात्माके विशेषरूप दर्शनकी इच्छा धारके। "श्रद्धाभक्तिध्यानयोगादवैहि"। इत्यादि प्रमाणसे अतिश्रद्धा भक्तिकरके समन्वित हुये जप तप धर्म्म व्रत योग ध्यान विचारादि करते हैं सो सर्व निष्फल अरु निष्प्रयोजन होते हैं, अरु श्रुति शास्त्रोंबिषे उक्त जप तपादि ईश्वर प्राप्तिके साधन अरु उन साधनकर्त्ता पुरुषोंको ईश्वर ने अपनेबिषे विशेषरूप धारके दर्शन देना लिखा है, अतएव अपने भक्तोंके मनोरथ सिद्ध्यर्थ ईश्वरका विशेष रूपसे प्रकट होय दर्शन देना अरु धर्म्मकी रक्षाकरनी यह सर्वथा प्रमाणही है। अरु जो कदापि ईश्वरमें राक्षसी स्वभाव निर्दयता अरु जीव स्वभाव असमर्थता यह दो दोष होयँ तो उसका विशेष रूपसे प्रकटहोय अपने भक्तोंको दर्शनदेना असंभवहै क्योंकि जिसके चित्तमें अपने सेवकोंपर दया न होगी सो अपने सेवकोंका अपने विषयक श्रम अरु प्रेमदेख सुनके भी उसको दर्शनदे उसके अभीष्टको सिद्ध न करेगा, वा जिसके चित्तमें दया तो होगी परन्तु अपने बिषे विशेष रूप धार के दर्शन देने में असमर्थ होगा सो अपने भक्तों को विशेष रूपसे दर्शनदे उनके अभीष्टको सिद्ध न करेगा, ताते जिसके मत से ईश्वर अपने बिषे विशेषरूप धारके अपने भक्तोंको दर्शन नहीं देता उनके मतसे ईश्वरमें निर्दयता अरु असमर्थता यह दो दोष अनिवार्य सिद्ध होते हैं, अरु जो उक्त दोषों करके युक्तहुआ तिसको सर्वशक्तिमान् ईश्वर कहना अरु मानना अप्रमाण अरु मूर्खताही है, ताते उन अविचारित वाक्य कहनेवालों के वाक्य मानने योग्य

नहीं। हे सौम्य! वो परमात्माईश्वर निर्दयभीनहीं अरु असमर्थभी नहीं वो तो परमदयालु भक्तवत्सल अशरण का शरण कृपासागर जनहितकारी अपने उपासकोंके अभीष्ट सिद्धकर्त्ता सर्वका सुहृद्है अरु करने मेटने अन्यथा करने में अतिसमर्थ सदा स्वतन्त्र अबाध्य सर्वशक्तिमान् है, ताते हे सौम्य!। "परित्राणाय साधूनांविनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थायसंभवामि युगेयुगे"। इत्यादि प्रमाण शिरोमणि भगवद्वाक्य प्रमाण से ईश्वरका अपने उपासक भक्तों के अभीष्ट सिद्ध्यर्थ विशेषरूपसे प्रकट होना अरु भक्तों को दर्शनदे उनका अभीष्ट सिद्ध करना अरु धर्म सन्त गो ब्राह्मणों की रक्षाकरनी, अरु धर्म्म सन्त गो ब्राह्मणादिकों के विघातक आसुरी सम्पदावाले असुरों का विनाश करना, इत्यादि सर्व सर्वथा प्रमाणही है, एतदर्थ इस विषय में जो कुतर्क करते हैं सो अविचारित ईश्वरके ज्ञान सम्बन्धी अज्ञानवश करते हैं, अतएव उनका वाक्य मानने योग्य नहीं॥ हे सौम्य! यह तो उक्तरामजीने मुनियों के आश्रमपर जाना उनको दर्शन देना उनसे मिलना इन अपने चरित्रोंद्वारा उक्त लक्ष्य कराया। अब ज्ञान कर्म के समुच्चयकर्त्ता क्षेत्रज्ञरूप राजादशरथ जो परिणाम में सकाम क्रियाके वशहुआ अपने पुत्रमें आसक्त होने से देह त्यागान्तर पंचाग्नि विद्या के क्रम से अपने पुत्रमें प्रवेश पाया है तिसका क्रम श्रवणकरो, तहां उक्त रामजी का जो चित्रकूट में निवास है तिस द्वारा उक्त राजादशरथका पञ्चम योषिता (स्त्रीरूपा) अग्नि में वा अपने चित्रविचित्र संचित कर्म समुदाय में निवाससमझना, अरु आगे रामजी के वनमें प्रवेशद्वारा उक्त दशरथका संसाररूप अरण्यमें-पुनर्जन्म समझना अरु काककी लीलाद्वारा उक्त राजा दशरथकी पूर्वकी परोक्ष आत्मानुभवी प्रज्ञाको पूर्वकर्म्माध्यास के संस्कारकी प्राबल्यता से विषयानुरागरूप विक्षेपकी प्राप्ति जो संसारमें दुःखका कारण है; समझना। अरु आगे अत्रिमुनिके समागमरूप लीलासे उक्त राजादशरथका यज्ञोपवीतादि संस्कार का होना समझना। इसप्रकार रामजीने जो जो चरित्र किये हैं तिन

तिन द्वारा सम्यक् ज्ञानस्वरूप रामजी का उपदेशात्मक लक्ष्य, अरु ज्ञान कर्मके समुच्चयकर्त्ताको परिणाममें सकाम क्रियाके वश होनेसे संसाररूप अरण्यमें पुनर्जन्म पाय अपने कर्म्मानुसार सुख दुःख भोगके पुनः ज्ञानविचार के पूर्वाभ्यासवश आचार्यके उपदेशसे वेदान्त शास्त्रकी सहायता पाय मूलाज्ञानके अभावसे पूर्व की ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञाकी प्राप्ति इत्यादि ज्ञानकर्म्म के समुच्चय कर्त्ताकी गतिका लक्ष्य सूक्ष्म बुद्धिसे विचारके समझना तबहीं ईश्वरावतार रामजीके चरित्रों का गुह्य लक्ष्य अनुभवमें आवेगा अरु संशयकी निवृत्ति होगी॥

इति रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डे रामात्रिसमागम वर्णनन्नामद्वितीयंप्रकरणं समाप्तम्॥

अथ रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डे रामशरभङ्ग समागमवर्णनन्नाम तृतीयंप्रकरणंप्रारभ्यते॥

१॥ श्रीगुरुरुवाच॥ हे सौम्य! उक्त प्रकार भगवान् रामजी अत्रिमुनिके आश्रमपरजाय उनको दर्शनदे उनसे आतिथ्यसत्कार पाय उनकी आज्ञाले प्रणामकर समस्त सचराचरके ईश भगवान् रामजी आगे वनको यात्रा करतेहुये, तहां संसाररूप अरण्यके प्रवृत्ति लक्षणरूप मार्गमें सुन्दर जटा वल्कल मृग चर्मादि कर्मी के वेष को धारणकर सहित ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञारूपा सीता के उक्त राम लक्ष्मण दोनों भ्राता चलतेहुये, तहां सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी अपनेबिषे कर्मीका उपवेष धारणकर आगे चलतेहुये, अरु तिनहीं के अनुसार तिनके पीछे वैराग्यरूप लक्ष्मण चलतेहुये, क्योंकि विवेकज्ञानके पीछे वैराग्यका होना है ताते, अरु उक्त राम लक्ष्मणके मध्य ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञावृत्तिरूपा सीता चलती हुई [अर्थात् ज्ञानवान् पुरुष जब कर्मीका वेष धारणकर संसाररूप अरण्यके सम्मुख प्रवृत्तिमार्गमें चलताहै तब उसकी ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा उसकेपीछे होतीहै, अरु उसका वैराग्य उससे भी पीछे होताहै, प्रवृत्तिमार्गमें चलनेसे] सो उक्त क्रम से मार्ग में चलते

जे उक्त राम लक्ष्मण तिनके मध्य उक्त सीता सो कैसी शोभाको प्राप्तहुई मानो ब्रह्मजीवके मध्य माया शोभितहोय [अर्थात् "तस्य भासासर्वमिदंविभाति"। इत्यादि प्रमाणसे, जैसे स्वयंज्योति परमात्मा के प्रकाशके पीछे सूर्य्यादि सर्व प्रकाशतेहैं, तैसेही ब्रह्मरूप चैतन्य सत्ताके पीछे माया अपने कार्य्यकरने में सत्तावती होती है, अरु माया परमात्माके आश्रय होने से उसको आवरण करसक्ती नहीं अरु नामरूप क्रियात्मक वा यह मैं यह मेरा यह मैं नहीं यह मेरा नहीं यह पुण्य यह पाप यह धर्म यह अधर्म यह सुख यह दुःख यह स्वर्ग यह नरक यह पवित्र यह अपवित्र यह श्रेष्ठ यह अश्रेष्ठ इत्यादि जे जीवोंकी कल्पना सो ईश्वरको आवरण न करके जीव के आगे आवरणकर उसको ईश्वरके दर्शनमें ओटकरती है, यह उक्त राम लक्ष्मणके मध्यमें सीताके होनेका लक्ष्य है] अरु उक्त वनके जे सर सरिता गह्वरवन पर्वत घाटे आदि विषमस्थान, जो साधारण जीवोंको अवरोध करनेवालेहैं सो अपने अन्तरात्मा उक्त रामजीको अवरोधन करके मार्ग देते हुये [अर्थात् मूलाज्ञानसे तृण पर्यंत कोई भी अपने प्रकाशक साक्षी अन्तरात्माको अवरोध (आवरण) करनेको समर्थ होते नहीं] अरु संसाररूप अरण्यके कर्म प्रवृत्ति लक्षणरूप मार्ग में मुनिवेषको धारणकिये जहां जहां उक्त रामजी जाते हैं तहां तहां कर्मके फलरूप मेघ उनपर छाया करते हैं [अर्थात् इस संसारमें कर्मीको सुख देनेवाले उसके पुण्यकर्मके फलही हैं परन्तु वो अनित्य होने से मेघवत् कभी शीतल छायाकरते हैं कभी निवृत्त होजाते हैं, यह रामजी को अरण्य में चलते मेघकी छायाहोने का लक्ष्यहै] इसप्रकार संसाररूप अरण्य में कर्मीका वेष धारणकर कर्मप्रवृत्ति मार्ग में चलते जे उक्त रामजी तिनको प्रथम व्याधिरूप विराध असुर जो आप बलवान् होता है तब कर्मकर्त्ता की प्रज्ञा अरु धैर्यको चल विचलकर कर्म करने में विक्षेपकर्त्ता है, अरु कर्म करने में शरीर का स्वस्थ होना ही मुख्यकारक सामग्री है, अरु तिसहीको व्याधि अपनेवश कर कर्म नहीं करनेदेती ताते कर्मीको कर्म में विक्षेपकारी व्याधि

(रोग) रूप विराध असुरहैं, सो आप प्राप्तहुआ तब उक्त रामजी अपनी योगक्रिया शक्तिसे उस उक्त असुरका वधकरतेहुये, तब वो योग विचार बलसे मृतक हुआ तब अपने कारण पूर्व अन्नरूपको पावता हुआ, क्योंकि विचारकरके देखिये तो व्याधिका कारण अन्नही है सोई उसको अपने पूर्वरूपकी प्राप्ति है, अरु उसको दुःखित देख उक्त रामजी ने अपने धामको प्राप्त किया [अर्थात् व्याधिका कारण अन्न अन्नका कारण जल जलका कारण अग्नि अग्निका कारण वायु वायुका कारण आकाश आकाशका कारण आत्मा (ब्रह्म) इस प्रकार विलोम क्रमसे जो जिसका कार्य है तिसकी अपने कारणमें लयता चिंतन करनेसे व्याधिरूप विराध का परिणाम लयसर्वाधिष्ठान आत्मा में होता है सोई उसको रामधाम की प्राप्ति है] तदनन्तर उक्त रामजी सहित अपने सहचारियोंके वहां आवतेहुये कि जहां मुनि शरभंगका स्थानहै तहां शर कहिये चिंता [अर्थात् चिंताके समान अन्तरदाह करनेवाली चिन्ता] सो भंग कहिये अभाव कियाहै जिसने सो कहिये शरभंग [अर्थात् ज्ञानयोग अरु भक्तियोग करके वारंवार जन्म मरण निमित्तक चिन्ता अभाव कियाहै जिसने ऐसा शरभंगनाम मुनि] सो उक्त रामजीको अपने आश्रम में प्रकट देख अपने योगासन से उठ उक्त रामजीके सम्मुख होताहुआ, तब ब्रह्मण्य देव भगवान् रामजी अपने सम्मुख शरभंग मुनिको देख आप प्रथम प्रणाम करते हुये तदनन्तर उक्त मुनि ने उक्त रामजी को प्रणामकर अपनेआश्रम पर लेआय उनका पूजन सत्कार आतिथ्य कर हाथजोड़ सम्मुख बैठ रामजी के मुखरूप कमलके भ्रमर अपने नेत्रोंको कर उक्त रामजी के मुखकमल गत परमानन्दरूप अमृत मकरन्द; कि जिसके पान करने से पुरुष जन्म मरण से रहित ब्रह्मरूप अमरताको प्राप्तहोताहै तिसको पान करताहुआ ताते उक्त शरभंग मुनिका जन्म सुफल है॥

२ हे सौम्य! उक्त प्रकार जब सम्यक् ज्ञानरूप रामजी उक्त प्रकारके शरभंग मुनिके आश्रमपर जाय प्राप्तहुये अरु उक्त मुनि

उक्त रामजीका आगमन देख अतिप्रसन्नहोय उक्त रामजी सों मिल उनका आतिथ्य पूजन सत्कारकर उनके सम्मुख बैठ उन के मुखकमलगत परमानन्दरूप अमृत मकरन्दका अपने नेत्रों द्वारा पान करतसन्ते हाथजोड़ अतिनम्रतासे कहताहुआ कि हे राम ! आप शिवजी महाराजके शुद्ध सत्त्वगुणात्मक अन्तःकरण रूप मानसरोवर गत भक्ति प्रेम अनुरागरूप मुक्तामणिके ग्रहण-कर्त्ता हंसहौ वा "हृदाकाशेचिदाभाति हृंसशुचिः" इत्यादि प्रमाणसे अन्तःकरणरूप आकाशमें उदयअस्तसे रहित निरन्तर प्रकाशनेवाले सूर्य्यहौ, हे रघुकुलके वीर ! हे कृपालो ! मैं एक समय योगकी रीतिसे शरीर त्यागके [अर्थात् पद्मासनसे बैठ अपनी एँड़ीसे गुदद्वारको रोंक अपान वायुको व्यानमें, व्यानको समान में, समानको प्राणमें, प्राणको उदानमें, जो शरीरसे लिंग (जीव) को बाहर निकलनेका कारण है, लयकर उस उदानको हृदय में रोंक हृदय कमल की नाल द्वारा नाभिस्थान कुंडलिनी नाड़ी में ल्याय वहांसे जो मज्जातन्तुद्वारा सुषुम्णानाम्नी महासूक्ष्म नाड़ी ब्रह्मरंध्रद्वारा बाह्यको निकलीहुई है तिसमें प्रवेशकर ब्रह्मरंध्र के द्वारा बाहर निकल इस देहको त्याग] "शतञ्चैकाच हृदयस्य नाड्यस्तासाम्मुद्धानमभिनिःसृतैका । तयोर्द्ध्वमापन्नमृतत्वमेति विष्वङ्ङन्या उत्क्रमणे भवन्ति" । ब्रह्मलोक जानेकी इच्छा करतारहा, तिस अवसरमें आपके चरित्रके जाननेवाले शास्त्ररूप ज्येष्ठ श्रेष्ठोंसे श्रवणकिया कि "परित्राणाय साधूनां विनाशायच दुष्कृताम् । धर्म्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगेयुगे" । ईश्वरकी यह प्रतिज्ञाहै कि मैं साधुकी रक्षा अरु धर्मका स्थापन अरु धर्मविघातकोंका नाश करनेके अर्थ युगयुगप्रति अवतार शरीर से प्रकट होता हौं, सो अब इस त्रेतायुग में परमात्मा अपने बिषे रामरूप धारणकर सहित अपनी प्रिया अरु भ्राताके अपने भक्त मुनियों को दर्शन देनेके अर्थ अरु दुष्टोंको दण्डदेने के अर्थ वनमें पगधारैंगे, हे नाथ ! जबसे यह श्रवणकिया तबसे आपके शुभागमनको चितवता वारंवार मार्ग की ओर देखता आपका स्मरण भजन

ध्यान करतारहा, सो आज आपने कृपाकर अपने दर्शन दे मेरे हृदयकी तप्तको शान्तकियाहै, अरु हे स्वामिन् ! मैं जप तप ध्यान धारणा श्रवण मनन इत्यादि सर्व साधनोंसे रहितहौं एतदर्थ यह जोआपने मुझको अपना दर्शनदियाहै सो अपने दीनदयालुतारूप स्वभावके वश दियाहै । ताते आपने मुझपर असाधारण कृपाकियाहै, हे जनके मनको हरण करनेवाले ! [अर्थात् जो आपके स्मरण भजन ध्यानादि करनेवाले जनहैं तिनके मनको आप अपनी ओर आकर्षण करनेवाले हौ] अरु यह जो आपने मुझको अपना दर्शनदिया है सो मुझपर आपका निहोरा नहीं क्योंकि यह तो आपने अपनी प्रणतपाल प्रतिज्ञा का पालन किया है, अरु हे दीनहितकारी ! आप तावत् मुझको दर्शन देतेरहो कि यावत् मैं अपने इस शरीरको त्याग आपसे न मिलों [अर्थात् हे सम्यक् ज्ञानस्वरूप रामजी ! आप मुझको तावत् अपने विशेषरूपके दर्शन देतेरहो यावत् मैं अपने इस अनात्मशरीर के अभिमानको त्याग आपके निर्विशेषरूपमें अभेदता से न प्राप्तहोवों] अरु हे नाथ ! मैंने जो आजपर्यन्त योग यज्ञ जप तप व्रत धर्म अथवा शम दम उपरति तितिक्षा समाधान अरु श्रद्धा, यह षट् सम्पत्तिरूप साधनकी होय सो सम्पत्ति कहिये धन मैं आपके अर्पण करता हौं तिसको आप अंगीकार करिये अरु अपनी अमौल्य भक्तिरूप रत्न मुझको प्रदान करिये, इसप्रकार उक्त रामजीसों विनयकर देहादि संघातका संग त्याग काष्ठकी चिता बनाय तिसपर बैठ पुनः उक्त रामजीसे शरभंग मुनि विनय करताहुआ कि हे नीलकमलवत् श्यामसुन्दर भगवान् रामजी ! जैसे आप अपने सहचारियों के सहित मेरे समक्ष विराजमानहौ तैसेही अपनीप्रिया सीता अरु लक्ष्मण भ्राताके सहित इस मेरे हृदय में सगुणरूप से निरन्तर निवासकरो [अर्थात् सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी आप सहित अपने सहचारी ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा वृत्तिरूपा सीता अरु असाधारण वैराग्यरूप लक्ष्मण के निरन्तर मेरे हृदय कमलरूप आश्रम में निवास करो ॥

३ हे सौम्य! उक्तप्रकार सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी से विनयकर शरभङ्गमुनि योगाग्निकरके अपने स्थूल शरीरको भस्म कर पुर्य्यष्टका रूपसे वैकुण्ठलोकको प्राप्त होताहुआ, अरु उक्त मुनि उक्त रामजी से भेद भक्तिरूप वरदानके लेने के कारण उक्त रामजी में सायुज्य मुक्ति न पायके वैकुण्ठमें सालोक्य सामीप्य सारूप्य मुक्ति को प्राप्त होता हुआ अतएव यह सिद्ध हुआ कि भेदी उपासक सायुज्य मुक्तिको पावता नहीं तब तिसको कैवल्य मोक्ष कहां पाइये ताते "ज्ञानादेवतु कैवल्यम्"। इत्यादि श्रुति प्रमाणसे ब्रह्मआत्माके अभेद ज्ञानसेही मोक्ष होताहै।"नान्यः पन्थाविमुक्तये"। कैवल्य मोक्षका अन्यमार्ग कोई नहीं। हे सौम्य! उक्तप्रकार जब शरभङ्गमुनि उक्त रामजी के समक्ष योगाग्नि में अपने शरीर को त्याग वैकुण्ठ को प्राप्तहुआ तिस उत्तम गतिको देख अन्य सर्व ऋषि मुनि अतिहर्षवान् परमसुखी होय सर्व मिल उक्त रामजी की स्तुति करतेहुये कि हे प्रणतहितकारी! हे कृपा की वृष्टिकर्त्तामेघ! आपकी सदा जयहोय २ आप सदा इसप्रकार अपने भक्तोंपर अनुग्रह करते रहो। इसप्रकार उक्त रामजी शरभङ्गमुनिकी गतिकर आप अपने उक्त सहचारियों सहित आगे वनको यात्रा करते हुये, अरु तिनके साथ अरण्यके निवासी मुनिगणभी चलतेहुये, तब उक्त रामजी कैसी शोभाको प्राप्तहुये मानो शरदृतुके निर्मल आकाश में नक्षत्र ग्रहगणों के मध्य पूर्णिमाका चन्द्रमा चलता होय अरु चलते २ जब आगे वनमें बढ़े तब एक स्थानमें अस्थिका समूह देख उक्त रामजी अन्य ऋषियोंसे प्रश्न करतेहुये कि यह अस्थियोंका समूह यहां कैसेहुआहै तब ऋषियों ने उत्तर दिया कि हे भगवन्! आप सर्वज्ञ सर्वदर्शी सर्वान्तर्यामी हौ तब जानबूझके हम अल्पज्ञों से क्यों प्रश्न करतेहौ अरु जो आपने हमसे प्रश्नकिया है तो हमको उत्तर देनाभी उचित है। अतएव हमको जैसा विदित है तैसा आपके आगे निवेदन करते हैं हे नाथ! इस अरण्यमें जे मुनि निवासकर तपआदिक धर्मानुष्ठान करतेरहे तिनको निशिचरगणों ने भक्षण करलियाहै तिनके

अस्थियों का यह समूह पड़ाहै [अर्थात् इस संसाररूप अरण्य में अनेक वासनारूप अस्थिको देख सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी ने शास्त्ररूप मुनियों से प्रश्नकिया कि यह अस्थि किसके हैं तब उन्हों ने उत्तर दिया कि जो मुनि यहां निवास करके।"स्वर्गकामोयजेत, पुत्रकामोयजेत, धनकामोयजेत, पशुकामोयजेत"। इत्यादि श्रुतिप्रमाण से कामनाके वशहुये कोई स्वर्ग की इच्छासे कोई पुत्रकी इच्छा से कोई धनकी इच्छा से, इसप्रकार अनेक कामनाको अपने चित्तमेंधार तिसकी सिद्धिके अर्थ अनेक ब्राह्मण यज्ञ जप तप व्रतादि धर्म्माचरण करते रहे तिनको अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञानरूप रावणके अनुगामी काम क्रोध लोभ मोहादि आसुरी सम्पदा रूप निशिचर अरु कामनादि निशिचरियां भक्षण करगये तिनके यह वासनारूप अस्थि इस अरण्य में पड़े हैं अरु हे नाथ! हमभी उक्त निशिचरों के भयसे अतिदुःखित हैं] इस प्रकार जब उक्त रामजी को मुनियों ने उत्तर दिया तब तिसको श्रवण कर परमदयालु ब्रह्मण्य रामजी सो अपने चित्तमें खेदित होय नेत्रों में जल भरिलाये अरु सर्व मुनियों के मध्य अपनी भुजा उठाय सत्यप्रतिज्ञ भगवान् रामजी प्रतिज्ञा करते हुये कि मैं इस पृथ्वीको राक्षसों से रहित करदूंगा [अर्थात् सर्व्वशास्त्रों के मध्य यही प्रतिज्ञाहै कि सम्यक् विशेषरूप ज्ञानकरकेही अन्तःकरणरूपा पृथ्वीपरके अविद्यारूप रात्रिके विचरनेवाले कामादि आसुरी सम्पदारूप रजनीचरोंका अशेष अभाव होताहै अन्यथा नहीं] अरु तदनन्तर उक्त असुरोंके भयसे दुःखित जे मुनिलोग रामजी के साथ चलते रहैं तिन प्रत्येक के अन्तःकरण रूप आश्रम पर सम्यक् ज्ञानरूप रामजी आप अपने उक्त सहचारियों सहित प्रकट होय सर्व्व को निर्भय करते हुये अरु उक्त राजा दशरथके विषयमें इस शरभङ्ग मुनिके प्रसंगसे यज्ञोपवीत संस्कारोत्तरवेदाध्ययन अधिकारकी प्राप्ति अरु वेदाध्ययनमें प्रवृत्ति समझना॥

इति रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डेरामशरभङ्गसमागमवर्णनन्नामतृतीयंप्रकरणं समाप्तम्॥

अथ रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डेरामसुतीक्ष्ण समागमवर्णनन्नामचतुर्थप्रकरणंप्रारभ्यते ॥

१ ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हे सौम्य ! उक्तप्रकार सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी ने अस्थिसमूहको देख तिसके निमित्तको मुनियों से प्रश्नकिया तब मुनियों ने कहा कि हे भगवन् ! यहां बहुत से ब्राह्मण यज्ञ जप तपआदि धर्माचरण करते रहे तिनको राक्षसों ने भक्षण करलिये हैं तिनके अस्थियोंका यह समूहहै, तब उक्त रामजी अपने चित्तमें खेदमान ब्राह्मणोंपर दयाकर मुनिमण्डली के मध्य अपनी भुजाउठाय पृथ्वीपर के निशिचरों के वध करनेकी प्रतिज्ञाकर आगे वनको चले। तब परम विवेकवान् अगस्त्यमुनिका शिष्य अतिभक्तिमान् सुतीक्ष्णनाम मुनि [अर्थात् सुन्दर ब्रह्मविषयक सूक्ष्मबुद्धिहै जिसकी सो कहिये सुतीक्ष्ण] सो कायावाचा मनसाकरके उक्त रामजीका भजन स्मरण ध्यानादि करनेवाला अरु अन्य सर्व कार्यरूप देवताका भरोसा त्यागके एक उक्त रामजीका भरोसाकरनेवाला तिसने अपने आश्रमपर श्रवण किया कि सहित अपने सहचारी सीता अरु लक्ष्मणके भगवान् रामजी तुम्हारे आश्रमपर आवते हैं, तब सुतीक्ष्ण अतिप्रसन्नहोय उक्त रामजी के दर्शन का मनोरथ करत सन्ते उक्त रामजी के सम्मुख अतिवेगसे चलताहुआ अरु आपही आपको कहताहुआ कि दीनबन्धु भगवान् रामजी मुझसे शठके अर्थ अपने दर्शनदेने रूप दया कैसे करेंगे, अरु जैसे स्वामी अपने सेवकसे मिलते हैं, तैसे उक्त रामजी मुझको अपना सेवकजान सहित अपने भ्राताके मुझसे कैसेमिलेंगे क्योंकि मुझमें ज्ञान वैराग्य भक्तिआदि जे उनके मिलने के साधनहैं तिन सर्वका अभावहै ताते मुझको अपने लक्षणोंके देखने से उन परमदयालु भगवान् रामजी के दर्शन होने का भरोसा होता नहीं, परन्तु उन रामजीका यह असाधारण स्वभावहै कि जिसको सर्वप्रकार एक रामजीही गति (आश्रय) हैं सोई उनको प्रिय है अतएव यही मुझको उनके दर्शन होने का

भरोसाहै, अरु आज भवमोचन भगवान् रामजीका साक्षात् दर्शन होने से मेरे नेत्र सुफल होवेंगे [अर्थात् नेत्र होनेकी साफल्यता ईश्वरके विशेषरूपके साक्षात् दर्शनसेही है नतु स्त्री आदि अनित्य विषयों के दर्शनसे] अरु उक्त ज्ञानवान् सुतीक्ष्णमुनिकी जो प्रेम पूर्णदशाहै सो वाणी से कहने में आवती नहीं सो कैसी है दशा कि न तो उससमय किसको दिशा विदिशाका ज्ञान है अरु न मार्ग अमार्गका ज्ञानहै, अरु न मैं कौनहूँ कहां जाताहूं यह ज्ञानहै [अर्थात् उक्त रामजी विषयक सविकल्प समाधिसे उसको ऐसा अनुराग बढ़ा कि उसका चित्त उक्त रामजी के परोक्षज्ञानसेही रामाकार होताहुआ] अतएव उससमय उसकाव्यवहार सम्बन्धी सर्व विवेक तिरोधान होगया एतदर्थ रामप्रेममें मग्नहुआ कभी आगे चलनेलगा कभी पीछे चलनेलगा कभी मार्गही में रामगुण गान करते नृत्य करनेलगा, सो उसको निरन्तर भक्ति प्राप्तहोने से इन दशाको प्राप्तहुआ, तिसकी उक्त दशाको रामजी जो सर्वके द्रष्टा हैं सो, संसाररूप वृक्षकीओट से देखते हुए। अरु उक्त रामजी ने उस सुतीक्ष्णमुनिकी अपने विषयक अतिशय प्रेमदशा देखी तब संसारभयके निवर्त्तक आप उसके हृदयमें अपने रामरूपसे प्रकट होतेहुये तब उक्त सुतीक्ष्ण रामदर्शनके निवृत्तिरूप मार्ग में अचल होय स्थित हुआ अरु उसका शरीर ध्यानानन्द करके कटहर के फल समान पुष्ट होआया, इसप्रकार जब रामजी ने उसको अपने ध्यानमें निश्चल स्थित देखा तब आप उसके निकट आय प्राप्त हुये [अर्थात् जब यह पुरुष ईश्वरका परोक्षज्ञान पाय उसके ध्यान में निश्चल स्थिति पावताहै तब ईश्वर अपने विशेषरूपसे उसके निकट प्राप्तहोता है] अरु उसकी दशाको देखतेहुये जो उसका चित्त रामाकार स्थितिको पायाहै, तब रामजी ने उसको अनेक प्रकारसे जगाया परन्तु वो सविकल्पध्यान समाधिको ऐसी दृढ़ता से प्राप्त हुआ कि उक्त रामजी के जगावनेसे भी न जागा, तब उक्त रामजी ने उसके हृदय में द्विभुज श्यामसुन्दर धनुषबाण धारी रूपसे दर्शनदिया अरु जिसके ध्यान में आसम्प्रज्ञात समा-

धिको प्राप्तहुआ तिस स्वरूपको वहां से तिरोधान कर अपना चतुर्भुजस्वरूप देखावतेहुये, तब वो मुनि अपने ध्यानमें आई मूर्त्ति का रूपान्तर होने से अति व्याकुलतासे उठ खड़ाहुआ, तब अपने अग्रभागमें सहित उक्त सीता अरु लक्ष्मणके सर्वसुखका आश्रय परमानन्द सुखका आयतन श्यामसुन्दर भगवान् रामजी को प्रत्यक्ष देखताहुआ, तब परमभाग्यवान् मुनि सुतीक्ष्ण परम प्रेम में मग्नहोय उक्त रामजी को दण्डवत् प्रणाम करता हुआ, तब परमदयालु भक्तवत्सल भगवान् रामजी अपनी प्रलम्बबाहु सों उसको उठाय अपने हृदयसे लगाय सर्वको यहसूचना करते हुये कि "येयथामाम्प्रपद्यन्ते तांस्तथैवभजाम्यहम्" जो मुझको शुद्ध भक्तिभावसे अपने हृदयमें धारता है तिसको मैंभी अपने हृदयमें धारताहौं, अरु जब परम तेजस्वी मुनि सुतीक्ष्णको श्यामसुन्दर भगवान् रामजी मिले तब कैसी शोभाहुई मानो सुवर्णके वृक्षसे श्यामतमाल वृक्ष मिलाहोय, तदनन्तर उक्त मुनि उक्त रामजी के स्वरूपको अवलोकन कर्त्ता कैसा खड़ाहै, मानों चित्र लिखित प्रतिमा खड़ीहोय। तदनन्तर उक्त मुनि अपने चित्तमें धैर्य्यकर वारंवार उक्त रामजीको प्रणाम विनयकर आप अग्रसरहोय उक्त रामजी को अपने आश्रमपर ल्याय आसनदे पादप्रक्षालनादि षोड़शोपचारसे पूजन करता हुआ॥

२ हे सौम्य! उक्त प्रकार सुतीक्ष्ण मुनि उक्त रामजी को सहित सीता लक्ष्मणके अपने आश्रम पर ल्याय प्रेम श्रद्धा युक्त उनका पूजनकर हाथजोड़ विनय करताहुआ कि हे भगवन्! आपकी अतुलित महिमा है अरु मेरी बुद्धि अति अल्पहै जैसे सूर्य के आगे खद्योत, अतएव जो मैं आपकी अस्तुतिकरौं तो कैसेकरौं अर्थात् स्तुति करनेको समर्थ नहीं] परन्तु आपकी सत्ताका बल पाय कुछ कहताहौं, हे रघुवीर! हे नाथ! "सपर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳशुद्धमपापविद्धम्"। इत्यादि प्रमाण से जैसे आकाशमें अनहोती नीलिमाहै, तैसेही शरीरादि स्थूल सूक्ष्म सर्व उपाधिसे रहित जो महासूक्ष्म आपहौ तिसविषे आपका यह

श्यामसुन्दर शरीरहै, अरु मस्तक पर जटाका मुकुट है अरु मुनि वस्त्रको धारणकिये हौ अरु हाथमें आपके धनुषबाण है अरु कटि पर तूणीर शोभितहै [अर्थात् जटा वल्कलके धारणसे कर्मसूचक मुनिवेष, अरु धनुषबाण तूणीरके धारणसे अज्ञाननाशक ज्ञानवेष, इसप्रकार कर्माधिकारियों को कर्मबोधक मुनिवेष अरु ज्ञानाधिकारियों को ज्ञान बोधक क्षत्रियवेष, इन उभय वेषके धारणकर्त्ता जो आप तिन आपको नमस्कारहै, अरु पुनः आप कैसे हौ मोहादि आसुरी सम्पदारूप किम्बा सञ्चितादि कर्मरूप सघन विपिनके भस्मकर्त्ता साक्षात् अग्निहौ, अरु सन्तरूप कमलवनके प्रफुल्लितकर्त्ता सूर्य्य हौ, अरु निशिचररूप गजसमूह के विदीर्ण कर्त्ता आप मृगराज (सिंह) हौ अरु जन्म मरणरूप पक्षियों के नाशकर्त्ता आप शकुनी (बाज) पक्षी हौ जिस आपको नमस्कार है,पुनः आप कैसेहौ अरुण कमलवत् नेत्र अरु सुवेषके धारणकर्त्ता हौ,अरु सीताके नेत्ररूप चकोरको आल्हादकारी शरदऋतुके पूर्णचन्द्रमाहौ, अरु शिवजीके हृदय कमलरूप मानसरोवर के निवासी बालहंस हौ, अरु अपने विशाल वक्षस्थल अरु बाहु करके सुशोभित हौ तिन आपको नमस्कार है अरु पुनः आप कैसे हौ संशयरूप सर्पको भक्षणकर्त्ता खगराज (गरुड़) हौ, अरु करक (पीड़ा) अरु तर्क (विषाद) इनके शमनकर्त्ताहौ अरु जन्म मरणरूप भवके भंजन (नाश) अरु देवताओं के मन के रंजन (हर्ष) कर्त्ताहौ ऐसे जे कृपाके समूह आप सो सदा हमारी इस आसुरी सम्पदारूप असुरसे रक्षाकरो, अरु हे स्वामी जी! निर्गुण सगुण सम विषम सर्वरूप आपहीहौ। "सर्वंविष्णुमयंजगत्"। अरु वास्तव में सर्व कल्पना से रहित अरूप भी आपही हौ अतएव। "यतोवाचो निवर्त्तन्ते अप्राप्य मनसा सह"। इत्यादि प्रमाणसे भी अविशेष भी आपहीहौ, अरु जिसकरके अरूपहौ तिसही करके आप सम्पूर्ण मल (विकार) से रहित निर्मल अनिन्दित अपार (प्रमाणोंका अविषय) हौ, अरु पृथ्वीके भार उतारनेके अर्थ इस राम रूपसे प्रकट प्रत्यक्षादि सर्व प्रमाणों का विषय मेरे स-

म्मुख स्थित भी आपही हौ तिन रामरूप आपको मेरा नमस्कारहै, हेस्वामीजी ! पुनः आप कैसेहौ अपने भक्तोंके मनोरथ सिद्धकर्त्ता कल्पवृक्ष के आराम (बाग) हौ, अरु काम क्रोध लोभ मोहादिकों को पलायन करावनेवाले आप तर्जनहौ, अरु धर्म नीति आदि प्रवृत्तिमें परमनिपुण आपहीहौ, अरु निवृत्तिमें संसारके पार प्राप्त होनेको आप सेतुहौ, हे सूर्य्यकुलके केतु! (ध्वज) आप सदा सर्वकी रक्षाकरतेरहो, अरु हे भगवन् ! यह जो आपकी विशाल भुजाहैं अतुलित बल प्रतापका आयतनहैं, अरु असंख्य जे इस कलियुगके दंभादि मल तिनको विभंजन करनेवाला आपका नाम है, अरु हे नाथ ! आप सम्पूर्ण धर्म जे अधर्म के वेधनकर्त्ता हैं, तिनको बाणोवत् निवास करनेको तर्कसवत्हौ, अरु सर्वको सुखद आपके गुणग्राम हैं अरु हे राम ! आप मेरी इन कामादिकों से रक्षाकरो, अरु हे स्वामी ! यद्यपि । " विरजं ब्रह्मनिष्फलं " । इत्यादि प्रमाण से आप रजतम आदि गुण विकारसे रहित अखण्ड अविनाशी, अरु । " ईश्वरः सर्व्वभूतानां हृद्देशेऽर्ज्जुनतिष्ठति " । इत्यादि प्रमाणसे अपने सामान्यरूप करके सर्वके हृदयमें निवास करनेवाले हौ, तथापि हे राम ! आप अपने सहचारी सीता लक्ष्मण सहित इस अपने काननचारी विशेष रूपसे मेरे हृदयमें निरन्तर निवासकरो, अरु हेस्वामीजी ! जो कोई पुरुष आपको सगुण किंवा निर्गुण किंवा सर्वान्तर्यामी रूपसे जानतेहैं सो अस्तु परंतु हेराम ! जो आपका कोशलपति राजकुमार कमलनयन श्यामसुन्दर स्वरूप है सो मेरे हृदयमें अपना आयतन (स्थान) करो,अरु हे स्वामीजी! देहादि अनात्म अभिमानके अभाव पूर्वक यह जो अभिमानहै कि सम्यक् ज्ञानस्वरूप रामजी मेरे स्वामी हैं अरु मैं उनका सेवक हौं सो मेरा भूलके भी निवृत्त न होय । हे सौम्य ! इसप्रकार जब सुतीक्ष्णने उक्त रामजीकी स्तुतिकरके विनयकिया तब उक्त रामजीने प्रसन्न होय पुनःउसको अपने हृदयसे लगाया अरु कहा कि हेमुनि ! मुझको तू अपने ऊपर प्रसन्नजानके जो तुझको अभीष्टहोय सो बरदान मुझसे मांगले । इसप्रकार जब रामजीनेकहा तब मुनि सुतीक्ष्ण

बोला कि हे रामजी ! मैंने आजतक किसीसे वरदान मांगा नहीं अरु इससंसारमें क्या सत्यहै अरु क्या असत्यहै यहभी मैं जानता नहीं अतएव जो आप मुझको वरदान देतेहौ तो जो आप श्रेष्ठ जानो सो मुझको दीजिये, इसप्रकार जब मुनि सुतीक्ष्णने कहा तब अति प्रसन्नचित्त उक्त रामजी बोले कि हे मुनि ! ब्रह्मआत्मा की अभेदता का सम्यक् ज्ञान, अरु व्यवधान से रहित अनन्य भक्ति, अरु पंचविषयात्मक जगत्, जो बन्धनका कारणहै, तिससे अशेष असाधारण वैराग्य, अरु गुण ज्ञान [अर्थात् योगांग ध्यान धारणादि] यह जोपरमार्थ चतुष्टयहैं सो तुझको सुखसेप्राप्तहोयँ । इसप्रकार जब उक्त रामजीने सुतीक्ष्णपर प्रसन्नहोय परमार्थ चतुष्टयरूप वरदानदिया, तदनन्तर उक्त मुनिने कहा कि हे रामजी ! जो आपने प्रसन्नहोय मुझको वरदानदिया सो मैंने अपने मस्तक पर धारणकिया, हे नाथ ! अब जो मैं अपनी प्रसन्नतासे मागों सो मुझको वरदान दीजिये, इसप्रकार जब मुनि सुतीक्ष्णने कहा तब रामजीने कहा कि जो तुझको अभीष्टहोय सो मांग, तब सुतीक्ष्ण बोला कि जैसे अब इस मेरे आश्रममें आप धनुर्बाण धारणकिये सहित अपने सहचारी लक्ष्मण सीताके सुशोभितहौ तैसेही निर्मल आकाशमें सर्वको आह्लादकारी चन्द्रमा शोभताहै, मेरे अन्तःकरणरूप आकाशमें सुशोभितरहो, इसप्रकार जब मुनि सुतीक्ष्णने अपने अभीष्टानुकूल वरदान मांगा तब रामजी ने हँसके कहा कि । " एवमस्तु " । ऐसाही होय ॥ हे सौम्य ! इस सुतीक्ष्ण के प्रकरणसे उक्त राजादशरथके विषयमें । "अथातो धर्म्म जिज्ञासा" । यह पूर्वमीमांसाके प्रथम सूत्रप्रमाणसे वेदाध्ययनके अनन्तर धर्म्म जिज्ञासाका उदयहोना जानना क्योंकि आगे अगस्त्यमुनिके समागम प्रकरणसे श्रोत्रिय धर्म्मबोधक आचार्य की प्राप्ति अरु तिस करके । " चोदनालक्षणोऽर्थो धर्मः " । इस दूसरे सूत्रके प्रमाण । " अहरहः संध्यामुपासीत " । इत्यादि विधि वाक्य से पञ्चयज्ञरूप पञ्चवटी में कर्त्तव्यरूप से निवास कहाजायगा ताते ॥

इति रामायणेऽध्यात्मगोचरे चतुर्थप्रकरणं समाप्तम् ॥

अथ रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डेरामागस्त्यस-मागमवर्णनन्नाम पञ्चमं प्रकरणं प्रारभ्यते ॥

१ ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हे सौम्य! उक्त प्रकार सम्यक् विशेषज्ञान स्वरूप रामजी सुतीक्ष्ण मुनिसे मिल उससे आतिथ्य पूजन सत्कारपाय उसको अभीष्ट वरदान दे आगे अगस्त्यमुनिके आश्रम को पग धारतेहुये तब सुतीक्ष्णने कहा कि हे भगवन्! मैं बहुत दिवससे इस आश्रम में स्थितहौं अरु मुझको अपने गुरु अगस्त्य भगवान् के दर्शन पाये बहुत काल हुआ एतदर्थ अब मैंभी आप के साथ गुरुके आश्रम को चलताहौं अरु इस मेरे आपके साथ चलने में आपके ऊपर कुछ अयसान नहीं क्योंकि मुझको गुरुमहाराजके दर्शनकरने हैं [अर्थात्। "आदौस्ववर्णाश्रमवर्णिताःकिया: कृत्वासमासादितशुद्धमानसः ॥ समाप्यतत्पूर्वमुपात्तसाधनः समाश्रयेत्सद्गुरुमात्मलब्धये"। इत्यादि रामजी करके लक्ष्मणजी प्रति उपदेश किये वाक्य प्रमाण सुतीक्ष्ण मुनि प्रकट करताहै कि हे राम! मैंने प्रथम। "यज्ञेनदानेनतपसानाशकेन"। इत्यादि श्रुति प्रमाणसे यज्ञ दान तप आदि साधन करके अपने अन्तःकरण को शुद्ध किया तब आप असाधारण विवेक वैराग्य साधन मुझको प्राप्तहुये तब मैं अपने तप आदि सर्व्व कर्मों को समाप्तकर उक्त आप करके समन्वित हुआ अपने गुरु महाराजके आश्रम को चलता हौं] इसप्रकार उक्त मुनिकी चातुर्य्यता को देख कृपासागर रामजी दोनों भ्राता प्रसन्न होतेहुये, तब सुतीक्ष्णके आश्रम से सहित मुनिके उठ आगे मार्गमें अपनी अनुपम अनन्य भक्ति को वर्णन करते अगस्त्यमुनिके आश्रमके निकटजाय प्राप्तहुये, तब रामजीके सङ्गसे सुतीक्ष्ण आगेबढ़ अपने गुरुके निकटआय प्रणाम कर कहताहुआ कि हे भगवन्! जो जगदाधार परमात्माने रामरूपसे अवतार धारण कियाहै अरु जिनका आप निरन्तर स्मरण विचार करतेहौ सो कोशल राजकुमार सहित अपने सहचारी सीता अरु लक्ष्मणके आपसे मिलनेके अर्थ यहां आये हैं, इसप्रकार जब सुतीक्ष्णने कहा तब तिसको श्रवणकर मुनिअगस्त्य कि जिन्होंने इससंसाररूप अपार समुद्र को गौ खुरसेभी तुच्छ जान तिसका आचमन (उल्लङ्घन) कियाहै [अर्थात् संसार समुद्रके पार प्राप्तहुये हैं] सो अपने चित्तमें अतिप्रसन्न होय उक्त रामजी के सम्मुख चलतेहुये, अरु उक्त रामजी को कि जिसके निर्विशेष रूप को अपने हृदयमें विवेक चक्षुसे अनुभव दर्शनकरते हैं, अपने सम्मुख घटवत् प्रत्यक्षदेख प्रेममग्नहोय अपने नेत्रमें प्रेमाश्रु भरिल्याये, अरु जब उक्त रामजीने उक्त मुनिको अपने सम्मुख देखा तब शीघ्र आगेबढ़ दोनों भ्राता उक्त मुनिके चरणोंमें प्रणाम करतेहुये तब मुनिअगस्त्यने उक्त रामजीकी भुजापकड़ उनको उठाय अपने हृदयसे लगाया अरु तिस करके यह सूचित किया कि जो आप सर्वके हृदयमें अंगुष्ठमात्र स्वयंज्योति सर्वके प्रकाशक साक्षी आत्माहौ सोई धर्म्मादिकोंकी रक्षणार्थ अपनेबिषे विशेष रूप धारण करके अपने ब्रह्मण्य देवत्व अरु गुरु महिमा को लोकमें प्रकाशनार्थ इसप्रकार मुझको दण्डवत् करतेहौ सो धर्ममर्य्यादा पालनार्थ आपके सिवाय और कौनकरे तदनन्तर उक्त रामजीके सामान्य विशेष सगुण निर्गुण साधारण असाधारण स्वरूप जाननेवाले परम ज्ञानवान् मुनिअगस्त्य आदर पूर्वक कुशलप्रश्नकर उक्त रामजी को वाह्य आश्रम अरु अन्तर आश्रममें यथायोग्य आसनपर विराजमान् करतेहुये अरु उक्त रामजीका सम्यक् प्रकार पूजन सत्कार आतिथ्यकर कहतेहुये कि हे रामजी! आज मेरेसमान भाग्यवान् और कौनहै किन्तु कोई नहीं अर्थात् जिस पुरुष को अपने आप ज्ञान स्वरूप अन्तरात्मा रामजीके निर्विशेष स्वरूपका साक्षात्कार अनुभव हुआ है अरु वो उक्त रामजी को सर्वरूपसे जानताहुआ उनके अवताररूपमें अनुरागवान् होताहै तिसके समान परम आस्तिक अरु भाग्यवान् और कौन होगा किन्तु कोई नहीं] अरु अगस्त्यमुनिके आश्रम पर उनके शिष्यादि जे अन्य ब्राह्मण थे सो सर्व उक्त रामजीके स्वरूप को अवलोकनकर अतिहर्ष को प्राप्तहुये। अरु उक्त रामजीके सम्मुख सर्व

मुनिमण्डली धनुषाकार स्थितहुई अरु तिन सर्वके सम्मुख उक्त रामजी कैसे सुशोभितहुये; मानो आकाशमें पूर्णचन्द्रमा शोभित होय, अरु सर्व मुनि ण उक्त रामजी को ऐसे अवलोकन करते-हुये मानो निमेषके व्यवधानसे रहित चकोरपक्षी पूर्णचन्द्रमा को अवलोकन करत होय ॥

२ हे सौम्य ! उक्तप्रकार अगस्त्यमुनिने उक्त रामजीको अपने अन्तर अरु बाह्य उभय आश्रममें सुशोभित किये अरु अन्य सर्व मुनिमण्डली उक्त रामजीको अवलोकन कररही तिसके अनन्तर उक्त रामजी ने अगस्त्यमुनिसे कहा कि हे भगवन् ! आप सर्व्वज्ञ त्रिकालदर्शीहौ अरु ब्रह्मज्ञहौ एतदर्थ आपसे अविदित कुछ नहीं, अरु जिसकारण मैं अपने विषे यह विशेषरूप धारणकर वनयात्रा को आयाहौं सो सर्व आपको विदितहै अतएव मैंने आपसे विशेष प्रकटकरके कहा नहीं, परन्तु अब आप कृपाकरके सो मन्त्र (सलाह) आज्ञाकरिये कि जिसकरके मुनियों के द्रोही रावणादिकों का वध अरु सुखनिवासकरों, इसप्रकार जब रामजी ने अगस्त्यमुनिसे मन्त्र मांगा तब तिसको श्रवण कर उक्तमुनि हँसतसन्ते कहतेहुये कि हे राम ! ।"यद्वाचानाभ्युदितं येनवागभ्युद्यते तदेव ब्रह्मत्वम् "। इत्यादि प्रमाणसे जिसको कहनेको वाणी समर्त्थनहीं होती अरु जिसकी सत्तायके अन्य सर्व को कहने को वाणी समर्थ होतीहै, सो सर्वशक्तिमान् ब्रह्म आपहोयके जो मुझसे मंत्र पूछतेहौ, सो क्या जानके पूछतेहौ, हे राम ! तुम्हारे श्रवण मनन स्मरण विचारके आधारसे आपकीअचिन्त्य महिमाको किञ्चित् मैं जानताहौं सो ऐसा जानताहौं जो सत् असत्से विलक्षण अनिर्वचनीय आपकी महिमाहै सो अति विशाल गूलरके वृक्षसमान है तिसबिषे अनेक ब्रह्माण्डरूप फललगेहैं तिनके अन्तर चारखानि चौरासीलक्ष योनिके मनुष्यादि जीव निवासकरतेहैं सो उस वृक्ष को जानते नहीं तब उसवृक्षके वृद्धिह्रास होनेका परम आश्रय जो वृक्षसेमिला अरु असङ्ग अपार अनावरण अविनाशी आकाशसेभी महासूक्ष्मी परमचैतन्य तत्व आपतिसको न जानसके तिसमें क्या

आश्चर्य है किन्तु कुछभी नहीं, अरु जिस ब्रह्माण्डान्तर सर्वजीव बसते हैं तिस ब्रह्माण्डरूप गूलरफल को वानरवत् भक्षण करने वाला अरु स्थिर न रहने देनेवाला जो कालहै।" कालो जगद्भक्षकः "। सो। " भयादस्याग्निस्तपति भयात्तपतिसूर्य्यः। भयादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धावतिपञ्चमः "। इत्यादि प्रमाणसे, निरन्तर आपके भयमेंही बर्त्ततहै, ऐसे आप सर्वलोकके स्वामी होत सन्ते प्राकृत मनुष्योंवत् मुझसे मन्त्र पूछतेहौ सोई आपकी विशेष महिमाहै। अरु हे राम ! हे कृपानिकेत ! आपसे यह वरदान मांगता हौं कि आप सहित अपने सहचारियों के मेरे हृदयमें निवास करो [अर्थात् जब मैं निर्विकल्प समाधिको प्राप्तहोवों तब अपने निर्विशेष स्वरूपकी स्थितिपावों, अरु जब उस समाधिसे उतरों तब आपके इस विशेषस्वरूपमें सविकल्प समाधिकी स्थिति पावों] अरु निरन्तर आपकी अनन्यभक्ति अरु असाधारण वैराग्य अरु सत्संग अरु आपके चरणकमलमें अनिवार्य्य प्रीतिपावों [अर्थात्। " सर्व्वंखल्विदंब्रह्म तज्जलानीति शान्तउपासीत् " । इत्यादि प्रमाणसे ज्ञानपक्षकरके व्यवधान से रहित अनन्यभक्ति (सर्वत्र सर्व्वरूपसे एक ब्रह्मरूप आप को विषय करनेवाली बुद्धि) अरु आपके एक अद्वैत स्वरूप में भासमान जो अध्यस्थ नानारूप अन हुआ जगत् तिससे अशेष वैराग्य अरु सत्यस्वरूप जो सम्यक् ज्ञानमूर्त्ति आप तिसका अभेद संग, अरु भक्तिपक्ष करके इन आपके चरणकमलों में किंवा प्रणवका लक्ष्य तुरीयारूप आप तिनके अकारादि मात्रा रूप पाद तिन विषयक प्रीतियुक्त विचार यह मुझको वरदान में दीजिये] अरु हे राम ! यद्यपि आप का निर्व्विशेष अखण्ड अनन्त अनुभवगम्य ब्रह्मरूप कि जिसको परमार्थवादी अनुभव करते हैं ऐसा है [अर्थात् यद्यपि प्राणादिकलासे रहित निष्कल निर्व्विशेष, अरु । " नैनंछिन्दन्तिशस्त्राणि " । इत्यादि प्रमाण से परमाणु वा तज्जन्यपृथिव्यादि कार्य्य तिनरूप शस्त्रोंकरके छेदन होता नहीं ऐसा अखण्ड अरु । " येनेदंसर्वंविजानाति तं केनविजानीयात् " । इत्यादि प्रमाणकरके

जिस ज्ञानसत्ता से सर्व्व कोई सर्व्व को जानते हैं तिसको किस करके जानिये अर्थात् जो सर्व्वका जाननेवालाहै सो किसीकरके भी जानने में आवता नहीं ताते देव मनुष्यादिकों करके वा देश काल वस्तुकरके जिसका अन्त न पाइये ऐसे अनन्त, अरु "अणोरणीयान् महतोमहीयान्" । इत्यादि प्रमाणसे अणु से भी महासूक्ष्म अरु बड़ा ताते ब्रह्म ऐसा जो आपका अखण्ड अनन्त अनुभवगम्य ब्रह्मरूप है, अरु । "निष्कलंध्यायमानः" । इत्यादि प्रमाणसे आपके निष्कल निर्विकार निर्विशेष स्वरूपको परमार्थदर्शी साक्षात् अनुभव करते हैं] अरु ऐसाही आपके स्वरूपको मैं जानता अरु मुमुक्षुओं प्रति कहताहौं, तथापि बुद्धिआदि सर्वका विषय होने से इस आपके सगुणरूपमेंही प्रीति मानताहौं, अरु हे भगवन् ! आप अनादिकालसे अपने सेवकोंको बड़ाई देतेआये हौ अतएव मुझसे मन्त्र (सलाह) पूछनेकरके मुझ सेवककोभी बड़ाई देतेहौ । अरु हे भगवन् ! आपको निवास करनेको सर्व्वत्र ही स्थानहै अरु आप सर्वत्रही निवास करतेहौ तथापि जो स्वामी प्रश्नकरे तो सेवकको उसका उत्तर देनाभी योग्यही है, ताते हे राम ! आपके निवास करनेयोग्य एक मनोहर स्थानहै अरु सो अतिपवित्र है अरु पञ्चवटी तिसका नामहै, परन्तु वो दण्डकारण्यमेंहै अरु वो देश शुक्रमुनिके शापसे अतिअमङ्गल अरु अपवित्र होगयाहै ताते आप पञ्चवटी में निवासकर उसदेशको पवित्र कर उक्तमुनिके शापसे उसका उद्धार करिये । हे भगवन् ! पूर्व इस अतिरमणीय मनोहर अरण्य में शुक्र मुनि तप करते रहे अरु तिनकी एक अरजानामा परमसुन्दरी रजस्वला धर्म्मको न प्राप्त हुई कन्यारही तिसके साथ राजा दण्डकने बलात्कारसे मैथुन किया सो जब शुक्रमुनिको विदितहुआ तब उन्हों ने शाप दिया कि यह दण्डक राजाका देश दग्ध अरु अतिअपवित्र होजावे अरु दण्डकारण्य करके विख्यातहो, इसप्रकार जब शुक्रमुनि ने शाप दिया तबसे यह देश दग्ध अरु अमङ्गल होगया है अतएव अब आप पञ्चवटी में निवासकर इस दण्डकारण्यको पावन करिये,

अरु यहां धर्मविघातक असुरोंका नाशकर मुनियोंपर रक्षारूप दया करिये, इसप्रकार जब आचार्य अगस्त्यमुनिने कहा तब तिसको श्रवणकर उनसे आज्ञालें भगवान् रामजी पञ्चवटीकी ओर यात्रा करतेहुये तब उसमार्ग में राजा दशरथका मित्र जटायुनाम पक्षी मिला तब तिससे मिल मित्रताकर आगे पञ्चवटी स्थानमें प्राप्त होय गोदावरी के तट सुन्दर पर्णकुटी बनाय वहां सहित अपने सहचारियोंके सुखनिवास करतेहुये ॥ [अर्थात् सम्यक् विशेष ज्ञान स्वरूप रामजी श्रुत्याचार्यरूप भगवान् अगस्त्यसेमिल अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञानरूप रावणसहित आसुरी सम्पदारूप राक्षस जो कि मनुष्योंको वारंवार प्राणान्तक्लेशको दाताहैं, तिनके विनाशार्थ निवासस्थल विषयक मन्त्र पूछतेहुये कि हे भगवन् ! मुझको निवासार्थ ऐसा स्थान बोधन करिये कि जहां निवासकर उक्त असुरों का वधकरों, तब उक्त अगस्त्यने कहा कि जो आपकी ऐसीही इच्छाहोय तो अपञ्चीकृत पञ्चमहाभूतरूप पञ्चवटी देशके पञ्चीकृत पञ्चभूतोंका सुन्दर मनुष्य शरीररूप स्थलदेख तिसपर पञ्चकोशात्मक सुन्दर पर्णकुटी बनाय तिसमें सहित अपनी ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञारूपासीता अरुअसाधारण वैराग्यरूप लक्ष्मणके निवास कर "शान्तोदान्तउपरतस्तितिक्षुःसमाहितो भूत्वात्मन्येवात्मानं पश्यति" इत्यादि प्रमाणसे,शम,दम,उपरति,तितिक्षा,समाहितचित्तता यह पांच साधन करतेरहो तब आप सुखपूर्वक उक्त असुरों का वधकरोगे । इसप्रकार जब श्रुत्याचार्य्यरूप अगस्त्यमुनिने कहा तब तिसको श्रवणकर उक्त रामजी उक्तमुनिके आश्रमसों दक्षिणायनरूप दक्षिणदिशाको प्रवृत्ति लक्षणमार्गहोय चलतेहुये, तब प्रथम मार्ग में प्राक्तन पुण्यकर्म संस्काररूप गृद्धपक्षी; जो क्षेत्रज्ञरूप राजा दशरथका मित्रहै, तिससे मिल प्रथम अपञ्चीकृत पञ्च तन्मात्रात्मक पञ्चमहाभूतरूप पञ्चवटी देशको प्राप्तहुये,तदनन्तरपञ्चीकृत पञ्चभूतरूप सुन्दरस्थलको देख वहां पञ्चकोशात्मक पर्णकुटी बनाय तिसमें उक्तमुनिकी आज्ञाप्रमाण अपने उक्त सहचारियों सहित सुखनिवासकर उक्त पांचसाधनोंको करतेहुये;अर्थात् उक्त राम

जी सबशरीर पञ्चीकृत पञ्चभूतात्मकहैं इसबातको लखावनेके अर्थ पञ्चीकृत पञ्चभूतात्मक स्थल में अपने अशरीर स्वरूप में शरीर करके निवास करतेहुये अरु अपने वास्तविक आत्मस्वरूप करके घटमें आकाशवत् असङ्गहुये पञ्चकोशात्मक पर्णकुटी में सुख निवासकर देहादि सर्व से आत्माकी असङ्गतावोधन करतेहुये, अरु आप पञ्चसाधनरूप आचरण अङ्गीकार कर सर्व को उक्त असुरों के भयकी निवृत्ति के अर्थ परमउपाय उक्त साधनों का लखावते हुये । यह उक्त रामजी के पञ्चवटी में निवासरूप लीलाका लक्ष्य जानना । अरु अब क्षेत्रज्ञरूप राजादशरथके विषयमें श्रवणकरो हे सौम्य ! चित्रकूटसे जो रामजी की आगे वनकी यात्रा है तिस करके रामजीके शरीरमें प्रवेशपूर्वक वनमें प्रवेशरूप राजादशरथ का पुनर्जन्म कहिआये हैं, अरु रामजी के अत्रिमुनि से समागम द्वारा उक्त दशरथका यज्ञोपवीत संस्कार कहिआये हैं, अरु रामजीके शरभङ्गमुनि से समागमद्वारा उक्त दशरथ का यज्ञोपवीत संस्कारोत्तर वेदाध्ययन संस्कार कहिआये हैं, अरु रामजीके सुतीक्ष्णसे समागमद्वारा उक्त दशरथको वेदाध्ययनोत्तर धर्मजिज्ञासा का होना कहिआये हैं, अब रामजी का अगस्त्यमुनि से समागम द्वारा उस दशरथको अपराधर्मबोधक आचार्य की प्राप्ति समझनी, अरु रामजीके पञ्चवटी में निवासद्वारा उक्त राजादशरथ का शरीरमें निवासपूर्वक । " नाकस्य पृष्ठेसुकृतेनुभूत्वेमंलोकं हीनतरञ्चाविशन्ति " इत्यादि प्रमाणसे स्वर्गदायी अपरा विद्यारूप गोदावरी के तटपर निवासपूर्वक पञ्चयज्ञरूप विहिताचरण करना समझना । अब आगे उक्त दशरथ के सकाम कर्म्म संस्कार बलवान् होने से सीताहरणद्वारा उसकी पूर्वकी परोक्ष ब्रह्मानुभूति प्रज्ञाका हरण अरु तिसकरके अनेकक्लेश की प्राप्ति कहीजायगी]

इति रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डेरामागस्त्य
समागमवर्णनन्नामपञ्चमंप्रकरणं समाप्तम् ॥

अथ रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डे श्रीरामपञ्चवटीनिवासवर्णनन्नामषष्ठंप्रकरणंप्रारभ्यते ॥

१ ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हे सौम्य ! उक्त प्रकार संक्षेपमात्रसे कहा जो सम्यक् विशेषज्ञानरूप रामजीका निवास तिसको पुनः सविस्तर श्रवणकरो । हे सौम्य ! मूलप्रकृतिका कार्य अरु षोडशप्रकृतियोंका कारण ऐसा जो पञ्चतन्मात्रारूप अपञ्चीकृत पञ्चमहाभूत अरु अहङ्कार महत्तत्त्व अव्यक्त, यह आठ प्रकृति विकृतिरूप सामान्यभूतल तिसविषे दक्षिणायनरूप दक्षिणदिशा में प्रवृत्तिमार्ग करके प्राप्तहोने योग्य पचीस विभागसे प्रवृत्तहुये पञ्चीकरणात्मक पञ्चभूत [अर्थात् " तासां त्रिवृतं त्रिवृतमेकैकांकरवाणीति सेयं देवतेमास्तिस्रो देवता अनेनैव जीवेनात्मनानुप्रविश्य नामरूपे व्याकरोत् ३ तासां त्रिवृतं त्रिवृतमेकैकामकरोद्यथानुखलुसौम्ये मास्तिस्रो देवतास्त्रिवृत्त्रिवृदेकैकाभव तितन्मे विजानीहीति ४।३] इस छान्दोग्य उपनिषद् में त्रिधाकरण कहे प्रकार परमात्माकी इच्छासे अपञ्चीकृत पञ्चभूतोंके प्रत्येक भूतोंके पचीस २ विभाग हुये तिनमें से प्रत्येक के इक्कीस २ विभाग पृथक् किये अरु चार चार विभाग पृथक् हुये, तदनन्तर एक भूतके इक्कीस विभाग में उस भूतको छोड़ अन्य चार भूतोंके जे चार चार विभाग पृथक् हुयेहैं तिनमेंसे प्रत्येकका एक एक विभाग मिला तब वो एकभूत पुनः पचीस भागसे पूर्णहुआ, इसप्रकार अपञ्चीकृत पांचोंतत्त्व परस्परमें पचीस २ विभागसे मिल पञ्च महाभूत होतेहुये; जैसे पृथ्वीके इक्कीस अंश में अन्य चारोंतत्त्वोंका एक एक अंश मिलके पचीस अंशात्मक पूर्ण पृथ्वीहुई है, अरु पृथ्वी के चार अंशों में से एक एक अंश अन्य चारोंतत्त्वोंमें मिले हैं; इसही प्रकार अपञ्चीकृत पञ्चतन्मात्रारूप पञ्च महाभूतों का पचीस विभागसे पञ्चीकरणहोय यह पञ्च महाभूत हुये हैं, सोई अपने कार्य्यरूप वृक्षों के अभाव से उद्यान दण्डकारण्य है [अर्थात् सर्व को दण्डकर्त्ता मृत्युसंज्ञक कालके विहार करनेका अरण्य है] । " अरु तत्सृष्ट्वा

तदेवानुप्राविशत्" इत्यादि प्रमाणसे तिसविषे जब सामान्य चैतन्यरूप रामजीने प्रवेशकिया तब उनकी सत्ता रूप पवित्रता को पाय आगे उन पञ्चभूतोंका पूर्वोक्त प्रकार पांच पांच विभाग से शरीरारम्भक पञ्चभूतोंका पञ्चीकृतरूप उक्त दण्डकारण्यके वृक्ष होतेहुये, अरु उन पञ्चीकृत पञ्चमहाभूतों से हुये जे नानाप्रकार के पशुपक्षी मनुष्यादि शरीर सोई उस दण्डकारण्यके निवासी मुनि मृगादिक हैं, इसप्रकारके दण्डकारण्यमें पञ्चीकृत पञ्चमहाभूतात्मक सर्व उत्तम संस्कार सम्पन्न मनुष्य शरीररूप परम पवित्र पञ्चवटी स्थलमें सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजीने अतिरमणीय पञ्चकोशात्मक पर्णकुटी निर्माणकिया, तहां हस्त पादादि अवयव युक्त स्थूल पिण्डरूपा सम वेदिका (धरातल) निर्माण किया अरु तिसके आश्रय पञ्चप्राण अरु पञ्चकर्मेन्द्रियां रूप सुन्दर स्तंभकिये अरु तिसके ऊपर संकल्प विकल्पात्मक अपनी पांचों वृत्तियों सहित मनोमय कोशरूप तृण पल्लवकी छाया किया तिसके आवान्तर विज्ञानमय कोशरूप अग्निहोत्रादि सर्व्व क्रिया करनेके अर्थ, परमरमणीय अरु परमपवित्र एक कुटी बनाया, अरु तिसके आवान्तर अपने सुखनिवास अरु समाधिके अर्थ आनन्दमय कोशरूपा कुटी बनाय तिसमें आप उक्त पञ्चसाधनरूप परमपवित्र दर्भासन बिछाय तिसपर सुख विश्राम करतेहुये अरु। "तदेषश्लोकोभवति तदेवसक्तः सहकर्म्मणीति लिङ्गंमनो यत्रनिषक्तमस्यप्राप्यान्तं कर्म्मणस्तस्य यत्किञ्चेहकरोत्ययम्"। "अथ एभिरेवप्राणैःसहपुत्रमाविशति"। इन बृहदारण्यकी श्रुतियोंकी एकतासे सिद्धहुआ जो राजादशरथका अपने मरणोत्तर अपने पुत्र रामजीमें प्रवेश तिस करके उक्त पञ्चवटीमें ही रामजीके शरीरके निमित्तसे राजादशरथ को अपने पूर्वशरीरमें अन्त समय सकाम क्रियाके वश होनेके फल भोगार्थ प्रवेश समझना, अरु पूर्वोक्त प्रकार उसकी संस्कार सम्पन्नताके अनन्तर श्रोत्रिय आचार्यरूपअगस्त्यकी आज्ञानुसार अपराविद्या जो स्वर्गदाहै [अर्थात् गो कहिये स्वर्ग दा कहिये देनेवाली वरी कहिये श्रेष्ठा, अर्थात्

स्वर्गदायियोंमें श्रेष्ठा जे अपराविद्या] तिस गोदावरीके निकटपञ्चवटीमें अग्निहोत्रादि विहिताचरण धर्म्मानुष्ठान करते निवास समझना। यहां तीनप्रकार विचारहै तहां। "यद्यदाचरतिश्रेष्ठस्तत्तदेवेतरोजनः। सयत्प्रमाणंकुरुतेलोकस्तदनुवर्त्तते"। इत्यादि प्रमाणसे रामजीका जो अग्निहोत्रादि कर्ममें प्रवृत्त होनाहै सो रामजीके अधिभूत बाह्य पक्षमें। "नभेदबुद्धिंजनयेदज्ञानांकर्मसङ्गिनाम्"। इत्यादि प्रमाणसे कर्म्माधिकारियों को कर्म्ममें प्रवृत्ति उपदेशार्थ जानना। अरु तिसहीके आवान्तर ज्ञान कर्मके समुच्चय सेवनकर्त्ता जो परिणाममें सकाम क्रियाके वश होय अपने पुत्रमें आसक्त हुआ देहत्यागानन्तर अपने पुत्रमें प्रवेश को पाय तिसके निमित्तसे तिसही शरीरसे अपने कर्मोंके सुख दुःखादि फलका भोगनेवाला क्षेत्रज्ञरूप राजादशरथ तिसका अपराविद्या रूपा गोदावरीके तटपर उक्त पञ्चवटीमें निवासकर अपने पूर्व्व कर्मोंके अध्यास वश अग्निहोत्रादि विहिताचरणमें प्रवृत्ति समझना। अरु अध्यात्म पक्षमें सम्यक् विशेषज्ञानरूप रामजी को उक्त पञ्चवटीमें निवास करनेसे आत्मकामी मुमुक्षुके अर्थ। "शान्तोदान्तउपरतस्तितिक्षुः समाहितोभूत्वात्मन्येवात्मानंपश्यति"। इत्यादि प्रमाणसे शम दमादि साधनोंका करनेवाला अन्तःकरण की शुद्धिके होनेसे। "गुहाहितंगह्वरेष्ठम्पुराणम्"। इत्यादि प्रमाणसे अपनी बुद्धिरूपा गुहामें अपने आप चैतन्य आत्मा को साक्षात्कार करताहै, इसलक्ष्यके बोधार्थ मोक्षदा परा विद्यारूपा गोदावरीके तटपर अपने निवास पूर्व्वक साधनोंमें प्रवृत्ति होनेद्वारा मुमुक्षु को उक्त साधनोंके करनेकी आवश्यकता रूप लक्ष्य समझना, अरु तिसहीद्वारा ज्ञानके समुच्चयकर्त्ता क्षेत्रज्ञरूप राजा दशरथकी पूर्व्वजन्मके ज्ञानके भेद संस्कार वश उन रामजीद्वारा ही उक्त साधनोंमें भी प्रवृत्ति समझना, परन्तु उक्त दशरथके पूर्व्वके कर्म्म संस्कार बलवान् अधिक समझना अरु ज्ञानके संस्कार मन्द समझना, क्योंकि आगे सीताहरणके प्रसंगसे उक्त राजादशरथकी पूर्व्वकी परोक्षतासे ब्रह्मको विषय करनेवाली प्र-

ज्ञाका हरण कहाजायगा ताते अरु वास्तव करके परमात्मा सम्यक् ज्ञानस्वरूप रामजी जो निरन्तर आप्तकामहैं तिनको। "नमेपार्थास्ति कर्त्तव्यम्। रामो न गच्छति न तिष्ठतिनानुशोचति"। इत्यादि प्रमाण से कुछभी कर्त्तव्य नहीं, अतएव परमात्मा ने अवतार शरीर धारणकर लोकदृष्ट्या जो जो शुभाशुभ आचरण किये हैं सो सो केवल संसारमें धर्म्मोपदेशार्थ अरु मुमुक्षु के विचारार्थही कियेहैं ताते रामजीके चरित्रों का सूक्ष्मबुद्धिसे विचारकिये विना उसका अन्तर लक्ष्य जानने में आवे नहीं एतदर्थ विचार करना सर्वथा योग्यही है॥

इति रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डे श्रीरामपञ्चवटी निवासवर्णनन्नामषष्ठंप्रकरणं समाप्तम्॥

अथ रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डे लक्ष्मणंप्रति रामकृतोपदेशवर्णनन्नाम सप्तमंप्रकरणंप्रारभ्यते॥

१॥ श्रीगुरुरुवाच॥ हे सौम्य! उक्त प्रकार जब अगस्त्यमुनि की आज्ञानुसार सम्यक् ज्ञानस्वरूप रामजीने अपने सहचारीब्रह्मविषयिणी प्रज्ञावृत्तिरूपा सीता अरु असाधारण वैराग्यरूप लक्ष्मण के सहित उक्त पञ्चवटीमें निवासकिया, अरु जबसे उक्त रामजी ने उक्त पञ्चवटी में सहित अपने सहचारियों के निवासकिया तब से दण्डकारण्य पञ्चवटी के वन नदी ताल उपवनादि सर्व दिन दिन प्रति शोभा सुन्दरताको प्राप्त होतेहुये, अरु उक्त खगमृगादि परस्परके वैरभावको त्याग सुखपूर्वक एकत्र विचरतेहुये [अर्थात्। "अथयोऽन्यां देवतामुपास्ते ऽन्योऽसावन्यो ऽहमस्मीति न सवेद यथा पशुः परश्ं सदेवानां"। इत्यादि श्रुतिप्रमाण से जे भेदवादी, उपासकहैं सो पशुहैं सो परस्परमें निन्दा अरु वैर करते हैं, तहां अनेकप्रकारके मतवादी वैष्णव, अनेकप्रकारके मतवादी शैव अनेकप्रकारके मतवादी शाक्त, इत्यादि जे मतवादी पुरुष हैं सो परस्परमें परस्पर की अरु एक दूसरे की निन्दा करते हैं, अरु परस्परमें प्राणांत वैर मानतेहैं परस्परमें निन्दाके ग्रन्थ रचते हैं,

अतएव श्रुति ने ऐसे पुरुषको पशु करके वर्णन कियाहै, अरु ऐसे पशुधर्म्मा पुरुषको अपने शरीररूपा पञ्चवटीमें जब सम्यक्ज्ञानस्वरूप रामजीकी प्राप्ति होतीहै तब वो परस्परकी निन्दा वैरको त्यागके। "सर्व्वंखल्विदंब्रह्म"। इत्यादि प्रमाणसे सर्वत्र एक अद्वैत ब्रह्मको निश्चयकर एकत्रहुये विचरते हैं, ताते भेदोपासनारूप पशुधर्म त्यागने योग्यहै] अरु जिस वनमें उक्त रामजी निवासकरते हैं तिसकी प्रशंसा करने को सहस्रमुख अरु दो सहस्र जिह्वावाला शेषनाग भी समर्थ होतानहीं [अर्थात् जिस शरीररूप पञ्चवटीके प्राण मन इन्द्रियादिकोंके संघातरूपवनमें सम्यक्ज्ञान स्वरूप रामजी सहित अपने उक्त सहचारियोंके निवासकरतेहैं। तिसको "ब्रह्मविद्ब्रह्मैव भवति"। इत्यादि प्रमाणसे ब्रह्मरूपत्वहोनेसे वाणीके विषयत्वके अभावसे उससंघातकी प्रशंसाकरनेको शेषादि कोईभी समर्थ होते नहीं] अरु। "कदाचिदेकान्तमुपस्थितंप्रभुं"। इत्यादि प्रमाणसे किसी एक समय उक्त पञ्चवटी में उक्त रामजी प्रसन्नचित्त विराजमानथे तिससमय अपने स्वामीको प्रसन्नजानि। "सौमित्रिरामादितशुद्धमानसः प्रणम्यभक्त्याविनयान्वितोब्रवीत्"। इत्यादि प्रमाणसे, सुमित्रानन्दन लक्ष्मणजी कि प्राप्तकियाहै शुद्धभाव अपनेविषे जिसने सो विनययुक्त प्रीतिपूर्वक प्रणामकर हाथजोड़ कहतेहुये कि हे सर्व्वचराचरके स्वामी! हे गुरो! मैं आपको परमहितकारी प्रभुजानके कुछ प्रश्न करताहौं तिसका उत्तर मुझ सेवकको सर्व्व समुझायके कहिये कि जिसकरके आप के स्वरूपको यथार्थ जानके आपके चरणोंकी सेवाकरों तहां, ज्ञान, वैराग्य, माया अरु अपनी भक्ति अरु ईश्वर जीवका भेद, यह सर्व भलीप्रकार समुझायके कहिये कि जिसकरके मेरे चित्तके शोक मोह भ्रम अशेष निवृत्त होवें॥

२ हे सौम्य! उक्त प्रकार जब पञ्चवटी में स्थित प्रसन्न चित्त रामजीसे लक्ष्मणजीने उक्त प्रकार पांच प्रश्न किये तब। "श्रुत्वाऽथसौमित्रिवचोखिलंतदा प्राहप्रपन्नार्तिहरःप्रसन्नधीः"। इत्यादि प्रमाणसे लक्ष्मणजीके सम्पूर्ण प्रश्नों को श्रवणकरके तब शरणा-

गतकी आर्तिको नाशकर्त्ता प्रसन्न बुद्धि रामजी उत्तर कहतेहुये हे लक्ष्मणजी ! तुम्हारे सर्व प्रश्नोंका उत्तर मैं संक्षेपमात्र कहताहौं तिनको तुम अपनी वाह्य प्रसरित वृत्तिको अन्तर खींच सावधान चित्तहोय श्रवण करो । हे लक्ष्मणजी ! प्रथम मायाको श्रवणकरो कि जिसकरके एक शुद्ध ब्रह्मके विषे जीव ईश्वर का विषमभेद हुआहै; तहां मूलाज्ञानकी दो शक्तिहैं तहां एकका नाम माया है दूसरी का अविद्याहै, तहां माया विशिष्ट [मायामेंप्रतिबिम्बित] चैतन्य को ईश्वर अरु अविद्या विशिष्ट चैतन्यको जीव कहते हैं तहां माया विशिष्ट चैतन्य विद्याप्रधान होने से अपने पूर्वके शुद्ध ब्रह्मस्वरूपको भूलता नहीं अरु मायाके आवरण में आवता नहीं अरु उसकी सत्ता पायके माया अपने सत्त्व रज तम इन तीनों गुणोंरूपी सामग्री के आश्रय हुई आकाशसे तृणपर्य्यन्त समस्त जगत्को रचती है, तहां सत्त्वगुणसे स्वर्गलोक अरु रजोगुणसे मनुष्यलोक अरु तमोगुणसे पातालादि असुरलोक रचती है, परन्तु चैतन्य ब्रह्मकी सत्ता पायके रचती है, कुछ साङ्ख्यमत के अनुसार जगत्की रचनामें स्वतन्त्र समर्त्थ नहीं, क्योंकि स्वरूप करके माया जड़है ताते, अरु माया विशिष्ट चैतन्य मायाके तीनों गुणों में पृथक् २ विशिष्टहुआ, ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र; इन संज्ञाको पाय जगत्का कर्त्ता पालयिता संहर्त्ता कहाजाताहै, अरु अपने स्वरूप में ज्योंकात्यों है, ताते हे भ्रातः ! हे लक्ष्मणजी ! यावत् इन्द्रिय मन आदिकोंका दृश्य श्रुत [अर्थात् परोक्ष अपरोक्ष] पञ्चविषयात्मक विषय है तिन सर्व्वको तुम ईश्वरी माया जानों । अरु अज्ञानकी जो अविद्यानाम्नी दूसरी शक्ति है तद्विशिष्ट चैतन्य को जीव कहते हैं सो अविद्याके आवरणमें आयके तिसके आश्रयहुआ अपने वास्तव स्वरूपको विस्मरणकर मायारचित ईश्वरी सृष्टिमें यह मैं यह मेरा यह मैं नहीं यह मेरा नहीं यह माता यह पिता यह भ्राता यह स्त्री यह पुत्र यह मित्र यह शत्रु यह पाप यह पुण्य यह स्वर्ग यह नरक यह सुख यह दुःख यह उत्तम यह अनुत्तम यह शुभ यह अशुभ यह धर्म यह अधर्म, इत्यादि अनेक कल्पना कर

तिनमें मोहित हुआ वारंवार संसाररूप अन्धकूपमें गिरके जन्म मरणादिरूप अनिवार्य दुःखको भोगताहै, सो कैसाहै, संसाररूप अन्धकूप कि जिस विषे शान्ति सुखरूप जलका दर्शन भी नहीं अरु उसकूपके सर्वओर काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, यह षट् बड़े बड़े विशाल अरु भयङ्कर पर्वत खड़े हैं, अरु अनेकजन्मों के शुभाशुभ कर्म्मों के सञ्चित् संस्काररूप अति गह्वर अरण्य करके उक्त कूप आवृत्त होरहा है, अरु उक्त कूपके एकओर रोगरूप राक्षस दुःखरूप मुखपसारे इसजीवको भय देरहा है, अरु एकओर जरारूपा राक्षसी अपना मुखपसारे इसजीव को भक्षण करनेको उपस्थित होरही है, अरु उक्त कूपके एकओर महाविषधर अतिविशाल कालासर्प्प दंश करने को फुङ्काररहाहै अरु एक ओर मृत्युरूप सिंह गरज रहाहै; अरु उक्त कूपके सर्व्वओर इस जीवकी आयुरूप सुन्दर वल्ली लगी है तिसके आश्रय इस जीव का जीवन है तिस वल्ली को रात्रि दिवसरूप दो चूहे निरन्तर कतरतेही रहते हैं; इसप्रकारके अन्धकूपमें पड़ाहुआ जीव अनिवार्य क्लेशको पावताही रहता है, तथापि मोहरूप मदिरा पान करके उन्मत्तहुआ अपने को दुःखी कहताहुआ भी दुःखी नहीं जानता सो यह केवल अविद्याके वश होनेका प्रभावहै 'ताते जब यह जीव संसारमें अपने को दुःखी जानके दुःख निवृत्तिके अर्थ श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ आचार्य्यकी शरणहोय अपने दुःखकी निवृत्ति के अर्थ प्रार्थना करताहै तब । "आचार्य्यवान् पुरुषोवेद" । इस श्रुति प्रमाण से जब आचार्य्य दयाकरके उसके वास्तव स्वरूप का बोध करावता है तब अपने आप शुद्ध चैतन्य स्वरूपको सम्यक् प्रकार अनुभव कर निश्चय करताहै तब उक्त कूपके दुःख से मुक्तहोताहै । हे लक्ष्मणजी ! ज्ञान उसको कहते हैं जो अध्यात्मविद्या करके अपने आप सत्यस्वरूपको ब्रह्मसे अभिन्न जानना है । "अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् । एतज्ज्ञानमिति प्रोक्त मज्ञानं यदतोन्यथा" । तिससे इतर सर्व अज्ञानहै । अथवा । " एतस्माद्वाएतस्मादात्मन आकाशः संभूतः आकाशाद्वायुः,

वायोरग्निः, अग्नेरापः, अद्भ्यःपृथिवी, पृथिव्याओषधयः,ओषधीभ्योऽन्नम्, अन्नाद्रेतः, रेतसः पुरुषः"। इत्यादि प्रमाणसे आकाश से शरीर पर्य्यन्त आत्मा ब्रह्मका अन्वय है ताते आकाश से तृण पर्य्यन्त यावत् स्थूल सूक्ष्म कार्य्य कारणात्मक जगत् है सो। "सर्व्वंखल्विदंब्रह्म"। सर्व्व ब्रह्मही है। "नान्यत्किञ्चित्"। तिससे इतर रञ्चकमात्रभी नहीं अरु। "जीवेनात्मनानुप्रविश्य"। "तत्सृष्ट्वातदेवानुप्राविशत्"। "सीमानंविदार्य्यतयाद्वाराप्रापद्यत"। "ममैवांशोजीवलोके जीवभूतःसनातनः"। "क्षेत्रज्ञंचापि मांविद्धि सर्वक्षेत्रेषुभारत"। "अहमात्मागुडाकेश सर्वभूताशय स्थितः"। इत्यादि प्रमाणसे यह जीवभी ब्रह्मका आभास होने से। "अयमात्माब्रह्म"। सोई रूपहै। "सबाह्याभ्यन्तरोह्यजः" बाहर भीतर नानारूपसे एक अज परमात्माही सुशोभितहै ताते जो नानारूप जगत् भासताहै सो उससे भिन्न नहीं, जैसे एक मृत्तिका बिषे घट सरावा हांडी कुल्हड़ादि पात्र अरु हाथी घोड़े आदि नामरूपवाले खेलबने भासते हैं अरु उन सर्वके नामरूप क्रिया पृथक् २ होते हैं परन्तु। "वाचारम्भणंविकारो नामधेयं मृत्तिकेत्येवसत्यम्"। सो सर्व्व कहने मात्रही हैं क्योंकि मृत्तिका से इतर उनकी पृथक् सत्ताका अभावहै अतएव उन बिषे केवल एक मृत्तिकाही सत्यहै, तैसेही सर्वाधिष्ठान चैतन्य परमात्मा से इतर इसनाना नामरूप क्रियावान् जगत्की पृथक् सत्ताके अभावसे घटादिकों में मृत्तिकावत् सर्वमें सर्वरूपसे सर्वत्र एक परमात्माही सुशोभितहै। इसप्रकार समस्त सचराचर कार्य्यकारणात्मक जगत् एक ब्रह्मरूपही जानना तिसकानाम परोक्षज्ञान वा आवान्तरज्ञान कहते हैं,। अरु। "एतदात्म्यमिदंसर्वंतत्सत्यंसआत्मातत्त्वमसि"। "तत्त्वमेवत्वमेवतत्"। "सर्व्वंहयतद्ब्रह्मायमात्माब्रह्म"। "एतद्वैतत्" इत्यादि श्रुतिके महावाक्य प्रमाण आचार्य्यके उपदेशसे अपने आपको अन्तःकरणादि उपाधि अरु तिनके धर्म्मसे पृथक् असङ्ग शुद्ध ब्रह्मरूप ज्योंका त्यों अनुभव करना तिसका नाम अपरोक्ष ज्ञानहै, सो परोक्ष अरु अपरोक्ष

दोनों ज्ञान यथार्थ होयँ जिस विचारसे तिसको ज्ञान कहते हैं। अरु। "ज्ञानादेवतुकैवल्यम्"। "ऋतेज्ञानान्नमुक्तिः"। "ज्ञानं लब्ध्वापरांशान्तिमचिरेणाधिगच्छति"। "ज्ञानंविमोक्षाय"। "नान्यःपन्थाअयनाय"। इत्यादि प्रमाणसे, ज्ञानही करके मोक्ष होताहै अन्य प्रकार नहीं यह अनुभव सिद्धहै। अरु। "तत्रको मोहःकःशोकएकत्वमनुपश्यतः"। "आत्मानंचेद्विजानीयादयमस्मीतिपुरुषः किमिच्छन्कस्यकामायशरीरमनुसंज्वरेत्"। "तरतिशोकमात्मविदिति"। इत्यादि प्रमाणसे ब्रह्म आत्माके सम्यक् अभेद ज्ञानसेही शोक मोह भय संशयकी अशेष निवृत्ति होतीहै॥ हे लक्ष्मणजी! अब वैराग्य को श्रवणकरो, इसनामरूप क्रियात्मक जगत् बिषे; जो परमात्माके बिषे रज्जुमें सर्पवत् केवल अध्यस्त मात्रही है; सम्यक् विचार पूर्वक दोष दृष्टि अरु ग्लानिका होना तिसका नाम वैराग्यहै, [अर्थात् जैसे देखनेमें सुन्दर विष बिषे प्राणान्तकारी दोष देख उसमें दोषदृष्टि पूर्व्वक उसको त्याग करते हैं, तैसेही ममतास्पदका विषय जे पञ्चविषयात्मक सर्व्व विषय तिनबिषे साधन परतन्त्रता अरु क्षीणता यह दो अनिवार्य्य दोष देख अरु तिनको बन्धनकारी जान। "ब्राह्मणोनिवद मायान्नास्त्यकृतःकृतेन"। इत्यादि प्रमाण से समस्त जगत् को कर्मका फल होनेसे। "पुण्यचितोलोकःक्षीयते कर्म्मचितोलोकः क्षीयते"। इत्यादि प्रमाण करके, नाशवान् जानके तिन सर्व्वसे अरु तिनके साधक कर्म्ममें दोषदृष्टि कर तिनको चित्तसे त्याग करना, अरु अहंतास्पदका विषय जे अस्थि मांस रुधिर रेत मज्जा मलमूत्र कफ लार इत्यादिकोंका सङ्घात् अति अपवित्र देहरूप वस्तु बिषे छरद (वमन) वत् ग्लानिकर तिस विषयक अरु मन प्राण इन्द्रियादिक आनात्म विषयक अहमत्वका अशेष त्याग करना, इसप्रकार उभयत्यागका नाम वैराग्यहै॥ अरु हे लक्ष्मण जी! तत्पदका वाच्य मायाविशिष्ट चैतन्य सर्व्व शक्तिमान् सर्वज्ञ है अरु जगत् को उत्पत्ति पालन संहार का करनेवाला स्वतन्त्र है, अरु सर्व्वसे उदासीन हुआ सर्व्वको अपने २ कर्म्मानुसार

सुख दुःख भोगावनेवाला है, अरु आप मायाके साथ मिला हुआ भी सर्व्वसे असङ्ग अपने आप स्वरूपमें सदा निर्विकार है। अरु त्वंपदका वाच्य अविद्याविशिष्ट चैतन्य अशक्तिमान् अल्पज्ञ है ताते न तो माया को; जो कि ईश्वर को उपाधि है; जानताहै नतद्विशिष्ट ईश्वर को जानताहै। अरु न अविद्याको कि जो अपने को उपाधिहै अरु जिसके वश हुआ आप अति तुच्छ भावकोप्राप्त हुआहै; जानताहै। अरु न अपने आपको जानता है अरु शरीर इन्द्रिय मन प्राणादिकों के साथ मिल तिनके धर्म्म अपने विषे मान अपने आपको कर्त्ता भोक्ता पापी पुण्यी स्वर्गी नरकी सुखी दुःखी ब्राह्मण क्षत्रिय बालक वृद्ध इत्यादि मानके अति दीनताको प्राप्तहुआहै, ताते को हमहैं सो मेरी मुझको खबर नहीं यह भावनावाला अज्ञानी जीवहै] अरु जब माया ईश्वर की उपाधि अविद्या जीवकी उपाधि यह दोनों दूरहुई तब माया विशिष्ट चैतन्य की अरु अविद्या विशिष्ट चैतन्य की अपने २ लक्ष्य एक शुद्ध चैतन्य ब्रह्म के साथ अभेदताहै; जैसे घट मठ दोनों उपाधि के अभाव हुये तद्विशिष्ट आकाश की महदाकाश के साथ अभेदता होतीहै तैसे; इस प्रकार सोपाधि जीव ईश्वरका भेदहै अरु उपाधि के अभाव से अभेद एकताहै ॥

३। हे सौम्य! उक्त प्रकार पंचवटी में सुशोभित जे प्रसन्न मूर्त्तिजगत्गुरू सम्यक् ज्ञान स्वरूप रामजी तिन्होंने अपने प्रिय भ्राता सेवक लक्ष्मणजीको उनके पांच प्रश्नों में से चारप्रश्नोंका उत्तर कहके अब पंचम प्रश्न भक्तिविषयक उत्तर कहते हैं। हे लक्ष्मण जी! धर्म्मसे वैराग्य अरु योगसे ज्ञान अरु ज्ञानसे मोक्ष होताहै यह वेदका सिद्धान्तहै अरु हे लक्ष्मणजी! जिस करके मैं शीघ्र प्रसन्न होताहौं सोई भक्त सुखदायी मेरी भक्ति जानों सो भक्ति अन्यके आलम्बन विना स्वतन्त्रहै अरु तिसही के आश्रय ज्ञान वैराग्य है] अर्थात् जब जिस विषयक अनुराग लक्षण भक्ति होतीहै तबही सो सिद्ध होताहै अतएव ज्ञान कहिये परोक्षज्ञान अरु विज्ञान कहिये अपरोक्ष ज्ञान सो उक्त लक्षणवान् भक्तिरूप

साधन से प्राप्त होताहै, अरु हे तात! मेरी जो अनन्य भक्तिहै सो अनुपम सुखका मूलहै, परन्तु तिसकी प्राप्ति तब होतीहै जब सन्त (भक्ति उपदेष्टा आचार्य) अनुकूल होताहै, ताते सिद्धान्त यह हुआ जो, धर्म्म, ज्ञान, योग, भक्ति, यह, तब प्राप्तहोते हैं जब आचार्य्य की कृपाहोतीहै। हे लक्ष्मणजी! जिस भक्तिरूप सुगम मार्ग से यह जीव मुझको सुखसे प्राप्त होते हैं तिसके साधन श्रवणकरो, हे लक्ष्मणजी! प्रथम तो इन ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र, चारोंही वर्णके मनुष्य को श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ ब्राह्मण जो यथार्थ सत्यधर्म के उपदेष्टा हैं तिनके चरणमें प्रीति होती है [अर्थात्। " यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ, तस्यैतेकथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्तेमहात्मनः "। इत्यादि वेद प्रमाण से उक्त आचार्य में शुद्ध भक्ति; जैसी कि ईश्वर में होनी चाहिये तैसी होतीहै तब उनके कहे धर्मबोधक परमार्थवाक्य अपने अर्थ को यथार्थ प्रकाशते हैं] तब उनके उपदेश से चारोंही वर्णों के मनुष्यों को अपने २ वेदोक्तधर्म में निरन्तर प्रीति होती है, तब निरन्तर निष्काम धर्म्मानुष्ठान करने से जब अन्तःकरण शुद्ध होताहै, तब तिस शुद्धहुये अन्तःकरणमें विवेक वैराग्यादि; जो धर्म्मानुष्ठानरूप साधनकी अपेक्षा अन्तरङ्ग साधनहैं सो; उपजते हैं, तदनन्तर मेरा श्रवण मनन ध्यानादि रूप जो परमधर्म्म है तिसविषे अनुराग उपजता है, अरु जब मेरे श्रवण मनन ध्यानादि रूप धर्म्म; जो विवेक वैराग्यादिरूप साधन की अपेक्षा अन्तरङ्ग साधनहै; तिसविषे अनुराग उपजताहै तब तिसके प्रभावसे। "श्रवणंकीर्त्तनंविष्णोः स्मरणं पादसेवनम् । अर्चनंवन्दनंदास्यं सख्य मात्मनिवेदनम् "। इत्यादि प्रमाणसे मेरी श्रवणादि नवधाभक्ति उपजती है, [अर्थात् एक पुरुषके विषे अपने श्रवणादि नवोंअङ्गों सहित जो एक अनन्यभक्तिका होनाहै, सो उत्तमभक्ति है अरु जो भक्तिके एक एक अङ्गयुत भक्तिहै सो मध्यमभक्तिहै] तब तिसके प्रभावसे मेरी लीलाके सूक्ष्म आशय विषयक मनमें अतिप्रीति प्रकट होती है, अरु सन्त जे मेरे अनन्यभक्तहैं तिनके चरणमें प्रेम

होताहै, अरु काया वाचा मनसा तीनों प्रकारसे मेरी सेवा का नेम होताहै, तव। " विसृज्यस्मयमानान्स्वान् दृशंव्रीडाञ्चदैहिकीम्। प्रणमेद्दण्डवद्भूमावाश्वचाण्डालगोखरान् "। भागवतेएकादशस्कन्धे, इत्यादि प्रमाणसे गुरु माता पिता बन्धु पति अरु पशु पक्षी आदि सर्वको मेराही स्वरूप जानके उनकी सेवाकरे [अर्थात्। "मातृदेवोभव,पितृदेवोभव,आचार्य्यदेवोभव"।इत्यादि प्रमाणसे गुरु माता पिता इनबिषे मेरी भावनाकर उनकी चरण सेवाकरे तिस विना मेरी चरण सेवारूप भक्ति बने नहीं अरु उनकी अन्न वस्त्रादिकोंसे यथाशक्ति खबर लेतारहै, अरु इनसे कटुवाक्य कदापि कहे नहीं, उनकी आज्ञानुसार कार्य्य करता रहै। अरु बन्धु भार्य्या पति आदिकों बिषे मेरी भावनाकर उनका भी मधुर भाषणादिकोंसे सत्कार करतारहै, अरु उनके कहे कटुवाक्यादिकोंसे क्षोभवान् होय नहीं, अरु अपनी ओरसे उनको क्लेशदे नहीं। अरु पशु पक्षी आदिकों की यथा शक्ति जल तृणादिकोंसे खबर लेतारहे, अरु उनके ऊपर दया करतारहै, ताड़नादि करे नहीं। अरु ईश्वरसे प्रार्थना करतारहे कि हे सर्वान्तर्यामी! हे सर्व्वके प्रेरक! परमात्मा तू इन सर्वको शुभमार्ग में प्रेरणा करतसन्ते इन सर्वका कल्याण करतारहो हे सौम्य! हे प्रियदर्शन! हे भ्राता लक्ष्मणजी! इसप्रकार सर्वमें मेरी भावनाकर सर्वकी उक्तप्रकार सेवाकरताहै सोई मेरा अनन्य भक्तहै, अरु प्रायः सर्व कोई ज्ञानमार्ग को खांड़ेकी धार कहते हैं, अरु। "क्षुरस्यधारानिशितादुरत्ययादुर्गम्पथस्तत्कवयोवदन्ति "। इत्यादि प्रमाणसे वेदने भी ज्ञानमार्ग को क्षुरेकी धारवत् कहा है, परन्तु उक्त प्रकारका अनन्य भक्तिमार्ग उक्त ज्ञान मार्गसे भी अति कठिनहै क्योंकि सर्वप्रकारके अहंकार की अशेष निवृत्ति विना श्वान शूकर खरादिकों बिषे ब्रह्मभावना पूर्वक उनको दण्डवत् प्रणामादिका करना बने नहीं। अरु जहां मेरी कथा होती है तहां जायके मेरे चरित्रोंको श्रद्धापूर्वक श्रवण करताहै, अरु मेरे सगुण रूपकी स्मारक जे मेरी प्रतिमा तिनके मन्दिरमें

जाय उनबिषे मेरी भावनाकर उनके दर्शन करताहै, अरु उनके आगे मेरे गुणानुवाद गावता नृत्य करता शरीरमें रोमांचहो आवताहै नेत्रसे प्रेमाश्रुका प्रवाह चलताहै वाणी गद्गद होनेसे स्पष्ट बोलाजाता नहीं, अरु जहां जहां मेरे तीर्थ हैं तहां तहां श्रद्धायुक्त यात्राकरताहै, इत्यादि प्रकार मेरी कायिकसेवा करता है अरु वाणीसे मद्विषयक स्तोत्रादिकोंका पाठ मेरे नामोंका स्मरण मेरे कीर्त्तनोंका गानकरताहै अरु अन्य विशेषभाषणका त्याग करताहै, यह मेरी वाचिकसेवा है। अरु अपने अन्तःकरणमें मेरी सगुण मूर्त्तिका ध्यानकर अपने मनको तदाकार निश्चलकर ध्यान समाधि को प्राप्त होताहै सो मेरी मानसिकसेवा है। इस प्रकार मेरी कायिक वाचिक मानसिक तीनोंप्रकार की सेवाकरताहै। अरु प्रारब्धवशात् जब दुःख आवताहै तब उद्वेगवान् नहीं होता, अरु जो सुख आवताहै तो हर्षवान् नहीं होता, यथा प्राप्तविषे सन्तुष्ट रहताहै, अरु न किसीसे राग करताहै न किसीसे द्वेष करताहै न किसीकी निन्दा करताहै न किसीकी स्तुति करताहै न किसी को शुभ जानता है न अशुभ जानताहै, अरु कामादि विषय वासना का अपने बिषे निःशेष अभाव कियाहै, अरु निष्काम हुआ व्यवधानसे रहित मेरा स्मरण भजन ध्यानादि करताहै, हे लक्ष्मणजी! ऐसा जो मेरा अनन्य भक्तहै तिसके वश मैं निरन्तर होताहौं। हे लक्ष्मणजी! उक्तप्रकार कायिक वाचिक मानसिक तीनोंप्रकार एक मुझको अनन्य आश्रयकर निष्कामहुआ मेरा श्रवण मनन ध्यान भजनकरताहै तिसके हृदय कमलके मध्यमें विशेषरूपसे निरन्तर विश्राम करताहौं] अर्थात ज्ञानवान्के हृदय बिषे तो मैं सामान्य चैतन्य निर्गुणरूपसे वास करताहौं अरु भक्तके हृदयमें अपने सामान्य निर्गुणरूपसे भी अरु ध्यानवृत्तिद्वारा अपने विशेष सगुणरूपसे भी उभय प्रकार निरन्तर वास करताहौं॥

इति रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डे लक्ष्मणंप्रति रामकृतोपदेशवर्णनन्नामसप्तमंप्रकरणंसमाप्तम्॥

अथ रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डेशूर्पणखानासिकाच्छेदनवर्णनन्नामाष्टमंप्रकरणंप्रारभ्यते ॥

१ ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हे सौम्य ! उक्त प्रकार पञ्चवटी में सुशोभित जे भगवान् रामजी तिन्होंने अपने प्रियभ्राता लक्ष्मणजीके पांचों प्रश्नोंका उत्तर उपदेश किया, तब अनन्यभक्तियोग को श्रवणकर अपने चित्तसे अतिप्रसन्नहोय जगद्गुरु परमाचार्य्य भगवान् रामजीके चरणोंमें प्रणाम करतेहुये, इसप्रकार ज्ञान वैराग्य नीति भक्तिको वर्णन करते कुछ दिवस व्यतीतहुये, तदनन्तर रावणकी शूर्पणखानाम्नी भगिनी हृदयसे सर्पणीवत् दुष्टस्वभाववाली सो एकसमय पञ्चवटीमें आवतीहुई । अरु अतिसुकुमार शोभासागर भगवान् राम लक्ष्मण दोनों राजकुमारोंको देख आप कामवश अतिव्याकुल होतीहुई, हे उरगारि ! जो अपने भ्राता पिता पुत्र अरु अन्य पुरुष जो कदापि सुन्दर मनोहरहोय तौ तिन को भी देखके अन्तरसे जे व्यभिचारिणी स्त्री हैं सो कामवश आतुर होय अपने मनको रोंकसकती नहीं [जैसे सूर्य्यकान्तमणि सूर्य्य को देख द्रवीभूत होती है तैसे] अरु सो शूर्पणखा राक्षसी अपने विषे अतिरुचिररूप धारणकर रामचन्द्रके समीप आय हँसती हुई यह वचन बोली कि हे राम ! तुम्हारेसमान अन्य पुरुष नहीं अरु मुझसमान अन्य स्त्री नहीं अतएव मेरा तुम्हारा संयोग विधि ने पूर्वसेही विचारके रचाहै, अरु मैंने अपने अनुरूप पुरुष जगत्में अन्वेषण करके देखा परन्तु त्रैलोक्यमेंभी कोई मिलानहीं एतदर्थ अद्यावधि मैं विना विवाही (कुमारी) हौं, अब तुमको देखके मेरा मन बरने को हुआ है, इसप्रकार जब शूर्पणखाने रामजी से कहा तब तिसको श्रवणकर रामजी सीताकी ओर देख बोले कि वह मेरा लघुभ्राता कुंवारा (विना विवाहका) है [अर्थात् सीताकी ओर देखके रामजी जो शूर्पणखासे बोले तिस करके यह देखाया कि मेरे पास तो यह स्त्री है परन्तु वो मेरा लघुभ्राता विना स्त्रीका है] तब वो परमसुन्दररूपको धारण किये जो शूर्पणखा सो लक्ष्मण

जीके समीप; जो कि रामजीसे कुछ दूर स्थितथे; गई तब लक्ष्मणजी अपने रिपु रावणकी भगिनी समझ रामजीकी ओर देख मधुरवाणीसे बोले कि हे सुन्दरि ! मैं उन रामजीका दासहूं एतदर्थ मुझको पराधीन होनेसे मेरे पास तेरा निर्वाह नहीं, अरु यह मेरेस्वामी भगवान् रामजी कोशलदेशके राजा सर्व्वमें समर्थ हैं अतएव जो यह तुझको अंगीकारकरें तो कुछ चिन्ता नहीं, हे सुन्दरि ! सेवक सुखकी इच्छाकरे, अरु भिखारी अपने मानको इच्छे अरु व्यसनीपुरुष धनसंचयकी इच्छाकरे, अरु व्यभिचारी (परस्त्रीलम्पट) सुगतिकी इच्छाकरे, अरु कृपण (लोभी) अपने यशकी इच्छाकरे, सो इत्यादि सर्व्वकी इच्छा कैसी है कि; जैसे आकाशका दोहनकरके दुग्धपानकी इच्छाहोय तैसी है; इसप्रकार जब लक्ष्मणजीने उस सुन्दररूपवाली शूर्पणखासे कहा तब वो पुनः रामजीके निकट आवतीहुई, तब पुनः भी रामजीने लक्ष्मण के पासही भेजा तब पुनः वो लक्ष्मणजीके पासगई तब लक्ष्मण जीने कहा कि हे सुन्दरि ! तुझ ऐसी कामातुर को सो बरेगा जो संसारमें सर्वप्रकारकी लज्जाका परित्याग करेगा, तब वो लक्ष्मण जीके वाक्य श्रवणकर खिसियाय पुनः रामजीके पास आवतीहुई अरु उनको भय उपजावनेके अर्थ अपने वास्तविक भयंकररूप को प्रकट करतीहुई, तब उसके भयकारी रूपसे सीता को सभीत देख रामजीने लक्ष्मणजी से इसारे के साथ । "नसुखंनपराङ्गतिम् " । कहतेहुये की यह सुख अरु पराङ्गतिके योग्य नहीं तब लक्ष्मणजीने अतिलाघवतासे उस शूर्पणखाके नाक कान छेदनकर उसके हाथमें धरदिया मानों उसके हाथसे रावण को चिनोती (तलाक दियाहोय) [अर्थात् उक्त प्रकार शरीररूपा पञ्चवटी में सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी के निमित्त से क्षेत्रज्ञरूप राजा दशरथ; जो पूर्व्वोक्त प्रकार देह त्यागके रामजी में प्रवेश पाके पूर्व्वाध्यासवश ज्ञान विचार करत सन्ते उसकी परोक्ष ब्रह्मानुभूत प्रज्ञा को; जो कि उक्त चित्रकूटमें विषयानुरागरूप काकसे धर्षणाको पाई है] भय उपजावने के अर्थ पूर्व्वके सकाम क्रियाके

सञ्चित संस्काररूप अरण्यमें से देहात्मभावना वृत्तिरूपा शूर्प्पणखा; अर्थात् शूपके आकार नख हैं जिसके सो शूर्पणखा अरु नख उपलक्षण करके लक्षित जे शरीर तद्विषयक आत्मभावना कि यह शरीरही आत्मा है, ऐसी जो वृत्ति सो कहिये शूर्पणखा सो प्रकट होय सम्मुख आय प्राप्त हुई सो कैसी है मनोहर है [अर्थात् सर्वकाल शरीर का पालन पोषण शृङ्गारादि करके अज्ञानी के मनको मोह उपजावनेवाली अतिसुन्दर है] सो पूर्व्व की सकाम क्रियाके संस्कार जनित होनेसे कामके वश हुई प्रथम उक्त दशरथ के पूर्व्व के ज्ञान संस्काररूप रामजी के सम्मुख आय हास्यपूर्वक कहती हुई कि आपके समान अन्य पुरुष नहीं अरु मेरे समान अन्य स्त्री नहीं [अर्थात् परावधि परमपुरुष आप तिसके समान अन्य पुरुष नहीं, अरु प्रकृतिके कार्य्य में अपरावधि मुझ स्त्री के समान अन्य कोई स्त्री नहीं] अतएव हमारा तुम्हारा परा अपरा अवधि में सृष्टिक्रम की विधि (नीति) ने संयोगश्रेष्ठ रचाहै, अरु मैंने अपरावधि रूपके अनुरूप परावधि रूप रूपवान् पुरुष आपसे इतर त्रैलोक्यमें भी अन्य देखा नहीं अतएव अद्यावधि मैंने अपना पति कोई भी किया नहीं; अब आपको अपने अनुरूप देख वरने की इच्छा करती हौं। इसप्रकार जब उक्त पञ्चवटी में उक्त शूर्प्पणखा ने प्रकट होय उक्त रामजी से कहा तब तिसको श्रवण कर उक्त रामजी ने अपनी प्रिया ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञावृत्तिरूपा सीता की ओर देख उक्त शूर्पणखा से कहा कि हे सुन्दरि! मेरे अनुरूप यह स्त्री मुझको प्राप्तहै परन्तु यह वैराग्यरूप लक्ष्मण मेरा कनिष्ठ भ्राता सर्व्व काम कर्म्मादिरूप मलको त्यागके अविशुद्ध अरु स्वच्छ गौरवर्ण चन्द्रमाको भी तिरस्कार करनेवाला परमसुन्दरहै अरु यह अपने पास कोई भी वृत्ति रखता नहीं ताते कुंवाराहै, अतएव तू इसके पास जा, तब वो उक्त शूर्प्पणखा उक्त लक्ष्मणजी के पास गई तब विवेक सम्पन्न उक्त लक्ष्मणजी उसका अहंलक्षणात्मक मूला ज्ञानरूप रावणकी भगिनी जानके उक्त रामजी की ओर देख

मधुरवाणी से कहते हुये कि हे सुन्दरि! मैंतो इन ज्ञानस्वरूप रामजी के सेवक होने से पराधीनहौं [अर्थात् इन सर्व्वोत्तम पुरुषके अधीन हौं] अतएव मेरे पास तेरे रहने का अवकाश नहीं, अरु यह रामजी। "सर्वेषांराजा"। शरीररूपा अवधपुरी के राजाहैं अरु करने न करने अन्यथा करने में समर्थ हैं [अर्थात् ज्ञानवान् पुरुष व्यवहारसत्तामें चाहे तैसे आचरणसे बर्त्ते उसको। "न लिप्यतेकर्म्मणा पापकेनेति"। इत्यादि प्रमाणसे किसी से भी लेप होता नहीं, ताते तू उनके पास जावो तुझको अपनी रानीभावमें अङ्गीकार करें तो करें इसप्रकार जब उक्त लक्ष्मणजी ने कहा तब वो उक्त शूर्पणखा पुनः उक्त रामजी के पास आवती हुई तब उसको उक्त रामजी ने यह कहके कि वो तुझको अभी अङ्गीकार नहीं करता जब तू दो तीनबार उसके पास जायगी तब वो तुझको अङ्गीकार करेगा अतएव तू उनहीं के पास जा, तब वो उक्त शूर्पणखा पुनः उक्त लक्ष्मणजी के पास आवती हुई तब पुनः उक्त लक्ष्मणजी ने कहा कि हे सुन्दरि! तुझ देहात्मभावनावृत्ति; जो अज्ञानियोंको मोह उपजावनेवाली अरु अविवेक चक्षुसे सुन्दर भासनेवाली; को सो अङ्गीकार करेगा जो उक्त प्रकारकी तुझको आत्मभावसे अङ्गीकार करने में लज्जाको न प्राप्त होगा, अतएव तुझको अज्ञानरूप पुरुषही अङ्गीकार करने योग्यहै हम नहीं, इसप्रकार जब उक्त लक्ष्मणजी ने उक्त शूर्प्पणखासे कहा तब तिसको श्रवणकर वो खिसियानी हो ज्ञानस्वरूप रामजी के निकट आवतीहुई, अरु आवतेही ज्ञानके प्रभावसे अपनी कृत्रिम सुन्दरताको त्याग अपने वास्तविक भयंकर स्वरूप को प्रकट करती हुई [अर्थात् अज्ञानियोंको अतिसुन्दर अरु मनोहर भासनेवाली जो देहात्मभावनावृत्ति सो ज्ञानवान्पुरुष को अज्ञानकर्म्मी जीवोंके अर्थ। "क्रियाशरीरोद्भवहेतुराहता"। अरु। "देहाभिमानादपिवर्त्तते क्रिया"। इन वाक्यों की एकता करने से जन्म मरणरूप भयकी देनेवाली भासती है,] तब तिसको देख ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञावृत्तिरूपा सीता सो सभीतहोय उसके

दर्शनसे अपने नेत्रोंको मूँदतीहुई, तब उक्त रामजी ने उक्त सीता को भययुक्त देख उक्त लक्ष्मणजी से इस इसारे से कहा कि हे लक्ष्मण! इसको स्वर्गप्राप्तिका अरु सत्शास्त्रके श्रवणका अधिकार नहीं तब असाधारण वैराग्यरूप लक्ष्मणजी ने अतिलाघवतासे अपने दोष दर्शनरूप खड्गकरके उसके नाक कान छेदनकर उस हीके हाथपर धरदिये [अर्थात् विना असाधारण वैराग्यके; अज्ञानियोंको सुन्दर अरु मनोहर भासनेवाली; देहात्मभावना वृत्तिरूपा शूर्पणखा सो अपनी वास्तविक कुरूपताको पावती नहीं] अरु उसकी कृत्रिम सुन्दरताका अभाव होता नहीं, यह लखावनेके अर्थ, अरु उस देहात्मवृत्तिरूपा शूर्पणखाकी कुरूपता उस की दृष्टिमें आवने के अर्थ, अरु तूलाज्ञानरूप खरदूषण, अरु मूलाज्ञानरूप रावण कि जिनकी हिमायतमें उक्त शूर्पणखा निःशंक विचरती है; तिनको देखावने के अर्थ कि सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी के समीप जानेके कारण वैराग्यद्वारा मेरी यह दशाहुई है; अरु उक्त खर दूषण अरु रावणके चित्तमें उनकेही विनाशार्थ उक्त रामजी से विरोध उपजावने के अर्थ; क्योंकि जहां विरोध उपजावती है तहां देहात्मवृत्तिही उपजावती है; उक्त लक्ष्मणजी ने उक्त शूर्पणखाके उक्त नाक कान उसके हाथमें धरदिये ' अरु संसारमें सत्पुरुषों के अर्थ यह सूचित किया कि देहात्मभावना वृत्तिवाले पुरुषको नाक कहिये स्वर्ग तिसकी प्राप्ति, अरु श्रोत्र कहिये सत्शास्त्र अध्यात्मविद्याका श्रवण, इन दोनोंका अधिकार नहीं अतएव तिनकी प्राप्तिभी नहीं' ताते उनको वारंवार जन्म मरण लक्षणरूप नीचगतिकी ही प्राप्तहोती है ॥ हे सौम्य ! इस प्रसंग करके समुच्चय सेवन करनेवाले उक्त राजा दशरथके पूर्वजन्म के सकाम कर्म्म के संस्कार के प्रभाव से उसकी पूर्व्व परोक्ष ब्रह्मानुभूत प्रज्ञा को भय उपजावने के अर्थ देहात्मभावना वृत्तिरूपा शूर्पणखा सम्मुख प्रकट हुई अरु उक्त राजा दशरथ के पूर्व्व के ज्ञान वैराग्य के संस्कार से उसका तिरस्कार हुआ, अरु अब आगे पूर्वके सकाम कर्मके संस्कार बलवान् होने से उसकी उक्त प्रज्ञा का उक्त रावणद्वारा हरण कहा जायगा ॥

इति रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डेशूर्पणखानासिकाच्छेदनवर्णनन्नामाष्टमंप्रकरणंसमाप्तम् ॥

अथ रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डेखरदूषणवधवर्णनन्नामनवमंप्रकरणंप्रारभ्यते ॥

१ ॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हे सौम्य ! उक्तप्रकार सम्यक् विशेषज्ञान रूप रामजीने उक्त पञ्चवटीमें अपने समीप आय प्राप्तहुई जे देहात्मभावना वृत्तिरूपा शूर्पणखा तिसके नाक कान अपने भ्राता असाधारण वैराग्यरूप लक्ष्मणजीको इसाराकर उनके द्वारा छेदन कराया ॥ हे सौम्य ! यहां पुनः उक्त रामजीके प्राकृतवत् चरित्रों का विचारकर समझना चाहिये जो रामजीने शूर्पणखाके नाक कान छेदन करनेके अर्थ उसहीके समक्ष लक्ष्मणजी को समस्या (इसारे) से कहा, परन्तु तहां महामूर्ख स्थूलबुद्धि कामातुर जो शूर्पणखा सो रामजीके किये इसारेके लक्ष्य को न समझी, अरु उसही इसारे को परमविवेकी सूक्ष्मबुद्धि निष्काम लक्ष्मणजी ने समझ शीघ्रही शूर्पणखाका नाक कान छेदन किया तात्पर्य्य यह है कि राम कृष्णादि अवतारी पुरुषों करके किये जो जो प्राकृत पुरुषोंके चरित्रोंवत् चरित्र सो सर्व्व जगत् हितार्थ समस्यारूपही हैं परन्तु जे अविवेकी मूर्ख अध्यात्मविद्याके न जाननेवाले कामनाके वश बाह्य प्रसरितस्थूलबुद्धि कुतार्किक पुरुष हैं सो उन अवतारीपुरुषों के चरित्रोंके सूक्ष्म अन्तर लक्ष्य जो उपदेशात्मक हैं तिनको न जानके परमपूज्य अवतारीपुरुषोंकी अनेक प्रकार निंदा करते हैं अरु जे लक्ष्मणजीवत् अध्यात्मविद्याके जाननेवाले परम विवेकी निष्काम अन्तर्मुख बुद्धिवाले पुरुषहैं सो। "दृश्यतेत्वग्रया बुद्ध्या सूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शिभिः"। इत्यादि प्रमाणसे अवतारी पुरुषों करके किये प्राकृत चरित्रोंवत् चरित्र तिनके सूक्ष्म लक्ष्यको जानते मानते हैं हे सौम्य ! उक्त प्रकार लक्ष्मणजीने जब शूर्पणखा के नाक कान छेदन किये तब वो अतिविकराल (भयंकर) स्व-

रूप होतीहुई, अरु उसके कान नाक कटनेसे रुधिरका ऐसा प्रवाह चला कि मानों गेरूके पर्वतसे रक्तवर्ण नदीका प्रवाह चलताहोय, अरु अपने नाक कान छेदन होनेसे अतिदुःखितहोय रोती पीटती अपने भ्राता खर दूषणके समीप जाय विलाप करतसन्ते उच्चस्वर से कहतीहुई कि हे भ्रातः ! हे मदोन्मत्त ! तेरे बल पुरुषार्थ को धिक्कारहै २ तब उससे खर दूषणने पूछा कि तू अपनी इसदशाके होनेका सर्ववृत्तान्त मुझसे कह, तब उसने अपने पञ्चवटीमें गमन से ले नासिका छेदन होनेपर्यंतके सर्वसमाचार कह सुनाये, तब उसके सुनतेही खर दूषणने अपनी सेना तय्यारकिया [अर्थात् जब शरीररूपा पञ्चवटीमें सम्यक् ज्ञानस्वरूप रामजीके। "नसुखंनपराङ्गतिम् "। इत्यादि इसारेसे असाधारण वैराग्यरूप लक्ष्मणजी ने देहात्मभावना वृत्तिरूपा शूर्पणखा का नाक कान छेदन किया तब वो अति दुःखित होय रोती पीटती अपने भ्राता अरु हिमायती मम लक्षणात्मक तूलाज्ञानरूप खर, अरु दोषस्वभाव लक्षण रूप दूषण, अरु स्थूल सूक्ष्म कारण इन तीनों शरीरकी साम्यता का अभिमान लक्षण कि यह मेंहूं रूप त्रिशिरा, तिनके पास जातीहुई अर्थात् मूलाविद्यारूप माता से प्रकटहुई जो देहात्मभावनावृत्तिरूपा शूर्पणखा तिसके भ्राता ममलक्षणात्मक तूलाज्ञानरूप खर, अरु जैसे खर अपने शब्दसे आपही भयवान् अपने कान को दबाय लातफेंकता दौड़ता है, तैसेही अपने संकल्प स्वभावसे भयमाननेवाला जो स्वभाव सोई दूषण, अरु शिर उपलक्षण करके स्थूल सूक्ष्म कारण इन अनात्मरूप शरीर तीनोंकी साम्यताका अभिमानरूप त्रिशिरा, यह तीनों उक्त शूर्पणखाकी उक्त दशादेख अतिक्रुद्ध होतेहुये, अरु ज्ञान समाधि में विक्षेपकारी जे अन्तराय, तहां । " व्याधिस्त्यानसंशयप्रमादालस्याविरतिभ्रान्तिदर्शनालब्धभूमिकत्वानि चित्तविक्षेपास्तेऽन्तरायाः"। " दुःखदौर्मनस्याङ्गमेजयत्वश्वासप्रश्वासाविक्षेपसहभुवः " । इव पातञ्जलशास्त्रके दो सूत्रप्रमाण व्याधि, (देहमेंरोग) स्त्यान, (शुभकर्ममें चित्तका न लगना) संशय, (ईश्वर है या नहीं अरु

है तो ज्ञानयोगसे प्राप्यहै या नहीं) प्रमाद, (समाधिके साधनमें उदासीनता) आलस्य, (देह अरु चित्तका गुरुत्वभाव) अविरति, (भोगोंकी इच्छा) भ्रान्तिदर्शन, (अन्यवस्तुमें अन्यवस्तुका भासना) अलब्ध भूमिकत्व, (ज्ञानकी भूमिका न प्राप्तहोनी) अनवस्थितत्व, (प्राप्तहुई भूमिकामें चित्तका न लगना) दुःख, (अध्यात्मिकादि दुःख) दौर्म्मनस्य, (चित्तको असमाधानता) अङ्गमें जयत्व, (शरीरका कांपना) श्वास, (प्राणका बाहरजाना) प्रश्वास, (प्राणका अन्तर आवना) यह चतुर्दश अन्तराय विघ्न हैं, तहां व्याधिसे अनवस्थितत्वपर्य्यन्त नव ९ ते अन्तराय हैं, अरु दुःख से प्रश्वासपर्य्यन्त पांच उन अन्तरायसे होते हैं, सो नव अरु पांच मिलके जे चतुर्दश अन्तराय विघ्नहैं सो उक्त खर दूषणके सेनापति हैं, अरु तिन प्रत्येकके जे अनेक २ भेद सो उनकी चतुर्दश सहस्र सेनाहै, तिन सर्व्व को अग्रसरकर उक्त खरआदिक तीनों भ्राता युद्धार्थ उक्त रामजी के सम्मुख आवतेहुये] तब वो निशिचर अपने स्वामी खरकी आज्ञापाय अपने २ आयुध धारणकर अपने २ बाहनारूढ़ होय मरणके अपशकुन उक्त नकटी शूर्पणखा को अग्रसरकर; जैसे सपक्ष पर्व्वत चले तैसे; अतिवेगसे चलतेहुये । अरु नानाप्रकार गर्जनाकरते कूदते उछलते अपने कटक को देख खरादि प्रसन्न होतेहुये, अरु तिनके मध्य कोई तो कहता है कि जिन्होंने अपने को विनाजाने शूर्पणखाकी यह दशा कियाहै तिन दोनों भ्राताओं को जीवतेही पकड़लो पश्चात् उनको मारके उनकी स्त्रीको लेल्यो, अरु कोई कहता हुआ कि उन्होंने जो दशा शूर्पणखाकी किया है सोई उनकी करके उनकी स्त्री अपने स्वामी की सेवामें प्राप्तकरो, इसप्रकार परस्परमें कहते कूदते उछलते आवते जे निशिचरयूथ तिनकी रजको आकाश में उड़ती देख कोलाहल श्रवणकर रामजीने लक्ष्मणजीसे कहा कि हे भ्राता ! अब तुम सीताको साथले गिरिकन्दरामें जावो क्योंकि शूर्पणखा के सहायक निशिचर कटक आवताहै तिनहींका यह कोलाहल श्रवण आवताहै, अरु गिरिकन्दरामें भी तुम सावधान रहना तब

रामजी का वाक्य श्रवणकर सावधानहोय धनुर्बाण धारणकर सीताको साथले गिरिकन्दरा को पगधारतेहुये, अरु रामजी रिपु की सेना अपने सम्मुख आवती देख आप हँसके अपने धनुष् को चढ़ाय बाणलेतेहुये, अरु अपनी जटाको मस्तकपर बांध कटिमें तूणीर कस खड्ग धारणकर ऊंचेस्थलपर चढ़; जैसे मृगराज गजयूथको तैसे, रिपुदलको देखतेहुये, । इतनेहीमें असुरदल निकट आय प्राप्तहुआ अरु रामजीको देख धरो मारो धरो मारो कहते सर्वओरसे घेरतेहुये, जैसे प्रातःकाल उदयहोते सूर्यको दैत्य घेरते हैं तैसे, ॥ [अर्थात् जब देहात्मभावना वृत्तिरूपा शूर्पणखाके प्रेरे ममलक्षणात्मक तूलाज्ञानरूप खरादि तीनों भ्राता उक्त चतुर्दश अन्तरायरूप सेनापति अरु तिनके अनेक २ भेदरूपा चतुर्दश सहस्र सेना साथले सम्यक् विशेषज्ञानरूप रामजी को अरु वैराग्य रूप लक्ष्मणजीको पराजयकर ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञावृत्तिरूपा सीता के हरणार्थ आवतेहुये, तब उनको अपने सम्मुख आवते देख उक्त रामजीने अपने भ्राता उक्तलक्ष्मणजीसे । "तत् प्रतिषेधार्थमेकतत्त्वाभ्यासः "। इससूत्र प्रमाण उक्त असुरोंसे अपनी उक्त सीता की रक्षार्थ कहतेहुये कि हे भ्रातः ! उस देहात्मभावना वृत्तिरूपा शूर्पणखाके, कि जिसके उक्तनाक कान तुम्हारे द्वारा छेदनहुयेहैं सहायक उक्त खरादिक उक्त सेना साथले युद्धार्थ आवतेहैं, अतएव तुम उक्त सीताको अपने साथले एकान्तरूप गिरिगुहामें पधारो अरु वहां भी उक्त असुरोंसे सावधान रहना इसप्रकार जब उक्तरामजीने उक्तलक्ष्मणजीसे कहा तब तिसको श्रवणकर उक्त लक्ष्मणजी उक्त सीताको साथले जहां एक, इस प्रथम संख्याका भी अन्तहै तिस निर्विकल्प समाधिरूपा गिरिगुहामें ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञावृत्तिरूपा सीताको स्थापितकर आप त्रिमातृक प्रणवरूप धनुष् अरु निषेध मुखवाक्यरूप बाणको धारणकिये उक्त गुहाके सविकल्प समाधिरूप द्वारपर स्थितहुये, अरु इधर सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजीने भी त्रिमातृक प्रणवरूप धनुष् धारणकर श्रुति के वाक्यरूप बाणों से पूर्ण अध्यात्मविद्यारूप तरकस अपनी कटिपर बांध अनुभव ज्ञानरूप खड्गले शुद्ध सत्त्वगुणात्मक ऊंचे स्थलपर चढ़ (आरूढ़होय) जैसे सिंह गजयूथको तैसे; उक्त असुरोंकी सेनाको अवलोकन करतेहुये; तब तिसही अवसरमें उक्त निशिचरसेना उक्त रामजीके निकट आय सर्वओरसे घेरतेहुये] ॥

२ हे सौम्य ! उक्तप्रकार जब रामजी सावधानहोय धनुर्बाण धारणकर ऊंचेस्थलपर चढ़ असुरसेनाको अवलोकन करतेहुये अरु असुरोंने समीप आय उक्त रामजीको घेरलिया अरु प्रहार करनेको उद्यतहुये, परन्तु रामजीका अनुपम स्वरूप अवलोकन कर शस्त्रोंका प्रहार करनेसे थकित होय अवलोकन करतेहुये, अरु खर दूषणने अपने मन्त्रीसेकहा कि यह जो शूर्पणखाका अपकार कर्त्ताहै सो नरभूषण किसी राजाका कुमारहै, अरु देव गंधर्व नाग किन्नर राक्षस मनुष्य मुनिआदिक यावत्हैं तिन सर्वको हमने देखेहैं अरु संग्राममें उनको जयकियाहै, परन्तु हमने अपने जन्म भरमें भी इसकीसी सुन्दरता देखीनहीं, अरु यद्यपि इसने हमारी भगिनीको कुरूपकरनेसे अपने वधयोग्य कर्म्मकियाहै तथापि यह अलौकिक सुन्दरहोनेसे वधके योग्यनहीं, अतएव हे मंत्री! तू उस के पास जायके कहो कि जो तुम अपना जीवन इच्छो तो शीघ्र अपनी स्त्री हमको अर्पणकर तुम दोनों भ्राता अपने भवनको पधारो, अरु वो जो कुछ तुझसे कहे सो तू मुझसे आय कहो, तब खर दूषणके मंत्रीने राम समीपजाय खरकी युक्ति सर्व श्रवणकराया तब तिसको श्रवणकर हँसतेहुये श्रीरामजी बोले कि हे दूत ! हम क्षत्रिय हैं अरु यहां इसवनमें मृगयाके अर्थ आये हैं अरु तुम सारिखे दुष्ट मृगको अन्वेषणकरते फिरते हैं, अरु जो कदापि हम को बलवान् रिपुभी आय प्राप्तहोय तो भी हम भयकरते नहीं, अरु जो हमसे युद्ध करने की इच्छा काल भी करताहोय तो सो भी सुखेन युद्धकरो हमको भय किसीका नहीं, अरु जो कदापि हम मनुष्य हैं तथापि असुरों के नाशक अरु मुनिकुलके पालक अरु दुष्टोंके शालक (दुःखदायी) हैं, अरु जो कदापि तुममें युद्ध करने की शक्ति न होय तो अपने २ गृहको फिर जावो मैं रणसे विमुख

हुयेको मारता नहीं, अरु हे मन्त्री! रणके सम्मुख निकल पश्चात् जो कपट चतुराई की वार्त्ता वा अपने रिपुके साथ दयाका प्रकट करना यह परमकायरता का लक्षणहै, इसप्रकार जब रामजी ने खरके मन्त्री से कहा तब मन्त्री तूष्णीं होकर समीप जाय सर्व्व वृत्तान्त कहताहुआ,तब तिसको श्रवणकर सर्व्वको दुःखदायी जो खर सो अतिदुःखित होय अपनी सेनासे कहता हुआ कि यह अपने क्षात्रधर्म्म के अभिमानयुक्त जो राजकुमारहै तिसको शीघ्रही अपने बन्धनमें करो, तब सर्व्व निशिचर अपने २ शस्त्रले रामजी के सम्मुख दौड़ अपने २ शस्त्रोंका प्रहार करतेहुये, तब रामजी ने प्रथम अपने धनुष्पर प्रत्यञ्चा चढ़ाय टङ्कार किया तब तिस शब्दमात्रसेही सर्व्व असुर बधिरहोय भयग्रसित होतेहुये। तदनन्तर सर्व्व असुर सावधानहोय अपने शत्रुको बलवान् समझ अपने २ अस्त्र शस्त्रले रामके सम्मुख दौड़ सर्व्व प्रहार करतेहुये तब रामजी उनके शस्त्रों को खण्ड खण्ड कर अपने बाणों का प्रहार करतेहुये ॥ [अर्थात् जब मम लक्षणात्मक तूलाज्ञानरूप खरके चतुर्दश अन्तराय विघ्नरूप सेनापति अरु तिन प्रत्येक के अनेक अनेक भेदरूप सेना तिन सर्व्वको अपनीओर आवते देख सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी ने अपने कनिष्ठभ्राता उक्त लक्ष्मणजी को सहित उक्त सीताके एकान्तस्थल बिषे बिदाकिया अरु आप अपने उक्त धनुर्बाण तरकस खड्ग धारणकर सावधानतापूर्वक शुद्ध सत्त्वगुणात्मक ऊँचे स्थल पर चढ़ असुरसेना को अवलोकन करतेहुये, अरु उक्त रामजी को देख असुरों की सेनाने सर्व्वओरसे उक्त रामजीको घेरलिया तदनन्तर उक्त रामजीको अवलोकनकर उक्त असुर मोहितहोय अस्त्र शस्त्र चलावने से रहितहुये उक्त रामजी को अवलोकन करनेलगे तब उक्त खर दूषणने अपने नास्तिकवादरूप मन्त्री को साम (मेल) करने के अर्थ उक्त रामजी के समीप भेजा अरु कहा कि हे मन्त्री! हमने इन्द्रियाधिष्ठातृ देवतादि सर्वसे युद्धकर सर्वको अपने वशकियाहै अरु सर्वको देखाहै परन्तु जैसा। "सत्यज्ञानमनन्तम्ब्रह्म"। "एकमेवाद्वितीयम्"। सत्यत्व चैतन्यत्व अनन्तत्व ज्येष्ठत्व एक अद्वैतत्वादि लक्षणरूप अलौकिक सुन्दरतायुक्त यह रामशब्दका लक्ष्यहै तैसा अन्य कोई नहीं, अरु यद्यपि इन्होंने हमारी देहात्मभावना वृत्तिरूपा शूर्प्पणखा नाम्नी भगिनी के नाक कान छेदनकर उसको अतिकुरूपताको प्राप्त कियाहै तथापि यह अतिसुन्दर ज्ञानी राजकुमार वध करने के योग्य नहीं; अतएव हे मन्त्री! तू इस रामजी के समीपजाय मेरा संदेश कह कि तुम अपने किये अपराधके प्रतिपक्षमें अपनी स्त्री; अर्थात् तुमको ब्रह्मकरके विषय करनेवाली जो ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञावृत्तिरूपा सीता; सो हमारे स्वामी तूला ज्ञानरूप खरको अर्पणकर; अर्थात् मम लक्षणात्मक तूलाज्ञानको ब्रह्मकरके विषय करनेवाली करके; तुम दोनों भ्राता हमारे हाथ से बाधरूप वधको न पाय अपने शास्त्ररूप देशको पगधारो तदनन्तर उसके उत्तर में वो जो कुछ तुमसे कहे सो मुझसे शीघ्र आय कहो, इसप्रकार जब उक्त खरने अपने उक्त मन्त्रीसे कहा तब तिसको श्रवणकर उक्त रामजी के समीप आय खरकी सर्व्व युक्ति कह सुनाया, तब तिसको श्रवणकर प्रसन्नमूर्त्ति रामजी कहतेहुये कि हे खरके मन्त्री! हम अपने अस्तित्वरूप क्षात्रधर्म्म से कदापि भी न फिरनेवाले क्षत्रियहैं अरु इस संसाररूप अरण्य में मृगयाके निमित्त आये हैं अरु तुम सारिखे नास्तिक अरु अनात्माभिमानीरूप मृगों को अन्वेषण कर करके उनकी मृगया (शिकार) करते हैं अरु एक अद्वैत ब्रह्मवादियोंसे इतर यावत् वादी हैं अरु सो कदापि बलवान्भी होयँ तथापि हम कालवादीपर्यन्त किसीका भी भय करत नहीं, अरु यद्यपि हम मनुष्य; अर्थात् अन्तःकरणरूपा उपाधिके सम्बन्धसे अल्पज्ञभी हैं तथापि अपने स्वरूप करके अनात्माभिमानीरूप दनुज कुलके घालक अरु श्रुतिवाक्यरूप मुनिकुलके पालक हैं अरु तुम जो संग्राममें सम्मुख होय अपने कपट चतुराईके वाक्यान्तर छिपायके भययुक्त वाक्य कहतेहो एतदर्थ प्रतीत होताहै कि तुममें युद्ध करनेका बल नहीं, अरु जो ऐसाही है तो तुम सर्व इस विवादरूप युद्धसे उप-

राम होय अपने २ प्रतिपादक शास्त्ररूप गृहको जावो मैं रणसे विमुखहुयेका वाधरूप वध करता नहीं, अरु तुम जो अपने रिपु मुझसे दयाके वाक्य कहतेहौ इससे मैं तुम्हारी कायरता को देखताहौं, इसप्रकार जब सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजीने उक्त खरके उक्त मन्त्री से कहा तब तिसको श्रवणकर उक्त मन्त्रीने खरके समीप जाय रामोक्ति सर्व्व कहसुनाया, तब तिसको श्रवण करतेही खरने अतिकोपवान् होय अपनी सेना को युद्धकी आज्ञा किया तब उसके उक्त सर्व्व निशिचर अपने २ पक्ष प्रतिपादक नानायुक्तिया रूप नानाशस्त्र धारणकर उक्त रामजी के सम्मुख विवादरूप युद्धार्थ धावतेहुये, तब उक्त रामजीने उक्त निशिचरों को अपने सम्मुख आवते देख अपना त्रिमातृक प्रणवरूप धनुष को चढ़ाय। "ॐमित्येतत्"। इस श्रुतिवाक्यरूप टंकारकर सर्व असुरसेना को बधिर अरु अपने २ पक्षज्ञानसे रहित करतेहुये, तदनन्तर सर्व्व असुरोंने अपने अरि राम को अतिबलवान् जान के उनके ऊपर अपने २ उक्त शस्त्रोंकी वर्षा किया, तब उक्त रामजी अपनी युक्तिया रूप बाणों करके असुरों के सर्व्व शस्त्र काट पुनः अपने प्रतिपादक श्रुतिवाक्यरूप निजबाण को चलावतेहुये॥

३ हे सौम्य! उक्त प्रकार जब सम्यक् विशेषज्ञानरूप रामजीने समाध्यास लक्षणरूप तूलाज्ञानरूप खरकी सेनाके चलाये शस्त्र को काट अपने उक्त निजबाण का प्रहार किया, सो रामजी के कराल बाण कैसे चले मानों फुंकार करते सपक्ष सर्प चलते होयँ अरु उस समय रामजीने क्रोधमुद्रा धारणकर अपने अतितीक्ष्ण बाणोंका प्रहार किया तब तिन बाणोंके असह्य प्रहार को पाय सर्व्व निशिचर रणसे पलायन होनेलगे, तब अपनी सेना को रण से पलायन होती देख खरादि तीनों भ्राता अतिकुपित होय अपनी सेनासे कहतेहुये कि जो रणसे पलायन होगा तिसका वध हम अपने हाथ से करेंगे, तब खरादिकों के सकोप वाक्य श्रवण कर सर्व्वसेना अपना उभय प्रकार मरण निश्चयकर पुनः युद्धार्थ रामजीके सम्मुख होतीहुई अरु नानाप्रकारके आयुधोंकी वर्षा

करतीहुई, तब रामजी अपने रिपु को क्रोधवश अपने ऊपर प्रहार करते आवते देख अपने धनुषपर बाणों को योजनाकर असररूप लक्ष्यपर चलावतेहुये तब तिसप्रहार करके बड़े बड़े बली राक्षस कटनेलगे अरु कितनों के शीश भुजा धड़ चरणादि कट कटके पृथिवीपर गिरतेहुये अरु जब रामजीके बाण असुरों का वेधन करें तब राक्षस बड़े चिक्कार शब्द को करते मृतकहुये ऐसे गिरे कि मानों पर्व्वत गिरते होयँ, अरु एक एकके शत शत खण्ड होनेलगे, अरु अनेक राक्षस पृथिवीमें गिरके पुनः उठ पाखंड करने लगे, पुनः रामजीके बाणोंके प्रहार से असुरोंके भुज शिरादि अवयव आकाश में उड़नेलगे अरु कबन्ध (विना शिरके धड़) मारो २ पकड़ो २ शब्द करते रामजीके सम्मुख दौड़ने लगे तब उक्त रामजीने उनको भी अपने बाणोंकरके रणशय्यामें मरणरूप शयन कराया, अरु तिस समय अनेक काक कंक गृद्ध शृगाल श्वानादि नानाप्रकार भयंकर शब्द करते रुधिर मांस को खान पान करतेहुये [अर्थात् जब सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजीने मम लक्षणात्मक तूलाज्ञानरूप खरकी सेना पर अपने प्रतिपादक श्रुतिवाक्यरूप बाणोंका प्रहार किया तब उन सर्पवत् विषधर अरु वेदबाह्य मतवादी असुरों को नाशकर्ता बाणों का प्रहार लगतेही अपने २ धैर्य्य को त्याग सर्व्व आसुरीसेना भागचली, तब अपनी सेना को रणसे पलायन होती देख उक्त खर दूषण अरु त्रिशिरा, यह तीनों भ्राता अतिकोपवान् होय कहतेहुये कि जो इस परपक्षखण्डनरूप युद्धसे पलायन होगा तिसको हम अपने हाथसे वध करेंगे तब उक्त खरादिकोंके सकोप वाक्य को श्रवणकर पुनः उक्त निशिचर सावधान होय अपने २ शास्त्रयुक्त वाक्यरूप शस्त्रउठाय उक्त रामजीके हाथ अपना मरण निश्चयकर उक्त रामजीके सम्मुख अपने २ शस्त्रों को चलावतेहुये, तब उक्त रामजी उक्त असुरोंको सकोप शस्त्र चलावते देख अपने उक्त धनुषको सावधानकर पुनः उक्तबाणोंका प्रहार करतेहुये तब उक्त निशिचर अपने २ उक्त शस्त्रोंके खण्डनपूर्वक अपने २ पक्षसे अ-

विद्यारूपा पृथ्वीपर गिरतेहुये, अरु पुनः उठ उठके बड़े कोलाहल शब्दको करते नानाप्रकार युक्तरूपी शस्त्र चलावतेहुये परन्तु उक्त रामजीके उक्त बाणोंके प्रहारसे खण्ड २ होय; जैसे पर्वतके शिखर पृथ्वीपर गिरें तैसे अपने पक्षसे चलायमान होय उक्त पृथ्वी पर गिरतेहुये, अरु अनेक राक्षस अपना पक्षरूप मस्तक कटनेपर भी कबन्धवत् व्यर्थ शब्द करतेहुये तिन सर्वको भी खण्डनकर अविद्यारूपा पृथ्वीपर अरु शून्यवादरूप आकाशमें उक्तरामजी फेंकतेहुये, अरु उक्त संग्रामभूमिमें उक्त असुरोंका अन्तर भावना रूप रुधिर अविद्यारूपा पृथ्वीपर नदीवत् प्रवाहित होचला अरु तिस प्रवाहमें असुरोंके मतरूप शरीर तृणवत् वहचले, अरु उस संग्रामभूमि में भेदवादी आस्तिक (न्यायपातंजलादिशास्त्रमतवादी) भेदवादी नास्तिक (सांख्य मीमांसकादिमतवादी) रूप मांसाहारीपशु एकत्रहोय उक्तअसुरोंका उक्त रक्तपान करतेहुये ॥

४ हे सौम्य! उक्त प्रकार जब रामजीने अपने बाणोंकरके असुरसेना विनाश किया अरु असुरोंके रक्तका प्रवाह चलनिकलो तब सियार भेड़िया श्वानादि मांसाहारी जीव असुरोंके शरीरको भक्षणकरनेलगे, अरु भूत प्रेत पिशाच वेताल योगिनीआदि उस रणभूमिमें आय कपाल बजाय नृत्य करते रक्तपान करनेलगे, अरु इधर रामजी असुरों को खण्ड २ कर पृथ्वीपर डालतेहुये, अरु ज्योंही ज्यों रामजी असुरोंका विनाशकरें त्योंही त्यों असुर सर्व को भयंकर शब्द अधिकाधिक करतेहुये, अरु मृतकहुये असुरोंकी आंतें पकड़ २ के गृद्ध चील्हआदि पक्षी आकाश में उड़नेलगे मानों रणभूमिरूप नगरकेनिवासी बालक कनकौआ उड़ावतेहोयँ, अरु उससंग्राममें कइकके शिरगिरे कितनेकके भुजागिरे कइक के वक्षस्स्थल फटगये अरु कितनेक घायलहुये पड़े कहरतेहैं, इस प्रकार जब रामजीने अपने बाणोंके प्रहारसे असुरदलको चल विचल नाशकरदिया तब तिसको देख खरादि तीनों भ्राता अति कोपवान् होय दांतोंसे दांत बजाय अपने शस्त्र उठाय रामके सम्मुख फिरतेहुये अरु बाण शक्ति तोमर परिघ परशु त्रिशूल खड्ग

आदि शस्त्र एक साथ रामजीपर डालतेहुये तब रामजी असुरों करके चलाये शस्त्रोंको एक निमेषमें काट सर्व असुरों को बाणों का प्रहारकरके सर्व सेनापतियोंके वक्षस्स्थलमें दश दश बाणोंका प्रहारकरतेहुये तब सर्वराक्षस कटकटके पृथ्वीपर गिरनेलगे पुनः उठ उठके नानाप्रकारकी आसुरी मायाको रचनेलगे, तब इन्द्रादि सर्व देवता रामजीकी एकाकी युद्ध करते अरु आसुरी माया को देख भय मानतेहुये, तब रामजीने देवभूदेवादि सन्त महात्माओंको आसुरी मायासे भयग्रसित देख आप मायानाथ होत अपनी दैवी मायाको प्रकटकिया सो यह कि रामजीने अपने बाण पर गंधर्वास्त्रका प्रयोगकर असुरपर चलाया तब उस शस्त्रके प्रभावसे सर्व राक्षस परस्परमें परस्परको राम देखनेलगे अतएव आपुसमेंही युद्धकर सर्वही मरणको प्राप्तहुये, अरु परस्परमें राम दर्शनके कारण यह रामहै मारो यह रामहै मारो इसप्रकार मुख से राम कहते अरु मनसे रामाकारहुये अरु रणसम्मुख मरण को पाय सर्वही निर्वाण (मोक्ष) पदको प्राप्तहुये, यहां जो ईश्वरावतार रामजीके हाथसे मरणपाये असुरोंको मोक्षपदकी प्राप्ति कहा है तिसका विचार इसप्रकारहै कि अपने इष्टदेवमें मनकी तदाकारस्थिति होनी सारूप्य सायुज्य मोक्षका कारणहै सो अतिप्रीति वा अतिवैरसे होती है तहां जो प्रेम प्रीतिसे होती है तिसको प्रेमलभक्ति कहतेहैं अरु जो द्वेषसे होती है तिसको द्वेषभक्ति कहतेहैं तहां द्वेषभक्ति उसको करनी चाहिये कि जिसका मरण ईश्वरके अवतारकरकेही होनाहोय अन्यथा नहीं, जैसे हिरण्याक्ष हिरण्यकशिप्वादिकोंका हुआ; अरु जो हिरण्याक्षादिवत् वरबलगर्वित होतेहैं कि जिनके जय अरु वधकरनेको इन्द्रादि देवताभी समर्थ न होयँ आप उनसे पराजयको पावतेहैं;तिनको वध अरु पराजयकरने को ईश्वर अवतार धारताहै, अरु जो असुरोंके अन्तर परमात्मा उनके कर्मानुसार द्वेषभक्ति न उपजावे तो उनकरके नष्टहुआ जो धर्म्म सो असुरोंके नाशपूर्वक अपनी पूर्वस्थितिको पावे नहीं अरु जो संसारमें साधारणजीवहैं कि जिनका मरण अति अल्प

रोगादिकोंके निमित्तसेही होताहै तिन मनुष्यों ने अवतारीपुरुषों की प्रेमलभक्ति कर उनकी कृपासे सम्यक् आत्मज्ञानपाय मोक्ष होना अरु द्वेष अरु कामुकभक्ति करनी नहीं ॥ अरु उक्त उपायसे धर्म द्विजदेव रक्षक भगवान् रामजी ने क्षणमात्रमें चतुर्दश सहस्र असुरोंका नाश करदिया तब सर्वदेवता प्रसन्नहोय दुन्दुभी बजाय रामजी पर पुष्पोंकी वर्षा अरु अनेकप्रकार स्तुतिकर अपने २ विमानों में बैठ अपने अपने लोकोंको पग धारतेहुये ॥ [अर्थात् उक्त प्रकार जब सम्यक् ज्ञानस्वरूप रामजी ने अपने श्रुतिवाक्य रूप बाणोंकरके उक्त असुरोंका वधकिया अरु उनकी अन्तर्भावनारूप रुधिरका प्रवाह अविद्यारूपा पृथिवीपर प्रकट प्रवाहित हुआ अरु उसमें उक्त असुरोंके मतरूप शरीर बहनेलगे तब तिसको देख ममलक्षणात्मक तूलाज्ञानरूप खर अरु दोष स्वभाव लक्षणरूप दूषण अरु तीनों शरीरकी साम्यावस्थाका अभिमान लक्षणरूप त्रिशिरा, यह तीनों भ्राता अपनी उक्त सेनाको रणसे पलायन होती देख सकोप कहतेहुये कि जो इस प्राप्तहुये संग्राम से विमुखहोय पलायनहोगा तिसको हम अपने हाथसे वध करेंगे, तब तिसको श्रवणकर उक्त सर्व असुर अतिकोपवान् होय पुनः रणके सम्मुख फिर अपने प्रतिपादक शास्त्रोंके वाक्य अरु युक्तियांरूप शस्त्र उक्त रामजी के सम्मुख चलावते हुये, तब उक्त रामजी अपनी अभेद अद्वैत आत्मतत्त्व साधक युक्तियोंसे उक्त असुरों के उक्त शस्त्रों को काट पुनः अपना धनुष् चढ़ाय उक्त असुर सेनाके अधिपतियों को । "नेहनानास्तिकिञ्चन" । इत्यादि निषेध मुखवाक्य प्रमाणरूप दश २ बाणोंका प्रहार करतेहुये तब तिसकरके कितनेक असुरोंके शीश बाहु ऊरु पद धड़ आदि अंग कट कटके अविद्यारूपा पृथिवीपर गिरतेहुये केते वेदबाह्यमतवादीरूप बलवान् असुर अपनी २ कल्पना युक्तिरूप माया करते हुये, तब उक्त असुरों की मायादेख सर्व देवता अपने २ यज्ञादि भागसे निराश भयवान् होतेहुये, तब परमकृपालु रामजी ने देवताओंको भयग्रसित देख आप हँसतेहुये गन्धर्वास्त्र [अर्थात् जो

एक अद्वैत आत्मतत्त्वहै सो जिस उपाधियुक्तिसे गन्धर्वनगरवत् अनेकरूपहो भासे ऐसा अस्त्र] चलावतेहुये तब सर्व असुर अपने २ पक्षको न देख सर्वही सर्वको रामरूप देखते परस्पर में अपनाआप बाधरूप बधकरते अपने मतरूप शरीरको अविद्यारूपा पृथिवीपर त्याग आप द्वेषभावसे रामाकार चित्तहुये निर्वाण (मोक्ष) पदको पावतेहुये । इसप्रकार सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी अपने उक्त वैरी असुरोंका क्षणमें नाशकर अशुद्ध तत्व गुणरूप ऊँचे स्थलपर एकाकी सुशोभितहुये, तब इन्द्रियाधिष्ठाता वा सच्छात्ररूप देवता उक्त असुरों के भयसे निवृत्त शान्त चित्तहुये । "ज्ञानंलब्ध्वापरांशान्तिमचिरेणाधिगच्छति" । इत्यादि वाक्य प्रमाणरूपा स्तुतिकर अपने २ स्थानको पग धारते हुये ॥

५ हे सौम्य! उक्त प्रकार जब सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी ने उक्त खरादि सर्व असुरोंका नाश किया तब इन्द्रियाधिष्ठाता इन्द्रादि देवता ऋषि मुनि सर्व निर्भय होतेहुये [अर्थात् जब अहंमम लक्षणात्मक अज्ञान असुर अरु तिनका कार्य्यरूप परिवार सम्यक् विशेष ज्ञानकरके जिसके अशेष अभाव होते हैं सो । "विद्वान् न बिभेति कुतश्चन" । विद्वान् निर्भयहुआ कदापि किसी प्रकार भयको पावता नहीं] तदनन्तर जहां शुद्ध सत्त्वगुणात्मक सामान्य अन्तःकरणरूप ऊँचे स्थलपर प्रणवरूप धनुष् अरु श्रुति के महावाक्यादि वाक्यरूप बाण अरु अनुभव ज्ञानरूप खड्ग धारणकिये विजय लक्ष्मीकरके शोभायमान सूर्य्यादिकोंके प्रकाशक स्वयंज्योति परमात्मा ज्ञानस्वरूप रामजी सुशोभित हैं तहां असाधारण वैराग्यरूप लक्ष्मणजी निर्विकल्प समाधिरूप गुहा मेंसे ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञावृत्तिरूपा सीताको लेजाय प्राप्तहुये अरु दोनों ने उक्त रामजी को प्रणामकिया, तब उक्त रामजी ने उक्त सीता अरु लक्ष्मणको उठाय अपने हृदयसे लगाया अरु उक्त सीता उक्त रामजीका श्यामसुन्दर स्वरूपको अनुभव नेत्रसे अवलोकन करती ब्रह्मानन्दामृतसार को पान करती तृप्त होती नहीं मानो आपही रामरूप हुईहो; तदनन्तर सम्यक् विशेष ज्ञानरूप

रामजी अपने प्रिय सहचारी ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञावृत्ति रूपा सीता अरु असाधारण वैराग्यरूप लक्ष्मण को साथले उक्त पञ्चवटीकी पर्णकुटीमें आय सुशोभितहुये; जैसे आत्मवेत्ता योगी अपने वैराग्यादि साधन अरु अव्यवसायात्मिका प्रज्ञा साथले असंप्रज्ञात समाधिके द्वारा सम्प्रज्ञात समाधिमें सुशोभित होय;। हे सौम्य! शरीररूपा पञ्चवटीमें निवासकर सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी प्राकृतवत् चरित्रों को कर सर्व्व को अन्तरङ्ग उपदेश करतेहुये। अरु उधर ममलक्षणात्मक तूलाज्ञानरूप खर आदिक तीनोंभ्राता को संग्राममें एक रामजी करके मृतकहुये देख देहात्मभावना वृत्तिरूपा शूर्पणखा अतिभयवती व्याकुल चित्त नाक कान अरु विना सहायककी होय रोवती पीटती शरीररूपी लंकामें अपने ज्येष्ठ सहोदर भ्राता अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञानरूप रावण के समीप जाय अपना स्वरूप देखाय क्रोधातुर होय कहतीहुई कि हे भ्राता! अब तू अपने राज्यदेशादिककी शुद्धि त्याग रात्रि दिवस मद्यपान करताहै अरु स्त्रियोंमें आसक्त हुआ पड़ा रहता है सो यह तुझको श्रेय नहीं, अरु तेरे शिरपर अतिबलवान् अरु निर्भय अरि आय प्राप्त हुआ है तिसका भी तुझको शोच नहीं सो यह तेरी अनीति अरु प्रमाद तेरा नाश करेंगे; हे रावण! हे भ्राता! नीति विना राज्य, सत्यादि धर्म्म विना धन, ईश्वरार्पण किये विना का कर्म, विवेक विना विद्या, संगसे यति (संन्यासी), कुमन्त्रसे राजा, अनात्माभिमानसे ज्ञान, मद्यपानसे लज्जा, प्रणय विना प्रीति, अभिमानसे गुण इत्यादि उक्त प्रकार शीघ्रही नाश होते हैं, ऐसा नीतिशास्त्र का कहना है अतएव अब तू सावधान हो। हे रावण! हे सर्व्वको रुलावनेवाले! हे वीर! रिपु, रोग, अग्नि अरु पाप, यह थोड़ेभी होयँ तथापि इनको थोड़ा (छोटा) जानना नहीं क्योंकि इनको वर्द्धमान होते विलम्ब होता नहीं अरु जब यह बढ़ते हैं तब नाश करकेही छोड़ते हैं ताते अब सावधानहो, इसप्रकार कहके उक्त शूर्पणखा विलाप करत सन्ते पुनः कहतीहुई कि हे दशकन्धर! हे बीसभुजावाले भैया रावण! तुझ

सरीखे मेरे हिमायती सहायकके होते क्या मेरी यह दशाहोय, न होनी चाहिये॥

६ हे सौम्य! उक्त प्रकार जब देहात्मभावना वृत्तिरूपा शूर्पणखाने शरीररूपी लंकामें प्रवेशकर सामान्य अन्तःकरणरूप राजगृहमें जाय राजसभाके मध्य अपने ज्येष्ठ भ्राता अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञानरूप रावणके समक्ष रोवती पीटती उसको तिरस्कार पूर्वक नीतिके वाक्य कहके पृथिवीपर गिरपड़ी, तब उक्त शूर्पणखा के वाक्य श्रवणकर उक्त सभासदोंने उठके उसे उठाय बहुत प्रकार समझाया तदनन्तर रावणने कहा कि हे शूर्पणखे! तू अपनी इसप्रकारकी व्यवस्था होनेके समाचार प्रकट क्यों नहीं कहती, यह तेरे नाक कान किसने छेदन किये हैं सो हमारे समक्ष कह, इसप्रकार जब उक्त शूर्पणखासे उक्त रावणने कहा तब वह कहती हुई कि हे भ्राता! सत्त्वगुणात्मक शरीररूप अवधदेशके क्षेत्रज्ञरूप राजा दशरथके पुत्र ज्ञानी राजकुमार पुरुषोंमें सिंह सो इससंसाररूप अरण्यमें आसुरी सम्पदारूप मृगोंकी मृगया करने को प्रकटहुये हैं अरु उनके आचरणसे मुझको प्रतीत होताहै कि वह दोनों भ्राता इस सामान्य अन्तःकरणरूपा पृथिवी को उक्त निशिचरोंसे रहित करदेंगे, अरु हे दशानन! जिनके भुजबलके आश्रय मननशील मुनिगण इससंसाररूप अरण्यमें तेरे भयसे रहितहुये विचरते हैं अरु वह ज्ञानी राजकुमार देखनेमें तो बालकहैं परन्तु पराक्रम करके कालसे भी अधिक पुरुषार्थी ऐसे जगत् विजयी हैं, अरु धनुर्विद्यामें वह एक अद्वितीय नाना शुभगुणवान् हैं, अरु दोनों भ्राता अतुलित पराक्रमी हैं, अरु वह अपने असाधारण स्वभाव करके खलोंके वधमें अरु सुर मुनि द्विज गौ धर्म्मादिकों की रक्षामें रतिमान् हैं, अरु यावत् शोभा (सुख) है तिन सर्व्वका आयतन राम लक्ष्मण (ज्ञान वैराग्य) इन नामों से जगत्में विख्यात हैं, अरु हे भ्राता! उन दोनोंके साथ, यावत् वृत्तियांरूपा स्त्रियां हैं तिन सर्व्व को तिरस्कार करनेवाली, परमसुन्दरी सर्व्वदा एकरस तरुण रहनेवाली शुद्ध सत्त्वगुणात्मक एक अद्वैत

ब्रह्मको विषय करनेवाली प्रज्ञारूपा स्त्री है, अरु हे रावण! उस प्रज्ञाके स्वामी सम्यक् ज्ञानस्वरूप रामजीके अनुज भ्राता असाधारण वैराग्यरूप लक्ष्मणजीने मुझको नाक (स्वर्ग) कान (वेदान्तका श्रवणाधिकार) से रहितकर इस कुरूपताको प्राप्तकिया है, अरु मुझको तेरी भगिनी जानके उन्होंने मेरे साथ बहुत परिहास कियाहै, अरु जब मैंने अपने खरआदिकोंसे अपना वृत्तान्त कहा अरु उन्होंने मुझको इसप्रकारकी दशाको प्राप्तहुई देखा तब अतिकोपवान्हो ससैन्यहुये उनको दंडकरनेके अर्थ सम्मुखहुये तब मेरे देखतेही देखते एक सम्यक् विशेषज्ञानरूप रामजीने क्षण मात्रमें ससैन्य खरादि सर्वको शाब्दार्थरूप संग्राममें प्राणरहित रणशायी करदिये, इसप्रकार जब उक्त शूर्पणखाने कहा तब तिसको श्रवण करतेही उक्त रावणके अन्तरमें एकसाथ क्रोधरूप अग्नि प्रकटहुआ अरु अतिशोच शोचनेलगा अरु अपने क्रोध शोचको अन्तर रोंक ब्राह्म अपनाबल प्रताप प्रकट कह उक्त शूर्पणखाका समाधानकर सभाविसर्जनपूर्वक अपने सुषुप्तिरूप निज भवनमें शयनार्थ गया परन्तु वहांभी उसको शोचवश यथेष्टसुख रूप निद्रा न प्राप्तहोके वह शोच को शोचतेही रात्रिको व्यतीत करताहुआ॥

७ हे सौम्य! उक्त प्रकार आसुरी सम्पदायुक्त शरीररूप लंका में अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञानरूप रावण देहात्मभावना वृत्तिरूपा शूर्पणखाको समुझाय समाधानकर अपने सुषुप्तिरूप निजभवन में जाय अपनी सूक्ष्मवासनारूपा मन्दोदरी रानीके साथ मिल संचित संस्काररूपा शय्यापर शयनकरताहुआ परन्तु उक्त शूर्पणखा की दशा देखनेसे उत्पन्नहुआ जो अपने विषयक शोच तिसकरके शान्तिरूपा निद्राको न प्राप्तहोय शोचनेलगा कि इस नामरूप क्रियात्मकजगत्में यावत् सुरनर नागकिन्नर यक्षविद्याधरादिहैं सो सर्व मेरेवश अरु भयमें रहतेहैं, अतएव वह सर्व मेरे काम क्रोधादि अनुचरोंके समानभी नहीं क्योंकि उनके भी वशमेंहैं। अरु मम लक्षणात्मक तूलाज्ञानरूप खर दूषण तो मेरेसमान बलवान् जगत्

विजयी रहा, अरु उसको वधकरनेवाला सिवाय एक सम्यक् विशेष ज्ञानरूप परमात्माके अन्य कोई भी नहीं अतएव उसको वध होने द्वारा प्रतीत होतीहै कि देवताओं का प्रसन्न करने अरु पृथिवीके भार उतारनेवाले परमात्माने अपने विषे विशेषरूप अवतार धारणकिया होय एतदर्थ अब मैं प्रथम इस शूर्पणखा को इस दशाको अरु मेरे समान भ्राता खरदूषणके वधको प्राप्तकरने वाला जिसको यह शूर्पणखा कहती है तिसका कोई अपराधकर उसके साथ वैर करों अरु खरदूषणवत् उनसे संग्रामकर उनके उक्त बाणोंसे अपने पक्षरूप देहको त्याग उनके भावको प्राप्तहो इससंसारसे मुक्त होवों, अरु जो कदापि उक्त खरदूषण को वध करता साधारण राजकुमार मनुष्य होगा तौ उनदोनोंको संग्राम में पराजयकर उनकी उक्त स्त्रीको अपने वश करोंगा इसप्रकार उक्त रावण शोचपूर्वक निश्चयकर प्रातःकाल होतेही अपनी भावनारूप यानपर आरूढ़होय संचित कर्म संस्काररूप वा प्रकृति विकृति अरु केवल विकृति इनकी सन्धिरूप समुद्रके केवल विकृतिरूप उत्तर तटपर जहां विक्षेपरूप मारीच रहता है तहां आवताहुआ॥

इति रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डे खरदूषणवध वर्णनन्नामनवमंप्रकरणंसमाप्तम्॥

अथ रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डेसीताहरण वर्णनन्नामदशमंप्रकरणम्प्रारभ्यते॥

१॥ श्रीगुरुरुवाच। हे सौम्य! पूर्व इसही काण्डकी भूमिका में के द्वितीय अंकमें कह आये हैं कि, जैसे किसी पुरुषके शरीरमें प्रेत प्रवेश करताहै तब एकही शरीरके इन्द्रियादि अवयवोंद्वारा उस प्रेतकाभी अरु उस शरीर जीवात्माका भी दोनोंका व्यापार सिद्ध होता है, तहां जब प्रेतकी चेष्टा व्यापार बलवान् होता है तब तिसकरके शरीरी जीवात्मा का व्यापार आच्छादित होता है, अरु जब शरीरी का व्यापार बलवान् होताहै तब तिसकरके

प्रेतका व्यापार आच्छादित होताहै; तैसेही रामजीके शरीरमें दशरथका अपने लिंगशरीर द्वारा प्रवेशहोनेसे जबजब उसका अपने कर्मोंके आश्रय दुःख सुख हर्ष शोकादि व्यापार होनेको बलवान् होताहुआ तब तब रामजी का विशेष चरित्र तिरोधान होताहुआ अरु जब जब ईश्वरावतार रामजीकी इच्छाके आश्रय धर्म्म रक्षणादि व्यापाररूप रामचरित्र बलवान् हुआ तब तब दशरथका व्यापार तिरोधान होताहुआ, इसप्रकार एक रामजी केही शरीर द्वारा रामजीका अरु दशरथका दोनोंका व्यापार सिद्धहुआ जानना तहां इस काण्डके काकलीलारूप प्रथम प्रकरणसे दोनों के व्यापारके समलक्ष्यकहे हैं, अरु अत्रिमुनिके प्रकरणसे लेके अगस्त्यमुनिके समागमपर्यन्त इन चारप्रकरणकरके रामजीकी भक्तवत्सलता अरु शुद्धभक्तोंकरके किये अतिथ्यादिकोंका अङ्गीकार करना आदिक लीलाको मुख्य विशेष समझना, अरु तिसकरके तिरोधान हुआ किञ्चित् दशरथका पुनर्जन्म अरु यज्ञोपवीतादि संस्काररूप व्यापार गौण (सामान्य) समझना, अरु पुनः पञ्चवटी में निवासरूप प्रकरणकरके दोनों का व्यापार जिसप्रकार कहाहै तैसे समझना, अरु खरदूषण वध नामक प्रकरण करके रामजीका चरित्र व्यापार विशेष समझना [अर्थात् ज्ञानकर्मके समुच्चय सेवनकर्त्ताके संस्कार उत्तर शरीरमें जब अपना २ समय पायके स्फुरण होते हैं तब तहां जो ज्ञानके संस्कारके आश्रय शम दम विवेक वैराग्यादि साधन व्यापार होताहै सो ज्ञानस्वरूप रामजी के चरित्रहैं; अरु जो कर्मसंस्कारके आश्रय इष्टा (यज्ञादि) पूर्त्त (धर्मशालादि) दत्त (दानादि) वा दुःख सुख हर्ष शोकादि व्यापारहोतेहैं सो कर्मी क्षेत्रज्ञरूप दशरथके चरित्रहैं ऐसासमझना क्योंकि। "ज्ञानीत्वात्मैवमेमतम्"। इत्यादि प्रमाणसे ज्ञानी परमात्माका स्वरूप हैं, अरु अनात्माधर्म्मको अपना मानके कर्म्म करनेवाला कर्मी जीवका स्वरूपहै ताते यह सर्वत्र समान विचार है] अब इस सीताहरणके प्रकरण करके कर्म्मी दशरथका व्यापार विशेष कहाजायगा, तहां ज्ञानकर्म्मके समुच्चय सेवन करने

वाला अन्तसमय जब सकामक्रियाके वशहोय देहत्याग जिसमें मनकी आसक्ताहोती है तिसमें प्रवेशको पावताहै, अरु तहां जब पूर्वके कर्मके संस्कार अपना फलभोग देनेको सम्मुखहोते हैं तब उस समुच्चयकर्त्ताको पूर्वकी परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञाको अपने विषयसे फेर (हटाय) मृगतृष्णाके जलवत् जो नामरूप क्रियात्मक संसार तिसके सम्मुख करते हैं, सो कहाजायगा, अरु उसकी परोक्षतासे ब्रह्मको विषय करनेवाली प्रज्ञा जब इस मृगजलवत् असत्य संसारके सम्मुख होती है तब उसका विवेकज्ञान उससे पृथक् होताहै, अरु जब उक्त प्रज्ञासे उसका विवेकज्ञान पृथक्होताहै तब उसप्रज्ञाको आसुरी सम्पदारूप असुरोंसे रक्षाकरनेवाला जो असाधारण वैराग्य तिसका वह प्रज्ञा तिरस्कार करती है अरु जब वह वैराग्य उक्त प्रज्ञासे तिरस्कार पावताहै तब वह जहां अपने पूर्वज विवेकात्मक ज्ञानको गया देखताहै तहां आप भी चलाजाताहै [अर्थात् ज्ञान वैराग्य साथही रहते हैं] अरु जब कर्मवशात् उक्त प्रज्ञासे ज्ञान वैराग्य दोनों पृथक् होते हैं तब उस को देहादि सङ्घाताभिमानी अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञान अपने वश करताहै, इसप्रकार जब पूर्वशरीरमें समुच्चय सेवनकर्त्ताके सकाम कर्म्म संस्कार अपने प्रभावसे उसकी पूर्व्वकी परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञासे उसके विषय अरु रक्षक ज्ञान वैराग्यको पृथक् करदेते हैं तब वह प्रज्ञा अहंलक्षणात्मक अज्ञान असुरके वशहुई महान् क्लेशको पावती है, अरु जब वह परोक्ष ज्ञान वैराग्य उक्त प्रज्ञासे पृथक् होते हैं तब तद्विशिष्ट चैतन्य इस संसार में उस प्रज्ञाको अन्वेषण करते उसकी जो पराशान्तिका कारणहै, अप्राप्तिसे अत्यन्त दुःखितहोय रोदनादि करते फिरते हैं, यह सर्व्व सविस्तर वर्णन कियाजायगा अरु तिसके अन्तर्गत किञ्चित् रामजी के चरित्रोंका अन्तरङ्ग उपदेशभी देखाया जायगा ॥

२ हे पार्वती! हे सन्तो! हे सौम्य! इसप्रकार अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञानरूप रावण अपना मन्त्र दृढ़कर अपने कार्यकी सहायता अरु परके कार्यमें विघ्नके अर्थ विक्षेपरूप मारीचके समीप आवता

हुआ। अरु यहां सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी आप जिस कार्य के अर्थ प्रकटहुये हैं तिसके होनेकी सान्निध्यताको अरु अपने विषे प्राप्त जे क्षेत्रज्ञरूप राजा दशरथ तिसके पूर्वके कर्म संस्कार अपना फल देनेको सम्मुखहुये तिनको अन्तर्य्यामीरूपसे अवलोकन कर आप अतिगुह्य चरित्र करतेहुये तहां जिस समय वैराग्यरूप लक्ष्मणजी रामजीको अर्पण करनेके अर्थ सत्त्वगुणात्मक नित्य विहित कर्म्मरूप कन्दमूल पुष्पादिकों के ग्रहणार्थ संसाररूप अरण्यमें प्रवृत्तहुये तब उक्त रामजी परम एकान्त को पाय अपनी प्रिया ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञारूपा सीतासे कहतेहुये कि हे प्रिया! हे सुशीला! अपना विशेषरूपसे प्रकट होना जिस निमित्तसे है सो तुमको विदितहै, अरु अब मैं अपने ज्ञानस्वरूपको तिरोधान कर अज्ञानीकर्म्मी जीवोंकीसी लीला करोंगा अतएव अब तुम अपने सदृश अपनी छाया परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी जीव प्रज्ञा को अपने स्थानापन्न स्थापितकर इस जातवेदा [अर्थात् उत्पन्नहुये हैं वेद जिससे सो कहिये जातवेदा] नाम अग्निमें अर्थात् वेदके कारणमें अपने स्वरूप को तावत् तिरोधानकरो कि यावत् मैं उक्त रावणका सपरिवार नाश न करों, अरु अब मैं सो कार्य्य शीघ्र करताहौं, अरु हे अङ्ग! तुमने मेरा वियोग न माना क्योंकि जातवेदा अग्नि। " तदैच्छत्तबहुस्यांप्रजायेयेतितत्तेजोऽसृजत "। इत्यादि श्रुति प्रमाणसे मुझ परमात्माने अपनी इच्छा से अपने बिषे तेजकारूप धारण किया है, ताते वह मेराही रूप है, अतएव अब तुम इस मेरे जातवेदनाम अग्निस्वरूपमें अन्तर्द्धानहो, इसप्रकार जब सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजीने अपनी प्रिया अपरोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञावृत्तिरूपा सीतासे कहा तब तिसको श्रवणकर उक्त सीता सम्यक् ज्ञानस्वरूप रामजी को अभेदतासे अपने बिषेधार अपने साधारण निश्चयात्मकरूप को; जो कि असाधारण निश्चयात्मकरूपकी छायाहै; रामजीके कार्य्य में निमित्तमात्र होने के अर्थ स्थापितकर आप अपने असाधारण निश्चयात्मक स्वरूप करके सर्व्वका प्रकाशक अरु अबोधरूप अ-

रण्यका दाहक जो चारों वेदकी साम्यतारूप अग्नि तिस बिषे तिरोधान होतीहुई, इसप्रकार रामजीने जो एकान्तमें सीता को अग्निमें स्थापित किया तिस गुह्य चरित्र को उक्त लक्ष्मणजीने भी न जाना; क्योंकि अपरोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञाका जो अपने सामान्य कारणमें लयहै सो वैराग्यका विषय होता नहीं ताते इसप्रकार इधर रामजीने अपना गुह्य चरित्र किया तिसके समकालही उधर उक्त रावण उक्त समुद्रके विकृत्यात्मक संसाररूप पार को आय प्रथम विक्षेपरूप मारीचके समीप जाय मस्तक नमाय बैठता हुआ; नीचस्वभाववाले पुरुषके आर्जवतादि शुभाचरण हैं सो भी कर्त्ताके दोष करके दुःखदायीही होते हैं; अरु उनके जे वचन होते हैं सो प्राणान्तपर्यन्त भयके हेतु होते हैं। इस प्रकार राक्षसनाथ उक्त रावण उक्त मारीच के आश्रम पर जाय प्रणामकर स्थित हुआ तब उक्त मारीच अपने राजाका अपने गृह शुभागमन जान उनका पूजन सत्कारकर प्रश्न करता हुआ कि हे स्वामी! हे राजन्! आप त्रैलोक्य विजयी सर्व्व में महासमर्थ होयके भी विना भृत्यादिके केवल एकाकी अतिव्यग्रचित्त मुझ सेवकके इस अल्प आश्रममें आयेहौ तिसका जो कारणहोय सो मुझको आज्ञा करिये॥

३ हे सौम्य! उक्त प्रकार जब अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञानरूप रावण विक्षेपरूप मारीचके आश्रमपर प्राप्तहुआ अरु उसका पूजन सत्कारकर उसके चित्तकी व्यग्रताके अर्थ उक्त मारीचने प्रश्न किया तब उक्त रावणने अपने आगमनके निमित्तकी शूर्पणखा के नासिका छेदनादि सर्व्व कथा साभिमानतासे उक्त मारीच को श्रवण कराया अरु कहा कि हे मारीच! जिसने शूर्पणखाका कुरूप अरु खर दूषणादिकोंका वधकिया है तिस पुरुषकी स्त्री को मैं हरण करोंगा, अरु तू अनेक निमित्तवाला होने से सर्व्व मायावियोंमें श्रेष्ठहै अतएव तू अतिसुन्दर अपूर्व्व मृगका स्वरूप धारणकर उक्त पञ्चवटीमें उनके आश्रमके निकट विचर तब उसकी स्त्री तुझको देख मोहितहो अपने दोनों पुरुषों को तेरे ग्रहणार्थ भेजेगी तब तू

उन दोनों पुरुषों को अपने पीछे इस अरण्यमें दूर लेजैयो तब मैं अवकाशपाय उनकी स्त्री को हरण करोंगा, अतएव मेरे इस कार्य्य की सहायताके अर्थ मेरे साथ चलके कहे प्रकार कार्य्यकी सिद्धि करो इसप्रकार जब उक्त रावणने कहा तब तिसको श्रवण कर हाथजोड़ उक्त मारीच कहता हुआ कि हे दशानन! आप प्रथम सावधान स्वस्थचित्तहोय मेरीविनयको श्रवणकरो हे स्वामी! जिसकीस्त्रीको हरणकरनेकी आप इच्छाकरतेहौ सो साधारण मनुष्योंवत् नहीं हैं वह मनुष्याकृतिको धारणकिये साक्षात् परमात्माहीहैं अरु हे नाथ! जिसके मारे मरिये अरु जिवाये जीविये तिससे वैर कदापि न करिये [अर्थात् जिसकी सत्तासे पृथक्हुये सकारण जगत्का अभावहोताहै अरु जिसकी सत्ताके आश्रय सकारण जगत् स्थितरहताहै तिससे भेदरूप वैर कदापि करना नहीं क्योंकि जो कोई उनसे भेदरूप वैरमानते हैं तिनको भय अरु विनाशहोता है। "मृत्योःसमृत्युङ्गच्छातियइह नानेव पश्यति"। "यदाहयेवैष एतस्मिन्नुदरमन्तरंकुरुते अथतस्य भयं भवति"। अरु हे दशानन! जिसको आप मनुष्य जानके उसकी स्त्री हरणकरनेकी इच्छा करतेहौ सो एक समय अपनी कुमारावस्थामें जिज्ञासुरूप विश्वामित्रके निर्विकल्प समाधिरूप यज्ञकी रक्षाके अर्थ, कि जिसयज्ञमें विघ्नकर्त्ता लयविक्षेपरूप सुबाहु मारीच हम दोनों भ्रातारहे, हमारे अरण्यमें आये तहां कर्म उपासना ज्ञान इन मार्गत्रयीमें चलनेवालोंको विघ्नकरने अरु मोह उपजावनेवाली जो असम्भावनारूप ताड़का तिसका उन्होंने वधकिया पश्चात् उक्त यज्ञमें कर्त्ता के अर्थ विघ्नकर्त्ता जे हमदोनों भ्राता तिनमेंसे एक लयनाम मेरे भ्राताको तो अनुभव ज्ञानरूप अग्न्यास्त्रकरके उन्होंने भस्म किया अरु मुझको अपने कार्यान्तर साधनेके अर्थ अपनी अनुभव युक्तिरूप बाणके प्रहारसे इस केवल कार्यरूप तटपर यहां फेंक दियाहै, ताते ऐसे पुरुषार्थीसे वैरकरनेमें भला नहीं किन्तु महत् विनाशहोताहै, अरु हे रावण! जबसे मैं उनकरके ताड़ितहुआ यहां आय पड़ाहौं तबसे मैं अपने स्वभावको भूल भयग्रस्तहुआ अब भृङ्गीकीटन्यायवत् जहां देखताहौं तहां उनहींको देखताहौं, अरु हे निशाचरपति! जो कदापि उनको ईश्वरावतार न मानके मनुष्य ही मानो तोभी वह अतिशूरहैं उनसे विरोधकरनेमें कल्याण नहीं हे दशानन! आप विचारकरकेदेखो जो जिसने असम्भावनारूपा ताड़का अरु लयरूप सुबाहुका वधकिया अरु त्रैलोक्य विख्यात त्रिमातृक प्रणवरूप शिवधनुष् कि जिसके उठावने चढ़ावनेमें कैलासके उठावनेवाले आप सो भी असमर्थहुये, तिसको विनाही श्रम वाधरूप खंडताको प्राप्तकिया अरु आपकी भगिनी देहात्मभावना वृत्तिरूपा शूर्पणखाकी नासिका छेदनपूर्वक आपके सदृश पराक्रमी भ्राता उक्त खरदूषण त्रिशिराका वधकिया सो ऐसे अमितपराक्रमीको साधारण मनुष्य कैसे मानिये, ताते जिसने खर आदिकोंका वधकियाहै सो सम्यक् ज्ञानस्वरूप परमात्मा रामजी हैं ताते आप उनकी स्त्रीहरण करनेकी कामनाको विस्मरणकर उनसे भेदभावरूप विरोध को त्याग निर्भय हूजिये॥

४ हे सौम्य! उक्तप्रकार विक्षेपरूप मारीचने सम्यक् विशेष ज्ञानस्वरूप रामजीका प्रभाव बल जो उसने आप अनुभव किया रहा सो जब अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञानरूप रावणको श्रवणकराया तब तिसको श्रवणकर उक्त रावण अतिक्रोधितहोय बहुतसे कुवाक्य कहनेके अनन्तर कहताहुआ कि अरे शठ अधम! तू मुझको गुरुओंवत् उपदेश करताहै अरु उनको तू परमपुरुषार्थी कहताहै, अरे नीच! विचारके कह आज मेरेसमान त्रैलोक्यमें योद्धा कौनहै देवतादि सर्व मेरे जिवाये जीवते अरु मारे मरतेहैं अरु तू भी मेरा जिवाया जीवतसन्ते कहताहै कि सर्व उसके जिवाये जीवते हैं, अब फिर जो ऐसा वाक्य हमारे समक्षकहेगा तो मैं तुझको यमपुर को प्राप्त करदूंगा, इसप्रकार जब उक्त मारीचसे उक्त रावणने कहा तब तिसको श्रवणकर उक्त मारीचने नीतिपूर्वक अपने हृदयमें विचारकिया कि शस्त्रधारी, अरु अपने मर्मका जाननेवाला, अरु स्वामी वा राजा अरु शठ (जो समझाये से भी न समझै) अरु धनवान् अरु वैद्य अरु वन्दी (भाट) अरु कवि (का-

व्यकरनेवाला) अरु अन्तरकी जाननेवाला (मूक प्रश्नका कहने वाला) इन नव मनुष्योंसे विरोधकरनेमें कल्याण नहीं अरु इन नवोंलक्षणका अभिमानी होनेसे उक्त नवोंलक्षण इसरावणमें रहते हैं अतएव अब इससे विशेष आग्रहकरके विरोधकरना उचित नहीं, अरु जो अब इसकी आज्ञा नहीं मानते तो यह यहांही प्राण लेताहै अरु मानते हैं तौ उन रामके हाथसे मरणहोता है, इसप्रकार उभयरीतिसे अपनी मृत्यु देखता जो उक्त मारीच सो पुनः विचारकरताहुआ कि अब जो इसरावणको मैं उत्तरदेताहौं तो यह मुझको अभी वधकरेगा अरु इस रावणके वश होयके मरने से अतिनीच गतिकी प्राप्तिहै, अरु उक्त रामजी के वश होयके मरने से अति उत्तमगति; कि। "गतिरत्र नास्ति"। जिसके आगे उत्तम गति नहीं; प्राप्तहोती है, ताते अब अपने को सर्व्व प्रकार सोई कर्त्तव्यहै कि जिसमें इसके कार्यपूर्वक अपना परम कल्याण होय इस प्रकार निश्चय कर उक्त मारीच उक्त रावणके साथ उक्त पञ्चवटी को चलताहुआ, अरु अपने चित्तमें प्रसन्न होय मनोरथ करनेलगा कि आज मैं अपने सनेहीको देखौंगा [अर्थात् मारीच जो अपने वधकर्त्ता को सनेहीआदि विशेषणों से कहताहै तिसका हेतु यहहै कि वह पूर्व अपने खोटे कर्म्मोंका फल (दण्ड) उक्त रामजी के हाथसे पायकै अपने दुष्टकर्म्म से निवृत्त हुआहै, अरु उस दण्डके प्रभावसे दण्डकर्त्ता के पुरुषार्थ को विचार अतिभयवान् हुआ सर्व्वत्र उक्त रामजीकोही अपने मनकरके देखता है तिस कारणसे उसका मन शुद्ध होने से उसने विचार किया है कि जो मुझको रामजी दण्ड न देते तो मैं अपने दुष्टकर्म्म से विमुख न होता अरु दुष्टकर्मकी निवृत्तिही सुखका कारण है सो मैं रामजी से दण्ड पाय पापकर्म्म से निवृत्त सुखी हुआहौं यह मुझको प्रत्यक्ष अनुभवहै ताते उक्त रामजी ने मुझपर दण्डरूप बड़ा अनुग्रह कियाहै ताते वे मेरे परमसनेही हैं, अरु मैंने उनका अलौकिक स्वरूप स्वभावगुण बल देख अनुभवकर ईश्वरावतार निश्चय किया है, अरु अब मैं उनके हाथसे वधहुआ इस उक्त

रावणके वशसे छूट रामकी गतिको प्राप्त होवोंगा एतदर्थ भी रामजी परमदयालु सर्व्वके कल्याणकर्त्ता सर्व्वके परमसनेही हैं] अरु उनके दर्शन से अपने नेत्र अरु जन्म को सुफलमान सुखी होवोंगा, अरु जब उनके निज आश्रमके निकट प्राप्त होवोंगा तब साहित उनके सहचारियों के उक्त रामजी का दर्शन कर उनके चरणमें अपने मनको स्थापित करोंगा, अरु उनका क्रोध निर्वाणदायक अरु भक्ति उनको वशकरनेवाली है परन्तु इससमय भक्ति बने नहीं क्योंकि मुझको इस दुष्ट रावणके कार्य्यार्थ उक्त रामजी से छल करना पड़ेगा, अतएव अब मुझको उनका क्रोध निर्वाणदायक होगा, अरु जब मैं कपटसे मृगका रूप धारण कर उनके आश्रमके निकट जाऊंगा तब वह सुखसागर भगवान् सर्व्व के अवगुणको हरणकर्त्ता (हरि) सो मेरे वधार्त्थ धनुर्बाण धारणकर मेरे पीछे धावेंगे । अरु जब वह मेरे पीछे आवेंगे तब मैं उनके समक्षसे पलायमान होता फिर फिरके उनके स्वरूपको अवलोकनकरता उनको अधिक कोप उपजाय उनके हाथसे वधहोय निर्वाणपदको प्राप्त होवोंगा, एतदर्थ मुझ समान धन्य और कौनहै किन्तु कोई भी नहीं ॥

५ हे सौम्य! उक्तप्रकार अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञानरूप रावण के साथ विक्षेपरूप मारीच उक्त पञ्चवटी को चला [अर्थात् जिसको विक्षेप कहते हैं वह अनेक निमित्तवाला होताहै कहीं कर्म्म से कहीं धनसे कहीं कुटुम्बसे कहीं शरीर से रोगादिकों से, जैसा पूर्व्वकर्म्म संस्कार होताहै तैसेही निमित्त से पुरुष को धर्म्माचरणमें विक्षेप होताहै सो पूर्वोक्तप्रकार रामजी के शरीरमें प्रवेशको पाया जो क्षेत्रज्ञरूप राजा दशरथ सो शरीररूपा पर्णकुटी में पञ्चयज्ञरूप शुभक्रियाको करतारहा तिसके पूर्व्वजन्मके सकामकर्मके संस्कार बलवान् होय उसको परोक्षपूर्वानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञाको उक्त साधनोंमें विक्षेप करने के अर्थ अज्ञानरूप रावणके आश्रयप्रवृत्त होतेहुये, तब जीवोंको संसारमें प्रवृत्त कर क्लेश देनेवाला जो अहंलक्षणात्मक अज्ञान सो पञ्चीकृत पञ्चमहा-

भूतरूप पञ्चवटी देशमें शरीररूप आश्रममें स्थित जो क्षेत्रज्ञरूप राजा दशरथ वा रामजी तिनके निकटआय प्राप्तहुआ तब उसके निमित्त से पूर्व्वके सकामक्रिया के संस्कार बलवान् होय उसके विवेकादिसाधनमें विक्षेप करनेके अर्थ नामरूपक्रियात्मकरूप से दृष्टिगोचर होताहुआ, सो कैसाहै यह नामरूपात्मक मृग अज्ञानियोंको अतिसुन्दरहै, अरु तिस विषे नानाप्रकार के उत्तम मध्यम स्वर्गादिकों के विषय सुख अरु नानाप्रकारकी प्रवृत्तिबोधक विद्यारूप रत्नजटित हैं अरु अज्ञानपर्यंत इसकी सुन्दरता है अरु ज्ञान विचार से देखिये तो मृगतृष्णाके जलवत् असत्य है एतदर्थही यह मायामय मृग कहाजाता है, अरु यह नामरूपात्मक असत्य मृग सकामकर्म्मसंस्कारसम्पन्न परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा को परमार्थसाधक विवेकादि साधनोंमें विक्षेपकारी है, ऐसा जो विक्षेपरूप मारीच मृग सो अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञानके आश्रय [अर्थात् । " अज्ञानमेवास्यहिमूलकारणम् " । इत्यादि प्रमाण से सकाम कर्म्मका प्रवर्त्तक कारण अज्ञानही है, अरु । " देहाभिमानादपिवर्त्ततेक्रिया " । इत्यादि प्रमाणसे देहाभिमान विना क्रिया बने नहीं अतएव अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञानरूप रावणहै तिसके वश हुआ उक्त पञ्चवटीमें आय उक्त राजादशरथकी पूर्व की परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञाके जो कि अपरोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञाकी छाया मात्रहै, दृष्टिगोचर होता हुआ, तब पूर्व्वके सकाम क्रियाके संस्कार वश उक्त सीता उक्त मृग को देख उसके रूपमें आसक्त चित्तहोय अपने स्वामी परोक्ष साधारण ज्ञानरूप रामजीसे वा उक्त दशरथसे कहतीहुई [अर्थात् यहां जो परोक्ष साधारण ज्ञानरूप रामजी कहे हैं सो उक्त दशरथके प्रसंगसे कहे हैं क्योंकि अब उक्त दशरथका प्रकरण बलवान् करके कहाजाता है ताते] कि हे स्वामी! यह मृग कैसा सुन्दरहै इसको आप देखो ऐसा मृग मैंने तो देखा नहीं, अरु इस मृगके ऊपरकी नामरूपक्रियात्मक त्वचा उक्त रत्नों करके खचित अतिमनोहर है, अतएव आप इसको वधकरके इसकी त्वचा मुझको ल्याय

प्राप्तकरो तो मैं तिस करके अपने शरीर को आच्छादितकरों [अर्थात् ज्ञानकर्म्मके समुच्चय सेवनकर्त्ताके पूर्व्वके सकाम कर्म्मके संस्कार अपना फलदेने को सम्मुख होते हैं तब उसकी पूर्व्वकी परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा को ज्ञानविचारमें विक्षेपकारी जो मृगजलवत् केवल देखनेहीमात्र सुन्दर संसार तिसकी ओर प्रवृत्ति करते हैं तब वह उक्त प्रकारकी प्रज्ञा अपने विषयसे बहिर्मुख संसारविषयिणी होय अपने धारक पूर्व्वके परोक्षज्ञान को भी संसाररूप असत्य मृगकी ओर सम्मुख करती है] तब उक्त सीताके वाक्य को श्रवणकर तिसका संसर्ग्ग पाय उक्त रामजी उक्त मृग को देख आप ज्ञानस्वरूप होनेके कारण सावधानहोय उक्त तूणीर धनुर्बाण धारणकर अपने भ्राता असाधारण वैराग्यरूप लक्ष्मणजीसे कहतेहुये कि हे भाई ! इस अन्तःकरणरूप अरण्यमें नानाप्रकारके विक्षेपकारी नामरूप क्रियात्मक वेषके धारणकर्त्ता आसुरी सम्पदारूप निशिचर विचरते हैं, अतएव तुमको इस नामरूपात्मक मृगके सम्मुखहुई प्रज्ञारूपा सीताकी सम्यक् प्रकार रक्षा करना, इसप्रकार उक्त लक्ष्मणसे कहके उक्त रामजी उस मृगके वधार्थ चले, तब उक्त मृगने उक्त रामजी को अपने पीछे आवते देख आप इस पञ्चविषयात्मक अरण्यकीओर भाग चला, अरु कभी तो रामजीके निकट होताहै कभी दूर होताहै [अर्थात् जब साधारण ज्ञान पञ्चीकृत पञ्चविषयात्मक कार्य्यकी ओर दृष्टिकरताहै तब नामरूप क्रियात्मक मायामृग निकट दृष्ट आताहै, अरु जब अपञ्चीकृत पञ्चतन्मात्रारूप कारणकी ओर दृष्टि करताहै तब उक्त मृग दूर दृष्ट आवताहै, क्योंकि कारणमें कार्य्यके नामरूप तिरोधान होते हैं] हे सौम्य ! जो श्रुतियों के;। " नेति नेति " । वाक्यद्वारा निषेधमुख लखाया जाताहै अरु जो मन वाणी आदिकोंका विषय नहीं सो ज्ञानस्वरूप आत्मारामजी अनहोते अज्ञानके संसर्ग्ग से कर्म्मवशात् नामरूपात्मक असत्य मृगके पीछे चलता प्रतीत होताहै सो अज्ञानपर्य्यन्तही होताहै आगे नहीं ॥ इसप्रकार उक्त मृग उक्त रामजीसे छल करतसन्ते

उनको अपने निज आश्रम आनन्दमय कोशसे बहिर्मुख अति दूरलेगया तब उक्त रामजीने विचारा जो यह अतिनिकट आय प्राप्तहोताहै परंतु ग्रहण कियाजाता नहीं जैसे मरुस्थलका जल प्रत्यक्ष सम्मुख भासताहै परन्तु असत्य होनेके कारण पानकिया जाता नहीं; ताते यह असत्यहै, इसप्रकार उक्त रामजी ने विचार अपना प्रणवरूप धनुष् चढ़ाय तिसपर श्रुतिका। "नेहनानास्ति किंचन"। इत्यादि निषेधमुख वाक्यरूप रामबाण योजनाकर श्रवणपर्य्यन्त खींच उक्त मृगको मारतेहुये [अर्थात् जब श्रुतिके निषेधमुख बाण (वाक्य) श्रवणपर्य्यन्त खींचे जाते (सुननेमें आवते) हैं तब तिस श्रवणज्ञान करकेही नामरूप क्रियात्मक असत्य मृगका बाधरूप वधहोताहै] तब वह मृग उक्तबाण लगतेही उच्चस्वरसे हे लक्ष्मण!। "हाहतोस्मि"। (मैं मारागया) इस प्रकार पुकारके पश्चात् रामका स्मरणकर पृथिवीपर गिरपड़ा, अरु अपने मरण समय अपने वास्तविक स्वरूपको प्रकटकर तिस देहको भी त्याग उक्तरामजीकी गतिको पावताहुआ [अर्थात् जब वह; मुमुक्षुको विक्षेपकारी, नामरूप क्रियात्मक कपटरूपके धारनेवाला प्राक्तन कर्म संस्कार विक्षेपरूप मारीच मृग ज्ञानद्वारा श्रुतिके निषेधमुख वाक्यरूप बाणके लगते अपने उक्त कपटरूपको वैराग्यपूर्वक त्याग अपने वास्तविकरूपको प्रकटकर ज्ञानके अपरोक्ष प्रभावसे अपने पूर्वकर्मसंस्काररूप विक्षेपता शरीर को अविद्यारूपा पृथिवीपर त्याग आप सर्वाधिष्ठान चैतन्य रामरूपमें निर्वाणगति को पावताहुआ। यह उक्तदशरथके व्यवहार चरित्र वर्णनके अनन्तर उक्त रामजीके। उक्त चरित्रका लक्ष्य जानना] इसप्रकार जब सम्यक् विशेषरूप रामजीने विक्षेपरूप मारीचको वधकर अपने निजपदको प्राप्तकिया तब सत् शास्त्ररूप देवता उक्त रामजीकी स्तुति करतेहुये॥

६ हे सौम्य! उक्तप्रकार जब सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजीने उक्त मारीच मृगका वधकिया अरु उसने अपने मरण समय हे लक्ष्मण! मैं मारागया इसप्रकार उच्चस्वरसे लक्ष्मणका स्मरणकिया,

तब तिसको उक्त कुटीमें उक्त सीताने श्रवणकर सभीतहोय लक्ष्मणसे कहा कि हे वीर! तुम्हारे भ्राता रामजी को भारीसंकट प्राप्तहुआहै ताते वह तुमको पुकारते हैं अतएव तुम शीघ्र उनके समीप जावो, तब लक्ष्मणजीने हँसके कहा कि हे माता! जिसकी इच्छामात्रसे एक निमेषमें जगत्का उत्पत्ति पालन संहारहोताहै अरु जिसके भयमें सूर्य चन्द्र अग्नि वायु यम मृत्यु कालआदिक रहते हैं तिसको स्वप्नमें भी संकटहोवे नहीं ताते तुम रामजी विषयक शोच मतिकरो; तब विक्षेपके वशहुई उक्तसीता कहतीहुई कि अरे लक्ष्मण! तू इच्छताहै कि रामजी संकटमें रहैं अरु मैं उनके अभावहुये इस सीताको भोगों सो होनेका नहीं इसप्रकार जब सीताने लक्ष्मणको मर्मवेधक अनेक वाक्यकहे तब लक्ष्मणने विचारा कि अब हमको यहां रहना योग्य नहीं रामजीके समीपही चलना श्रेष्ठहै, ऐसा विचार सीताको वनके देवता दिशाओंके देवताआदिकों को सौंप आप वहां जातेहुये कि जहां रावणके प्रभावरूप चन्द्रमाको आवरण करनेवाले श्यामसुन्दर भगवान् रामजी हैं [अर्थात् जो प्रज्ञा नामरूप क्रियात्मक संसारमें आसक्त होती है सो अपने निकट ज्ञान वैराग्यको रखती नहीं अरु जो प्रज्ञा संसारके सम्मुख विषयासक्त होती है तिसको ज्ञान वैराग्य दोनों त्याग जाते हैं] इसप्रकार जब उस परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञाके समीपसे उक्तराम लक्ष्मण दोनों पृथक्हुये तब अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञानरूप रावणने पंचकोशात्मक पर्णकुटीमें उक्तसीताको ज्ञान वैराग्यसे शून्य (रहित) अथवा उक्त लक्ष्मणजी जब उक्त सीताकरके प्रेरित उक्तरामजीके समीप चले तब उक्तअरण्यमें उक्त असुरोंकी आधिक्यता समझ उक्तसीताकी रक्षाके अर्थ। "आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्योमन्तव्योनिदिध्यासितव्यः"। इत्यादि श्रुति आज्ञारूप मंडलकर कहतेहुये कि हे सीते! तुमने ज्ञानस्वरूप आत्मा रामजीके श्रवण मनन निदिध्यासनरूप इसमंडलसे बाहर न होना, इस शिक्षारूप शून्यमें देख आप यती (संन्यासी) का वेषधारणकर उसके निकट आवताहुआ, जो कदापि

कोई कहे कि उक्त रावणने अन्यवेष न धारणकरके यतीकाही वेष धारण किया तिसका कारण क्या तो श्रवणकरो यतीका जो वेष है सो सम्यक्ज्ञान वैराग्य सम्पन्न मनुष्यका चिह्नहै, अरु ज्ञान वैराग्य सम्पन्न पुरुषही। "आत्मविदर्चयेद्भूतिकामः"। इत्यादि प्रमाणसे सर्वकरके पूजनीयहै,ताते रावणने विचारा कि जो मैं यतीका वेषधारणकरके इसके निकट जाऊंगा तो वह उस वेषको देख भय लज्जा त्याग मेरे आतिथ्य सत्कारकरने में प्रवृत्तहोगी तब में अपना अवसरपाय शीघ्रही इसको हरणकर लेजाऊंगा, इसविचारसे रावण अन्यवेष न धारणकरके यतीकाही वेष धारण किया यह कारण है कि हे सौम्य! जिसके भय अरु शासनसे देव मनुष्यादि सभीत रहते हैं सो अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञानरूप रावण श्वानमुद्रासे भड़िआई चाल चलता हुआ (अर्थात् जब कोई महत् पराक्रमी अरु प्रतिष्ठित पुरुष अनीति करके कुमार्ग में चलताहै तब उसकी बुद्धि बल तेज इत्यादि सर्व शुभगुण पलायन होजाते हैं अरु वह अतिलघुताको प्राप्त होताहै) अरु उक्त रावण उक्त सीताके समीप जाय प्रथम आर्ज्जवतादि साधुके लक्षण अपने बिषे देखाय पश्चात् नीति भय प्रीति देखावताहुआ, तब उक्त सीताने कहा कि अरे यती! तू संन्यासी होयके दुष्टोंवत् वचन बोलता है सो तू कौनहै, इसप्रकार जब उक्त सीताने कहा तब वह रावण अपने स्वरूप को प्रकट कर अपना नाम कहता हुआ कि हे सुन्दरि! मैं जगत् विख्यात रावणहौं, तब वह परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञानरूप रावणको अहंभावसे प्रत्यक्ष देख सभीत होय पुनः कहती हुई कि अरे खल! अब तू देख हमारे स्वामी सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी अब शीघ्र आवते हैं तू खड़ारह जब वह आवें तब उनके समक्ष अपना पुरुषार्थ देखाय मुझको लेजैयो, अरे दुष्ट! जैसे सिंहकी वधूको ग्रहण करने की इच्छा तुच्छ शृगाल करे औ परिणामकाल के वश होय, तैसेही अरे अविद्यारूपा रात्रिके आश्रय विचरनेवाले आसुरी सम्पदारूप असुरों के स्वामी! तू मेरी इच्छाकर कालके वश क्यों होता है

[अर्थात् अब तू मेरी इच्छा करने से सम्यक् ज्ञानके दृष्टिगोचर होतेही अपने विनाश को क्यों प्राप्त होताहै इसप्रकार जब उक्त सीताने कहा, तब तिसको श्रवणकर उक्त रावण अपने कर्तृत्वसे किञ्चित् लज्जाको पाय अपने मनमें उक्त सीताको प्रणाम करता हुआ। पश्चात् पुनः अपने असुर स्वभाव वश क्रोधवान् होय परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञाको जो अपरोक्षानुभूति ब्रह्म विषयिणी प्रज्ञाकी छायामात्र है, हरणकर अपने अविवेकरूप रथ पर कि जिसमें 'अधर्म्म, अनर्थ, काम, अरु बन्ध, यह चार घोड़े लगे हैं; बैठाय आकाश (शून्यवाद) मार्ग्ग से अपनी उक्त लङ्का की ओर लेचला॥ अथवा उक्त रावण अपने बिषे संन्यासी का वेष धारण कर उक्त रामजी के आश्रम पर जाय उक्त सीतासे भिक्षा मांगताहुआ तब उक्त सीता उक्त लक्ष्मणजी के कहे प्रमाण उक्त लक्ष्मणकृत रेखाके बाहर न होय रावण को भिक्षा देनेलगी तब रावणने कहा कि तू इस रेखाके बाहर होय मुझको भिक्षा दे इस रेखा के व्यवधान से भिक्षा देना योग्य नहीं [अर्थात् जिसकी प्रज्ञा आत्मा रामजी के श्रवण मननरूप रेखा (मर्य्यादा) से बाहर होती नहीं तिसपर अहंकारादि आसुरी सम्पदारूप असुरोंका बल चलता नहीं] तब उक्त सीता उक्त रेखासे बाहर होय भिक्षा देनेलगी तब रावण ने अपना रूप प्रकट कर उक्त सीताको उठाय उक्त रथमें बैठाय उक्त लंकाको लेचला [अर्थात् जो प्रज्ञानाम रूप क्रियात्मक रूप असत्य मृगमें आसक्त होती है अरु श्रुतिकरके प्रतिपाद्य परमश्रेय साधक आत्मा का श्रवण मननरूप मर्य्यादा तिसके बाहर होती है तब उसको अहंकारादि असुर अपने वशकर अति दुःख देते हैं]॥ परन्तु उक्त रामजी के आगमन अरु दृष्ट पड़ने के भयसे उक्त रावण से रथ यथेष्ट हांका जाता नहीं [अर्थात् जो पुरुष स्त्री के धनके वियोग से वा अन्य रोगादिकों के क्लेश से वा अपने क्रोधी स्वभाव से वा गद्दी मठादिकों के लोभ से संन्यासी हुआ है अरु संन्यास ग्रहण करने के पूर्व्व वा पश्चात् विवेक वैराग्यादि साधन हुये नहीं,

अरु तिसही कारण स्त्री धनादिकों की कामना अशेष हुई नहीं, अतएव वह अपनी कामना के वश हुये गृहस्थों से पदार्थों की याचना करके पुनः द्रव्य सञ्चय; जो संन्यासी को परम अनर्थ का हेतु है; करते हैं; भिक्षा के निमित्त से लोगों के गृह में जाते हैं तब स्त्रियां उनको भिक्षा देना अपना धर्म्म जान के उनको भिक्षा देती हैं तब तिस समय स्वामीजी अपनी मधुरवाणी से उनकी प्रशंसा करते हैं, अरु वहां बैठकर उनके हाथ भी देखते हैं अरु उनकी विधि मिलावते हैं उनको घूरते भी जाते हैं अरु तिस बहाने अन्तर से अपनी भी विधि मिलावते हैं अरु बाहर से अतिवैराग्यशील भासते हैं सो संन्यासी अपनादांव पावते हैं तो स्त्रियों को रावणवत् हरण भी करलेजाते हैं, अतएव गृहस्थने यती किन्तु याचक मात्रको यथाशक्ति अन्नदेना परन्तु उसको भली प्रकार जाने विना विशेषकरके अपने गृहमें आवने न देना, अरु स्त्रीने भी अपने पुरुषोंकी परोक्षतामें आया जो भिक्षुक उसको भिक्षामात्र देदेना उसके सम्मुख रहना नहीं बैठना नहीं उससे बोलना नहीं उसके वाक्य सुनने नहीं, नतु उक्तप्रकार के यतीसे अपने पुरुषकी परोक्षतामें विशेष भाषणादि करनेसे स्त्री सीतासेभी अधिक क्लेश पावती हैं, अरु वह यती धन विषयासक्त हुआ अपनी कामना को छिपाय श्वानवत् घर घर डोलते हैं अरु तेज बल ज्ञान विचारसे भ्रष्टहुये आदर कहीं पावते नहीं, अरु दण्डमेंही विशेष आग्रह मानते कहते हैं कि। "दण्डग्रहणमात्रेण नरोनारायणोभवेत्"। दण्ड धारण करनेमात्र सेही मनुष्य नारायण होताहै, अरु जो कदापि कहीं अपमान। पावते हैं तो दण्ड तोड़के प्राण देने को उद्यत होते हैं, ऐसे जे उक्त प्रकारके आत्महा पाखण्डी दण्डादि चिह्न को धारणकर तिसकाही आग्रह करनेवाले वा विना दण्डके वैरागी (गोसाईं) यती हैं सो देह त्याग त्यागान्तर यमलोकमें अपने अज्ञान जन्म कर्म्म कामनाके अनुसार रावणवत् दण्ड पावते हैं अरु, नार, कहिये जल अरु अयन, कहिये स्थान सो है जिसका [अर्थात् जलहै निवासस्थान जिसका ऐसे कच्छ मच्छादिरूप नारायण होते हैं]॥

७ हे सौम्य! उक्त प्रकार जब अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञान रूप रावणने कपटसे संन्यासीका वेष धारणकर उक्त पञ्चवटीमें उक्त रामाश्रममें आय शून्यस्थानमें परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा को देख उसको साम दाम भय देखाय बलात्कारसे उसको हरण कर अपनी उक्त लंकामें लेचला, तब उक्त सीता विलाप करने लगी। हा नाथ! हा जगत्के प्रकाशक स्वयंज्योति देव! हे अज्ञानादिकोंके नाशार्थ वीररसके धारणकर्त्ता रघुवीर! इससमय मेरा क्या अपराध देखके आपने अपनी दयालुता शक्ति को तिरोधान कियाहै, हे आरतके हरण कर्त्ता! हे अशरणके शरण! हे सन्तसुखदायक! मेरी रक्षाकरो, हे वेदरूप रघुकुलके मन्त्रार्थरूप कमलोंके प्रकाशक! हे नाथ! अब मेरे अपराध को क्षमाकर इसदुष्टसे मेरी रक्षाकरो, हे वैराग्यरूप लक्ष्मण! मैंने तुमको कुवाक्य कहके अपने निकटसे पृथक् किया तिसका फल प्रत्यक्ष पाया, अरु जो प्रज्ञा तुम्हारा तिरस्कार करती है सो मुझवत् क्लेशही पावती है अब आप अपनीओरसे मेरी रक्षाकरो, हे नाथ! "दिशःश्रोत्रे"। दिशा ये आपके श्रोत्र हैं अरु आरतहर आपका स्वभावहै तब मेरे विलाप को श्रवणकर मेरी आरत को क्यों नहीं हरण करते, हे स्वामी! आपका भाग मुझ पुरोडास (यज्ञका शेष हवि) को यह दुष्ट गर्दभ खानेकी इच्छा करता मुझे लियेजाताहै अतएव अब मेरी रक्षाकरो, इसप्रकार जब उक्त सीताने बहुत विलाप किया तब तिसको श्रवणकर उस उक्त अरण्यके चराचरजीव दुःखित होते हुये [अर्थात् जब पूर्व्वके कामुक कर्म्मके संस्कार अपना फलदेने को सम्मुख होते हैं तब मुमुक्षुकी पूर्व्वकी परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा को नाम रूपात्मक संसारकीओर सराग प्रवृत्तकर अहंलक्षणात्मक अज्ञानके वश करते हैं तब वह प्रज्ञा अपने पूर्व्वके ज्ञानाभ्यास संस्कार करके अहंकारके वश होनेके क्लेश को अनुभव करती अनेक प्रकार विलाप करतसन्ते ज्ञानके दर्शन को इच्छती है, परन्तु अहंकाररूप असुरसे मुक्त होने को समर्थ होती नहीं

क्योंकि प्रारब्ध कर्म्म भोगे विना मिटता नहीं] इस प्रकार उक्त रावणके वशहुई उक्त सीता उच्चस्वरसे विलाप करनेलगी तब तिसको जटायु नाम गृद्धजाति के पक्षीने [अर्थात् जटा उपलक्षण करके यहां तपका ग्रहण है । तहां ऊर्ध्वबाहु जल निवास पञ्चाग्नि तापना इत्यादि क्लेशित तप तमोगुणी है, अरु कृच्छ्र चान्द्रायणादि व्रतरूप तप रजोगुणी है, अरु । " तस्यज्ञानमयं तपः " । इत्यादि प्रमाणसे भृगुवत् जो ब्रह्मविचार मय तप है सो सत्त्वगुणात्मक है, तिनमें यहां जो तपरूप जटायु कहाहै सो तमोगुणात्मक तप जानना क्योंकि गृद्ध पक्षी तामस योनिहै] श्रवणकर अनुमान किया कि यह उक्त रामजी की प्रियाहै तिसको अविद्यारूपा रात्रिका विचरनेवाला अहंलक्षणात्मक अज्ञान रूप रावण लियेजाताहै, ऐसा देख आपबोला कि हे तपादि साधनों से उत्पन्न होनेवाली पुत्रि ! तू अब त्रास मतकरे मैं इसदुष्ट निशिचर का नाशकर इससे तुझको मुक्त करता हौं, ऐसा कहके उक्तगृद्ध उक्त रावण पर ऐसा झपटा कि जैसे पर्वत पर इन्द्रका वज्र गिरै तैसे अरु कहताहुआ कि अरे दुष्ट अधर्म्मी निशिचर तू मुझको विनाजाने सीताका हरण कर निर्भय चलाजाता है अब खड़ा-रह २ मैं आवताहूं, ऐसा कहके कालके समान क्रुद्धहोय उक्त रावणके सम्मुख चला तब उक्त रावणने फिरके देखअनुमान किया कि यह सपक्ष मैनाकनाम पर्व्वतहै वा खगराज गरुड़ है जो मेरे बलको न जानके निर्भय चला आवताहै, जब वह निकट पहुँचा तब रावण ने निश्चय किया कि यह वृद्ध जटायुनाम गृद्ध पक्षी है तब बोला कि अरे खग तू मेरे हस्तरूप तीर्थ में अपना शरीर त्यागनेको इच्छता आवताहै सो निःशंकआव, तब तिसको श्रवण कर उक्त जटायु क्रोधातुरहोय बोला कि अरे दुष्ट तू मेरी शिक्षा मान उक्त सीताको त्याग कुशलसे लंकाकोजा नतु सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी के रोषाग्नि में सकुल पतंगकीटवत् भस्म होगा, इसप्रकारके उक्त जटायुके वाक्य श्रवणकर उक्त रावण तूष्णींहो आगेको चला तब उक्त गृद्ध क्रोधितहोय झपटके अपनी

चोंचसे उक्त रावणके केश पकड़ उसको अविद्यारूपा पृथिवी पर गिराय विरथकर उक्त सीताको पृथक् स्थानमें स्थापितकर पुनः अपने चरण चोंचका प्रहारकर उक्त रावण को मूर्च्छित करता हुआ, तदनन्तर एक मुहूर्त्त उपरान्त उक्त रावण सचेतहोय अपना अहमस्मि भावरूप खड्ग निकाल उक्त जटायुके रज तम गुणात्मक उभय तप आचरणरूपपङ्ख काट उसको पृथिवी पर गेरताहुआ [अर्थात् तप आचरण जो कियाहै सो । "देहाभिमानादपिवर्त्ततेक्रिया " । इत्यादि प्रमाणसे अहंकार के आश्रय होती है अतएव तपरूप जटायु उक्त सीताको उक्त रावणसे मुक्त करने के अर्थ युद्ध करताहुआ परन्तु परिणाम अपने आश्रय को जय करने में असमर्थहो अपने रजतमात्मक उभय पक्षके अभाव हुये उक्त पृथिवी पर गिरपड़ा] तदनन्तरपुनः रावण सीताको उठाय रथमें बैठाय शीघ्रतासे लंकाकीओर चलताहुआ, तब पुनः सीता रुदनपूर्वक विलाप करनेलगी; जैसे व्याधके वशहुई मृगी अनेकप्रकारके विलापके शब्द करती है तैसे; अरु आकाशमार्ग से जाती जो उक्त सीता तिसने सत्त्वगुणात्मक निवृत्ति (अपराविद्या) आश्रित धर्म्मरूप ऋष्यमूकपर्व्वत कि जहां अपराविद्या आश्रित धर्म्मशास्त्र पूर्व्वमीमांसारूप बालिकी गम नहीं तिसके ऊपर तत्त्वमस्यादि चार महावाक्यरूप हनुमदादि चार सहायक मन्त्रीसहित उत्तर मीमांसारूप सुग्रीवको स्थितदेख अपने उपलक्षण अरु स्वरूपलक्षणरूप वस्त्र भूषण उक्त रामजीका स्मरण कर डालतीहुई, इसप्रकार प्रारब्धकर्म के संस्कारवशात् पूर्व्वकी परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा वृत्तिरूपा सीताकोले अहंलक्षणात्मक मूलज्ञानरूप रावण अपनी आसुरी सम्पदारूप निशिचर करके युक्त शरीररूपा लङ्का में जाय प्राप्तहुआ । अरु उक्त सीता को अपने वश करने के लिये साम दाम भय देखावता हुआ, परंतु पतिव्रतनमें श्रेष्ठ अरु पुनः अनसूयाकरके पतिव्रतधर्मको उपदेश पाई जो उक्त सीता सो उक्त रावणके वश न हुई, तब उक्त रावण ने रजोगुणरूप सुन्दराचलके आश्रय स्वर्ग्गादिकों के दिव्य सुख-

दायक कामुककर्म समुदाय विद्यारूपा अज्ञानियों की अशोकवाटिकाके कामानुरागरूप अशोकवृक्षके नीचे उक्त सीताको स्थापित कर कामना तृष्णा हिंसा असूया आदि निशिचरियों को उसकी रक्षा अरु स्ववश करने के अर्थ आज्ञाकर आप अपने सामान्य अन्तःकरणरूप राजगृहमें जाताहुआ ॥

इति सीताहरणवर्णनन्नामदशमंप्रकरणंसमाप्तम् ॥

अथ रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डे रामविरहसीताऽन्वेषणवर्णनन्नामैकादशमप्रकरणंप्रारभ्यते ॥

१ श्रीगुरुरुवाच ॥ हे सौम्य! उक्त प्रकार रामजीके सीताहरण चरित्रके निमित्तसे जो देखाया तिसका लक्ष्य यहहै कि ज्ञानकर्म्मके समुच्चय सेवन करनेवाले क्षेत्रज्ञके पूर्वजन्मके सकामकर्म संस्कार उत्तर शरीरमें अपना फलदेने को सम्मुख होते हैं तब अपने कर्त्ता क्षेत्रज्ञकी पूर्व्वकी परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा 'जो अपरोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञाकी छायामात्रहै, तिसको ज्ञानप्राप्तिके साधनोंमें नामरूपात्मकरूप मृगके निमित्तसे विक्षेपकर उससे ज्ञान वैराग्यकी परोक्षता कराय अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञानरूप रावणके वश करतेहुये, अरु अपने कर्त्ता समुच्चय सेवी क्षेत्रज्ञ को पूर्व्वकी परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा जो आगे साधनोंकी सिद्धतासे अपरोक्षानुभूति साक्षात् ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा होनहाररही, सो वियोग कराय इसनामरूप क्रियात्मक दुःखमय संसारमें दीनभाव को प्राप्तकर भ्रमण करावै हैं, सो संक्षेपमात्र सूचित किया अब रामजीके विरह विलापरूप चरित्रोंद्वारा 'पूर्व के सकामकर्म्मके संस्कार जिसको उक्त प्रज्ञासे वियोग करावते हैं तिसने जिस प्रकार अतिखेद पूर्व्वकभी उक्त प्रज्ञाकी प्राप्त्यर्थ प्रथमसेही साधनोंमें पुरुषार्थ करना । अरु स्वर्ग्गकामाकर्मी ने अपनी पतिव्रता साध्वी स्त्री जो स्वर्ग्ग प्राप्तिके साधन यज्ञादिकों की प्रथम मुख्य सामग्री है, तिसके वियोग होनेसे स्वर्ग्ग प्राप्तिमें विघ्न जान तिसके अर्थ शोक विलाप करना। अरु यह जीव जो

वास्तवमें ब्रह्मरूपहै सो ब्रह्मसे पृथक् हुआ जिस प्रकार इसदुःखमय संसारमें आय अनेक क्लेश पाय पुनः आचार्य्यकी कृपासे ब्रह्मप्राप्तिका मार्ग्ग उपदेश होनेसे पुनः अपने ब्रह्मरूप देश को प्राप्त होय ब्रह्मही होताहै, सो श्रुतिके प्रमाण दृष्टान्तों करके देखाया जायगा ॥ हे सौम्य! उक्त प्रकार जब उक्त सीताके प्रेरणासे उक्त लक्ष्मणजी उक्त रामजीके समीप गये तब उनको दूरसेही आवते देख सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी आप अचिन्त्य होतसन्ते अपनी पूर्व्वकी परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा वृत्तिरूपा सीता के निमित्तकी चिन्ता करतेहुये उक्त लक्ष्मणसे कहनेलगे कि हे तात! हे लक्ष्मण! तुम मेरी आज्ञा को उल्लंघन उक्त सीता को अकेली छोड़आये सो श्रेष्ठ न किया क्योंकि इस संसाररूप अरण्यमें आसुरी सम्पदारूप निशिचर बहुत फिरते हैं अतएव मेरे मनमें अनुमान होताहै कि मुझ तुझसे पृथक् हुई सीता अब आश्रममें नहीं [अर्थात् मेरा अरु उक्त सीताका परस्परमें विषय विषयी सम्बन्ध होनेसे मेरामन उक्त सीताके निवास करनेका आश्रम है तहां अब मैं उक्त सीताको देखता नहीं अरु यो विज्ञानेतिष्ठन् "। इत्यादि प्रमाणसे मेरेमन को निवास करने को उक्त प्रज्ञारूप सीता आश्रम है तिसका अभाव मनको निश्चय होता है ताते उभय प्रकार अनुमान होताहै कि सीता आश्रममें नहीं इसप्रकार उक्त रामजीने कहा तब प्रणामकर हाथजोड़ उक्त लक्ष्मणजी विनय करतेहुये कि हे स्वामीजी! जब नामरूप क्रियात्मक विक्षेपरूप कपटमृग ने आपके शब्दके समान शब्दसे आरत पूर्वक मुझको पुकारा तब तिसको श्रवणकर उक्त सीताने मुझसे कहा कि तुम्हारेस्वामी को कोई बड़ासंकट प्राप्तहुआ है ताते वह तुमको पुकारते हैं अतएव तुम शीघ्र उनकेपास जावो, तब मैंने उससे विनय किया कि हे मातः! मेरेस्वामी शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव हैं उनको संकट स्वप्नमेंभी नहीं ताते तुम उन विषयक चिन्ता मत करो, तब हे नाथ! आप जिस प्रज्ञारूप सीतासे पृथक् हुये सो मुझको अकथनीय दुर्वाक्य कहनेलगी तब मैं उसको वन दिशाके

देवताओं को सौंप आपके श्रवण मननरूप रेखान्तरकर आपके निकट आयाहौं, इस प्रकार उक्त लक्ष्मणजी के कहे वाक्यों को श्रवण कर रामजी ने कहा कि हे भ्रातः! जिस उक्त प्रज्ञा रूप सीता से ज्ञान वैराग्यरूप हम तुम दोनों पृथक् हुये हैं तिसकी उक्त असुरों से रक्षा करने को वन दिशाओं के अधिष्ठातृ देवतादि कोई भी समर्थ होता नहीं अरु वो प्रज्ञा उक्त रेखान्तर भी रहती नहीं ताते यह निश्चय होताहै कि उक्त सीता अपने आनन्द मय आश्रम में नहीं, अरु जब तुम उक्त बहिर्मुख उक्त मृगासक्तहुई प्रज्ञाके कहने से यहां आये तब उक्त प्रज्ञाको अपने साथ क्यों न लेआये, इसप्रकार जब उक्त रामजी ने कहा तब उक्त लक्ष्मणजी पुनः विनय करते हुये कि हे नाथ! जो नामरूप क्रियात्मक असत्य मृगासक्त हुई परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा तिसको साथले आपके सम्मुख होना यह मुझ वैराग्यरूप सेवकका धर्म्म आपने निर्म्माण किया नहीं अतएव उक्त प्रज्ञा को अपने साथ न लेआवने से मुझको कुछ दोष नहीं इसप्रकार की उक्त लक्ष्मणजी की युक्ति श्रवणकर उक्त रामजी सहित अपने भ्राताके उक्त दशरथके प्रसंग से अपराविद्या रूप गोदावरी के तटपर आये अरु अपने उक्त आश्रम में देखा वहां अपनी सीताको न पाया तब उस प्रज्ञाके अभावसे प्राकृत दीन पुरुषोंवत् विलाप करते हुये कि हे सीते! हे सर्व्व विद्या विज्ञानरूप गुणकी खानि! हे सत्यगुणात्मक रूप शील स्वभाव नेम व्रतको धारण करनेवाली! अब तू कहां है अरु मैंने तुझको जिसपुरुषार्थ से अपने विषे प्राप्त किया है सो तुझको विदितहै अरु तूने अपने परमोत्तम अनुराग से मुझको अपने विषे प्राप्त किया है सो भी तुझको सम्यक् विदित है तब तू मेरे अरु अपने पुरुषार्थ अनुराग को स्मरण कर दर्शन क्यों नहीं देती, हे सीते! अब यह मेरा तेरा वियोगरूप उपहास करना तुझको उचित नहीं अतएव अब इस उपहास को त्याग प्रकट होय मुझसे आलिंगन करो, इत्यादि प्रकार सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी उक्त सीताके वियोगसे

विलाप करनेलगे तब उक्त लक्ष्मणजी ने समझाया कि हे स्वामी जी! उक्त प्रज्ञारूप सीताके अर्थ आप विलाप करते हौ सो उचितही है [अर्थात् हे सौम्य! उक्त लक्ष्मणजी के यह कहनेका तात्पर्य यह है कि जब स्वर्ग्गादिकों की कामना से यज्ञादि उत्तम कर्म्म के कर्त्ता के पूर्व्व कर्म्म के संस्कार वश उसकी साध्वी पतिव्रता स्त्री 'जो यज्ञादि कर्म्मकी मुख्य सामग्री है अरु जिसके विना पुरुषको यज्ञादि कर्म्म करने का अधिकार नहीं, तिसका किसी प्रकारसे वियोग होवे तो उस कर्त्ताको अपने परमपुरुषार्थ स्वर्ग प्राप्तिमें मुख्य विघ्नको देख अवश्य विलाप करना उचित है, अरु ऐसा स्वर्गकामा पुरुष अपने कर्म्मके फलकी यथेष्ट प्राप्ति में मुख्यविघ्न देख विलाप न करेगा तो क्या हर्ष मानके नृत्यादि मङ्गल करेगा, नहीं उसको विलाप करना उचितही है। अरु स्त्री को यज्ञादि कर्म्म करने में मुख्य सामग्री होने के विषयमें रामजी का उदाहरणही प्रमाण है कि जब रामजी ने लङ्कासे आय कुछ काल उपरान्त सीता को उसकी इच्छानुसार वाल्मीक्याश्रम में बिदा किया तिसके कुछकाल उपरान्त अश्वमेध यज्ञका प्रारम्भ किया तब सीताके अभाव में सुवर्ण की सीता बनाय सीताके स्थानापन्न उसको स्थापित कर यज्ञ किया अतएव यज्ञादि कर्म्म करने में साध्वी स्त्री मुख्य सामग्री है ताते उसके वियोगमें कर्त्ता को विलापका करना अनुचित नहीं] परन्तु अब उसकी प्राप्त्यर्थ विशेष विरह को त्याग पुरुषार्थ करनाभी योग्यही है, इस प्रकार सीताके वियोग से विलाप करते जे रामजी तिनको जब लक्ष्मणजी ने समझाया तब उक्त रामजी नदी वृक्ष मृगादिकों से पूछते सीता को अन्वेषण करने लगे तहां प्रथम अपरा विद्या (विहिताचरण) रूप गोदावरी के तट निकटआय कहते हुये कि हे गोदावरी! तू पुण्यरूपा तीर्थ है अरु सर्व्व का उपकार करनेवाली है अरु मैंने तेरे तट निवास कर बहुत सुख पाया है अरु अब मैं तुझसे प्रार्थना करता हौं सो श्रवण कर जो तेरे निकट तटपर वा तेरे अन्तर कहीं मेरी सीता होय तो मुझ

को बताव मैं उसको पाय इस शोकसागर से पार होऊं, इसप्रकार उक्त रामजी विलाप करत सन्ते उक्त गोदावरी के तट से आगे बढ़ वृक्षों से पूँछते हुये हे वट पिप्पलादि वृक्षो ! तुम शान्त स्वभाव परोपकारी हौ जीवों को विश्रामके लिये छाया अरु भोजनको फल देतेहौ अरु देवतावत् पूजनीयहौ अवएव जो तुम को हमारी प्राणप्रिया सीताकी ज्ञातहोय व तुम्हारे कोटरमें छिपी होय तो मुझको बतावो मैं उसको पाय इस विरहानल के ताप से निवृत्त होऊं, इसप्रकार विलाप करते जो रामजी सो वहां से आगे चल तब मृगको देख कहतेहुये कि हे बनके विचरनेवाले मृगो ! तुम्हारे नेत्रों के समान नेत्रवाली हमारी प्रिया सीता तुमने देखी होय तो मुझपर कृपाकरके कहो वो कहां है हे सीते ! अब तुमको विशेष हास्य करना उचित नहीं अब मेरी इस दशाको देख अपने दर्शनदे मुझको इस महान् क्लेशसे मुक्त करो [अर्थात् जो रामजी का सीता के विरहवश होय नदी वन मृग पर्वतादिकों से प्रश्नपूर्वक सीता का अन्वेषण करना है तिसका तात्पर्य्य यह है कि जिस मुमुक्षु की परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा प्राप्तहुई भी किसी पूर्वजन्म के मन्दकर्मों के संस्कार वश संसार विषयिणी होय जाती रहै तो उसकी पुनः प्राप्ति के अर्थ वैराग्य युक्त होय प्रथमसे ही तीर्थयात्रा देवदर्शन प्रतिमा पूजन आदि अपराविद्या आश्रित धर्माचरण करना क्योंकि निष्काम विहित कर्म्मादि बहिरंग अन्तरंग साधनकिये विना ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा प्राप्त होवे नहीं; अरु तिस विना पराशान्ति (मोक्ष) होवे नहीं, ताते उक्त साधन अवश्य कर्त्तव्य है 'जैसे रामजी ने अपनी बाल्यावस्था में ही संसारको अनित्य जान तिससे वैराग्यवान् होय प्रथम साधन तीर्थयात्रा देवदर्शन कथा श्रवणादि करते हुये, यह प्रसंग योगवाशिष्ठके प्रथम वैराग्य नाम प्रकरणमें है,] इसप्रकार आप्त काम सच्चिदानन्द रामजी जनहितार्थ समस्या रूप से उपदेश करते प्राकृत कामी पुरुषोंवत् विलाप पूर्वक सीता का अन्वेषण करते आगे बढ़े तब अपने पक्षके छेदनपूर्वक पर्वत

के समान देहवाले गृद्ध पक्षी को पड़ा देख लक्ष्मणजी ने अनुमान किया कि यह दीर्घकाय मांसाहारी पक्षी पड़ा है ताते सुकुमारी सीताको यह भक्षण करगया होगा, जब उसके निकट पहुंचे तब वहां टूटेहुये रथके ध्वजा छत्र चक्रादि चिह्न अरु धनुर्बाणादि शस्त्र देखते हुये अरु उक्त पक्षी ने रामजी को प्रणाम किया। तब रामजी ने अपना हस्तकमल उसके मस्तकपर फेरा तब वह उक्त रामजी के दर्शस्पर्श मात्रसे ही सर्वव्यथा से रहित सुखीहुआ [अर्थात् तपरूप जटायु जो उक्त सीता के निमित्त उक्त रावण से संग्रामकर मरण के निकट प्राप्त हुआ है तिसको उक्त रामजीने स्पर्श करके यह लखाया कि जो अन्यकामना को त्याग के केवल ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा की प्राप्ति के निमित्त तप आचरण है सो ईश्वरके यहां अङ्गीकार है अरु "यज्ञेनदानेनतपसानाशकेन" इत्यादि प्रमाणसे ज्ञान प्राप्ति का साधन है, अरु जब वो तप ईश्वर करके अङ्गीकार होता है तब तप आचरण के क्लेश सुखरूप होते हैं, यह जटायु के मस्तकपर रामजी के हाथ रखने का लक्ष्य जानना]॥

हे सौम्य ! उक्तप्रकार रामजी की विरहविलाप पूर्वक सीतान्वेषण करने रूप लीलाके प्रसंगसे जिस प्रकार यह ब्रह्म का आभास अंशरूप जीव ब्रह्मसे पृथक् हो इस नामरूप क्रियात्मक देह रूप अरण्यमें आय जब अतिक्लेश पावता है तब परमदयालु आचार्य्य की उपदेशात्मक दया से पुनः अपने ब्रह्मरूप देशको पाय सुखी होताहै सो रामजी ने अपने उक्त चरित्रों द्वारा लक्ष्य कराया है, तहां श्रुति दृष्टान्त पूर्वक कहती है। तथाच। "यथासौम्यपुरुषंगन्धारेभ्योऽभिनद्धाक्षमानीयतं ततो ऽतिजनेविसृजत्सय थातत्रप्राङ्वाउदङ्वा ऽधराङ्वाप्रध्मायीताभिनद्धाक्षआनीतोऽभिनद्धाक्षविसृष्ट १ तस्ययथाभिनहनं प्रमुच्यप्रब्रूयादेतांदिशं गन्धाराए तांदिशं व्रजेति सग्रामाद्ग्रामंपृच्छन् पण्डितो मेधावी गन्धारानेवोपसम्पद्येतैवमेवेहाचार्यवान् पुरुषो वेद तस्यतावदेव चिरंयावन्न विमोक्षेऽथ सम्पत्स्य इति २ सयएषोणिमैतदात्मामिदꣳ, सर्वं

तत्सत्य ॐ स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो इतिभूय एव माभगवान्विज्ञापयत्विति तथा सौम्येतिहोवाच ३ हे प्रिय दर्शन ! हे श्वेतकेतो ! एक समय गन्धारदेश के राजपुत्र को तस्करों ने हरणकर उसके नेत्रों पर पट्टी बांध उसके भूषण उतार अति विजन अरण्य में त्यागदिया तब वो राजकुमार बद्धनेत्र होने के कारण उस अरण्यमें कभी पूर्वदिशाको कभी पश्चिम कभी दक्षिण कभी उत्तर दिशाको जाता है अरु बद्धचक्षु होने के कारण यह जानता नहीं कि मेरा गन्धारदेश किधरहै अरु मैं किस दिशाको जाताहों अरु जिधर जाता हुआ तिधरही नेत्र बद्ध होनेके कारण कंटक पाषाण गर्तादि विषमस्थानों में गिरके अति दुःख पावने लगा तब रुदन पूर्वक पुकारके कहता हुआ कि देखो मुझ को तस्करोंने गंधार देशसे हरणकर मेरे चक्षुपर पट्टीबांध मेरे भूषण उतार इस महादुःख मय अरण्यमें छोड़दिया है हा ! बड़ा कष्ट है अब मुझको अपने देशका मार्ग सूझता नहीं मैं जिधर जाता हौं तहां दुःखही पावताहौं हा दैव ! अब मेरे इस क्लेश को देख दया करो, हे सौम्य ! इस प्रकार वो राजकुमार रुदन करता पुकार के विलाप करनेलगा तब उस अरण्य में किसी परमदयालु पुरुष ने उसके आर्त्तमय वाक्य श्रवणकर उसके समीप आय प्रथम उसके नेत्र खोल स्वस्थचित्तकर कहा कि हे राजकुमार ! अब तू रुदन मतकरे देख इस उत्तर दिशा में तेरे पिताका गंधार देश है अतएव अब तू इस मार्ग से अपने देश को जा अरु आगे तुझको एक ग्राम मिलेगा तिस ग्राम से तेरा देश तुझको दृष्ट आवेगा तब तू वहां से अपने देशका जाननेवाला बुद्धिमान् पंडित हो आगेचल अपने देशको प्राप्तहोय सुखी होवेगा, अतएव हे राजकुमार ! तू मुझकरके देखाये मार्गसे कहे प्रकार अपने देशको प्राप्त हो । हे सौम्य ! इस प्रकार जब उस अरण्य में राजपुत्र को परम दयालु आचार्य ने कहा तब तिसके कहे प्रकार मार्ग से चल प्रथम ग्राम में निवासकर पुनः वहां से आगे चल अपने देश को पाय पिताके निकट जाय सुखी होताहुआ ॥ हे सौम्य ! यह श्रुति-

युक्त दृष्टान्त तुमसे कहा अब इसके दृष्टान्तको श्रवणकरो हे प्रिय दर्शन ! यह शरीररूप गंधार देशहै तिस विषे सुषुप्तिरूप नगर है तिसका सत् चैतन्य आत्मारूप राजा है, क्योंकि । "स्वप्नान्तं मे सौम्य विजानीहीति" । इत्यादि प्रमाण से सत्की प्राप्ति सुषुप्ति में कही है ताते, तिसका चिदाभासरूप तू राजकुमार है अरु पाप पुण्यरूप दो तस्करहैं सो सुषुप्तिरूप नगरविषे छिपके रहतेहैं, अरु उक्त नगरके बाहरका स्वप्नरूप अवकाश (मैदान) है, अरु तिसके आगे जगत् रूप बड़ा गह्वर वन है तिसविषे आचार्य्य रूप परम दयालु पुरुष हैं, तहां पाप पुण्यरूप चोरोंने तमोगुणरूप अंधकार को पाय सुषुप्तिरूप नगरसे उक्त राजकुमार बालकको हरणकर उसकी ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञारूपा भूषणउतार उसके विवेकरूप चक्षु पर अज्ञानरूपा पट्टीबांध नानाकामनारूप रज्जुसे उसके शुभाचरण रूप दंड (बाहु) बांध इस जाग्रत्रूप अरण्य में उसको छोड़दिया है, अरु हे सौम्य ! यह जाग्रत्रूप वन कैसाहै कि जिस विषे सहस्रावधि प्रकार के अनेक वृक्ष हैं तिन विषे शब्द स्पर्श रूप रस गन्ध इन पांच विषयोंके भेदरूप अनन्त वृक्षहैं, अरु पुत्र मित्र कलत्र धन ग्राम पशु आदि सर्व उक्त अरण्य में किंचित् सुखरूप फल अरु छायाके दाता वृक्षहैं, परन्तु सोभी रागद्वेषरूपी कांटोंकरके युक्तहैं, अरु काम क्रोध मोह मद मत्सरतादि केवल दुःखदायक कीकर करोंजुआ कटेरी करील आदि वृक्षोंवत् क्लेश रूप कंटकमय वृक्षहैं, हे सौम्य ! उक्त प्रकार के वृक्षोंकरके स्वर्ग से पाताल पर्यंत व्याप्त यह जाग्रत्रूप वन है तिसका पारावार पायाजाता नहीं, अरु तिस वन विषे अहंकाररूप विषम पाषाण पड़े हैं अनेक प्रकार की आशारूप अनेक गर्त्तहैं अरु अनेक प्रकारकी चिन्तारूप विषधर भयानक सर्पादि कीट जीव हैं अरु इस वन विषे मृत्युरूप सिंह रात्रि दिन गरजताही रहता है अरु खांसी रूप वानर हैं ज्वररूप गीदड़हैं वातरूप रीछहैं कफरूप कीचड़ है जरारूपा राक्षसी अपना मुख पसारे जीवोंको भय देतीहै हे सौम्य ! इत्यादि प्रकार के वृक्ष पाषाण कंटक जीवों करके पूर्ण उक्त वन

होरहा है, अरु इस वनविषे अनेक प्रकार के कर्म उपासना अरु तिनके भेद सोई अनेक लोक रूप देशके प्रापक मार्ग हैं तिन विषे भी विधि निषेध कर्तव्य अकर्तव्य शुभाशुभ रूप कंटक कंकर पड़े हैं सो उन मार्ग में चलनेवालों को क्लेश देते हैं। हे सौम्य! ऐसा जो महाभयानक जाग्रत्रूप अतिगह्वर विषम अरण्य है तिस विषे चिदाभास रूप राजकुमार के उक्त चक्षु पर अज्ञान रूप पट्टीबांध उसकी उक्त प्रज्ञारूप भूषण हरण कर पाप पुण्य रूप तस्करों ने ल्याय डाला है तब यह बालक उक्त अरण्य विषे अपने नेत्र अरु हस्तबद्ध होने के कारण सत्यमार्ग से अज्ञात हुआ दुःख पावताहै अरु जिधरको जाताहै तिधरही उसको उक्त कंटक चुभते हैं उन कंटकों से अपने को बचाय सकता नहीं, अरु नेत्रहस्त बद्ध होने के कारण कभी शब्दके कभी स्पर्श के कभी रूप रस गन्धके वृक्षपर गिरता है तब उन वृक्षों के राग द्वेष रूप कंटक उसके चुभते हैं तब महान् क्लेश पायके रोवता है अरु जब उन वृक्षों के विषय सुखरूप फलको पावता है तब हर्षित होता है पुनः वहां से आगे चलता है तब कभी कामरूप करोंजुये पर कभी क्रोधरूप कीकर पर कभी लोभरूप करील पर इत्यादि प्रकार जे सुखरूप फलसे रहित केवल दुःखरूप कंटक करके पूर्ण वृक्षहैं तिनपर गिरताहै तब महत् कष्टको पाय पुकार के रोवताहै हा देव! अब मैं क्या करौं किधरजावों मैं जिधरजाता हौं तिधरही मुझको अति दुःखदायी कांटे चुभते हैं परन्तु मेरे नेत्र बद्ध होने से उन कंटकोंकी अरु मार्गकी मुझको ज्ञात होती नहीं हे देव! अब तू कृपाकर मुझको इस अनिवार्य्य दुःखसे मुक्त कर। हे सौम्य! उक्त कंटकों कृत पीड़ाके आगे इनजीवोंको नतो इस लोकका सुख है न परलोकका सुख है जहां जाते हैं तहां क्लेशही पावते हैं, अरु जब पुनः आगे बढ़ते हैं अहंकार रूप पाषाण की चोट लगने से मस्तक फूटजाता है तब पुनः पुकारके रोवताहै पुनः अन्य ओर चलताहै तब कभी तृष्णारूप अन्धगर्त विषे गिरताहै तब वहां उसको धन पुत्र कलत्र मित्रक्षेत्र आदिकों

की चिन्तारूप अनेक विषधर जीव डसते हैं तिनकी जलनकरके दिन रात्रि जलताही रहताहै, अरु जिस वस्तुकी इच्छा करता है तिसको अप्राप्ति होने करके अरु स्त्री पुत्र धनादिकोंके वियोगको पायके अत्यन्त दुःखित हुआ यह राजकुमार बालक पुकार के रोवताहै अरु हाय हाय करता है जन्मसे मरणपर्यन्त शान्तिसुख को पावता नहीं। हे सौम्य! इस प्रकार उक्त बालकको उस महान् क्लेशके समय अति उत्तम सञ्चित पुण्यकर्म्मों के प्रभाव से वा परमात्मा की कृपा से काकतालीन्यायवत् अकस्मात् परम दयालु श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ आचार्य्य उसको आय मिलता है तब वह कृपालु उस बालकका रुदन श्रवणकर कहताहै कि हे बालक! अब तू रुदन मत करे मैं आवता हौं ऐसा कह उस बालक के निकट आय प्रथम उसको आवान्तर वाक्य से ब्रह्मोपदेश कर उसकी आंखसे अज्ञानरूपी पट्टी खोलता है तब वह बालक परोक्षज्ञानरूप प्रकाशको पाय अपने विवेकरूप चक्षुसे उक्त अरण्य को देख तिसमें सत्यासत्यका विचार कर असत्यसे वैराग्यपूर्वक सत्य वस्तु की जिज्ञासा करताहै तब वह आचार्य्य कहता है कि हे पुत्र! हे प्रियदर्शन! अब जो तुमको सत् पिताके प्राप्त होने की इच्छा है तो इस वेदान्त शास्त्र के श्रवणरूप मार्ग पर[मननरूप [अर्थात्] ब्रह्म आत्मा के अभेदकी साधक अरु भेद की बाधक युक्तियों को विचारना तिसका नाम मनन है] चरणोंकरके जब तू चलेगा तब तुझको आगे एक निदिध्यासन रूपग्राम मिलेगा तहां तैं विश्राम करना अरु वहां से तुझ को तेरे पिता का नगर दृष्टि आवेगा तब तू अपने पिता के ग्राम के जाननेवाले मेधावी पण्डितोंसे पूछ आप मेधावी होय निदिध्यासन रूपग्राम से आगे बढ़ आनन्दमय कोश रूप गृहको प्राप्तहोय ब्रह्म आत्मा की अभेदता के अपरोक्ष अनुभवरूप राज सिंहासन पर बैठ इन्द्रादि सर्व राजाओंका महाराजाधिराज होय सर्वको अपनी आज्ञा विषे चलावेगा, अतएव हे राजकुमार! अब तू निर्भयहोय इस वेदान्त शास्त्र के श्रवणरूप रस्ते पर मननरूपपगों से चल अपने पिता के

देश को प्राप्त होय सुखी होवो ॥ हे सौम्य ! इस श्रुति के वाक्य-प्रमाण श्री रामजीने अपने मानुषी चरित्रोंवत् सीताहरण से अयोध्यागमन पर्यन्त चरित्रोंद्वारा अन्तरङ्ग उपदेश किया है अरु तिसहीद्वारा ज्ञान कर्म के समुच्चय सेवनकर्त्ता क्षेत्रज्ञ की गति देखाया है तिसका विचार उक्त प्रकारसमझना ॥

इति रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डेरामविरहसीतान्वेषण वर्णनन्नामैकादशंप्रकरणंसमाप्तम् ॥

अथ रामायणेऽध्यात्मगोचरे ऽरण्यकाण्डेरामकृतजटायुक्रियावर्णनन्नामद्वादशंप्रकरणंप्रारभ्यते ॥

१ श्रीगुरुरुवाच ॥ हे सौम्य ! उक्त प्रकार सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी व तिनके निमित्त से क्षेत्रज्ञरूप राजादशरथ अपनी हरणहुई जो परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा तिसको इस संसाररूप अरण्यमें अन्वेषण करते वृक्ष पाषाण मृगादिकों से पूछते [अर्थात् उक्त प्रज्ञाकी प्राप्त्यर्थ तीर्थयात्रा देवदर्शन प्रतिमा पूजनादि बहिरङ्ग साधन करते] तपरूप जटायु जो उक्तप्रज्ञाकी प्राप्ति में उक्त साधनों की अपेक्षा से विशेष साधन है, अरु जो उक्त प्रज्ञा की प्राप्त्यर्थ प्राणान्त क्लेश सहनेवाला, अरु पर (जिज्ञासु) का उपकार करनेवाला परोपकारी तिसके निकट जाय प्राप्त हुये ॥ यहां पर्यन्त दशरथ का विशेष व्यापार जानना ॥ अरु उसको दुःखित अरु अपने बिषे अनुरागवान् देख उक्त रामजी उसके मस्तकपर अपना हाथ रखतेहुये, तब वह सावधान चित्त होय उक्त रामजी से कहताहुआ कि हे जन्म मरणरूप क्लेश के हरणकर्त्ता ! हे भगवन् ! आपकी उक्त सीता को आपकी परोक्षता से अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञानरूप रावण हरणकर दक्षिणायनमार्ग रूप दक्षिणदिशा को लेगया है अरु जब मैंने उसको उक्त सीता को लिये जाता देखा अरु उक्त सीता का विलाप श्रवण किया तब उससे उक्त सीता को मुक्त करने के अर्थ बहुत युद्ध किया अरु एकबार सीताको छुड़ाय भी लिया परन्तु बहदुष्ट बल-

वान् होने के कारण मेरी यह दशा कर उक्त सीताको उक्त दिशा को लेगया है [अर्थात्] "देहाभिमानादपिवर्त्ततेक्रिया"। इत्यादि प्रमाणसे तपरूप जो क्रिया है सो देहादि अनात्म अभिमान के आश्रय होनहार है अतएव तपरूप जटायु अपने आश्रय अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञानरूप रावणको जयकरने में समर्थ न हुआ परन्तु "यज्ञेनदानेनतपसानाशकेन"। इत्यादि प्रमाणसे ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा की प्राप्तिमें बहिरङ्ग साधनहै। अरु मैं उक्त सीता के आशीर्वाद से आपके समक्ष सर्ववृत्तान्त कहनेके अर्थ अरु आपके दर्शनके अर्थ अद्यावधि जीवता हूं; अरु हे स्वामी ! अब मेरे प्राण इस शरीरसे उत्क्रमण होनेको उद्यतहैं। इसप्रकार जब उक्त जटायुने कहा तब रामजीने कहा कि हे तात ! जो आपकी इच्छा होय तो अभी कुछ काल पर्यन्त शरीरको धारणकिये रहिये तब पुनः जटायु कहताहुआ कि हे भगवन् ! श्रुति कहती है कि सर्वान्तर्यामी परमात्मा के नाम स्मरणमात्र से अधम भी मुक्त होते हैं सो आप घटवत् मेरे नेत्रके विषय हुयेहो अरु मैं आपको साक्षात् अवलोकन करताहों हे भगवन् ! अब मैं अपने परम कल्याणार्थ ऐसा समय पाय के भी अपना कल्याण, जो आपके दर्शनके प्रभावसे होनहार है, तिसको त्याग के इस तामस अधम शरीरको धारणकर इस दुःखमय संसार में जीवतारहों सो किस अर्थ रहों, इसप्रकार जब उक्त जटायु ने उक्त रामजी से विनयकिया तब उक्त रामजी पुनः कहतेहुये कि हे तात ! तुम जो उत्तमगति स्वर्ग ताको प्राप्त होगे सो अपनी उत्तम करनी के प्रभावसे होगे [अर्थात् तपरूप तुम्हारा परमपुरुषार्थ स्वर्ग प्राप्ति है सो तुमको तुम्हारे प्रभावसे प्राप्तही है] अरु हे तात ! जिनके हृदयमें परोपकार निवास करता है तिसको इस संसार में कोई पदार्थ दुर्लभ नहीं अरु आप तो मेरे उपकारार्थ अपने प्राणपर्य्यंत त्यागतेहो अतएव जो आपको परमोत्तमगति प्राप्तहोय तो क्या आश्चर्य है कुछभी नहीं हे तात ! अब तुम अपने इस शरीर को त्याग मेरे स्वर्गलोक धामको प्राप्तहोवो। अरु हे तात ! यह जो सीताका

हरणहुआ है सो हमारे पिता आपके सखा महाराज दशरथ से आप कहना नहीं जो मैं रामहौं तो उक्त रावण सपरिवार स्वर्गमें आय अपना सर्व वृत्तान्त निवेदन करेगा ॥

२ हे सौम्य! उक्तप्रकार जब उक्त रामजीने उक्त जटायुसे कहा तब उसने सावधानहोय राममूर्त्तिको अपने हृदयमें धार अपने शरीर को त्यागता हुआ, अरु रामजी की कृपासे सारूप्य मुक्ति पाय वहीं स्थितहोय उक्त रामजी की स्तुति करताहुआ हे राम! आप अपने निर्गुण अरु सगुण दोनों रूप से अनुपम हौ [अर्थात् न तो कोई आपके इस सगुणरूप को उपमा देने योग्य है न कोई आपके निर्गुणरूप को उपमा देने योग्य है अतएव आप अपने दोनोंरूप करके अनुपम हौ [अरु पुनः सर्व के प्रेरक हौ] अर्थात् धर्मादिकों की रक्षाके अर्थ इस विशेष अवतार रूपसे प्रकटहोय अपने चरित्रोंद्वारा ऋषि मुनि आदिकों को धर्म में प्रेरकहौ, अरु अपने निर्विशेष आत्मरूप से मन प्राण इन्द्रियादिकों के प्रेरकहौ, अरु पुनः आपके श्रुतिवाक्यरूप बाण उक्त रावणके उक्त मस्तक भुज छेदनपूर्वक धर्मरूप धरणी के मण्डन करता हौ, अरु आप अपने इस विशेष स्वरूप से मेघ श्याम शरीर कमलवत् कोमल मुख अरुण कमलवत् अरुण विशाल नेत्र के धारणकर्त्ता हौ, अरु आपका अप्रमेयबल (पुरुषार्थ) है, अरु हे राम! आप अपने वास्तविक स्वरूप से आदि अन्तसे रहित अनादि हौ, अरु इसहीसे जन्मादि रहित अजहौ अरु जिसकरके अजहौ तिसहीसे व्यक्ति रहित अव्यक्त निराकारहौ, अरु सजातीय विजातीय स्वगत भेद रहित एक अद्वैतहौ एतदर्थही मनवाणी आदिकोंका विषय नहीं ताते प्रत्यक्षादि प्रमाणों का अविषय हौ तिस आपका सदा जय होय अरु हे नाथ! आप गोविन्द [अर्थात् वेदान्त शास्त्र करके जानने योग्य] हौ, अरु इन्द्रियादिसंघात अरु स्वर्गादि लोकसे परहौ अरु द्वंद्वरूप अज्ञानके हरणकर्त्ता हरिहौ, अरु जैसे सैंधव लवण रसघन होताहै तैसे आप विज्ञान (चैतन्य) घनहौ, अरु धरणीके धारणकर्त्ताहौ [अर्थात् धरणी (पृथिवी) उपलक्षण करके यावत् सूर्य चन्द्रादि लोकहैं तिन सर्व को अपनी एक आकर्षण शक्ति में रखनेवाले सर्व के भूमा आधारहौ तिस आपका सदा जयहोय अरु जिस आपके नामात्मक मन्त्रको जपनेवाले जे शेषनागादि सन्त हैं तिनके मनको रंजन (हर्ष) कर्त्ता हौ, अरु हे राम! आप नित्यही नमस्कार करने योग्यहौ, अरु जो आपको कामनासे रहितहुये सेवते हैं सो सेवक आपको अति प्रिय हैं, अरु उनके काम क्रोधादि आसुरी सम्पदारूप दुष्टों के आप नाशकर्त्ता हौ तिस आपका सदा जय होय, अरु हे भगवन्! जिसको श्रुति या ब्रह्म व्यापक अज अनन्त सत्य चैतन्य आनन्द निर्गुण आदि विशेषणोंसे निरन्तर प्रतिपादन करतीहैं अरु जिसको विवेक वैराग्य ध्यान धारणादि अनेक साधन करके मननशील पुरुष अपने आप बिषे "सोहमस्मि" भावसे पावते हैं सो करुणाकी वर्षा करनेवाले मेघ आप विशेषरूपसे प्रकटहोय शोभा के सार अपने स्वरूपसे सर्वको मोहित करतेहौ, अरु अपनेस्वरूप शोभा करके अनन्त कामदेव को लज्जितकर्त्ता आप मेरे हृदय कमल में भ्रमरवत् निवासकरो आपका सदा जयहोय, अरु जो शास्त्रकरके सुगम अरु जो अज्ञानियोंको अगम अरु ज्ञानवानोंको सुगम अरु अपने स्वरूप करके अविद्यादि मलसे रहित। "शुद्धमपापविद्धम्"। निर्मल अरु भेद भाववालेको असम अरु अभेद भाववालेको सम भासनेवाले अरु सदा शान्तमूर्त्ति तिस आपका सदा जयहोय अरु जिसको योगीजन अपने मन इन्द्रियादिकोंको वशकर निर्विकल्प समाधिमें आत्मभावसे साक्षात् अनुभव करते हैं, सो त्रैलोक्याधिपति रमानिवास आप रामजी सो निरन्तर अपने सेवकके वश होतेहौ, अरु जिसकी कीर्त्ति सर्व पापोंका नाश करनेवाली परम पावनहै, अरु वारंवार जन्म मरण रूप संसृति को शमन करनेवाली है, सो आप मेरे हृदय में ध्यान रूप से अरु संसृति रूपसे निरन्तर निवासकरो आपका सदा जयहोय २। हे सौम्य! इसप्रकार गृध्र जटायु रामजी की स्तुतिकर उनसे अविरल (अनिवार्य निरन्तर) भक्ति वरमांगि स्वर्गको गमनकरताहुआ,

तदनन्तर रामजी उसकी पारलौकिक पिंडदानादि क्रिया अपने हाथसे करतेहुये॥ [अर्थात् जिस जटायु ने रामजी की सीता को रावणसे छोड़ावने के अर्थ युद्धकर अपने प्राण पर्यन्त को त्याग किया तिसका उपकार अपने ऊपर मानके रामजी ने अपने हाथसे उसकी पारलौकिक क्रियाकर उसको स्वर्गप्राप्तिरूप प्रतिउपकार किया, अतएव इस प्रसंगसे सूचितकिया कि जो कोई अपने साथ उपकार करे तिसके साथ उससे भी अधिक प्रतिउपकार करना सर्व को उचित है कृतघ्नी न होना इति सिद्धम्॥

इति रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डेरामकृतजटायुपार
लौकिकक्रियावर्णनन्नामद्वादशंप्रकरणंसमाप्तम्॥

अथ रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डे रामशबरी समागमवर्णनन्नामत्रयोदशंप्रकरणम्प्रारभ्यते॥

१॥ श्रीगुरुरुवाच॥ हे सौम्य! उक्त प्रकार सम्यक् विशेषज्ञान रूप रामजी उक्त पंचवटी में अपनी ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञावृत्तिरूपा सीताको अन्वेषण करते वृक्ष पाषाण मृगादिकोंसे पूछते विलाप करते तपरूप जटायु के समीप आय उससे उक्त सीताका अहं-लक्षणात्मक मूलाज्ञानरूप रावणद्वारा हरणहुआ श्रवणकर पश्चात् उक्त जटायु की क्रिया अपने हाथसेकर उसको स्वर्गप्राप्तिकराय उस द्वारा तपका फल स्वर्गप्राप्ति लोकविषे प्रख्यातकर उसके उपकार से अऋणीहोय आगे को चलतेहुये। सो कैसे हैं रामजी कोमलचित्त अतिदीनोंपर दयाके करनेवाले हैं सो अपने प्रयोजन विनाही मुमुक्षुओंपर दयाकरते हैं [अर्थात् जो निष्काम मुमुक्षु होताहै तिसपर अपने प्रयोजन से रहित उक्त रामजी कृपा करते हैं] देखो पक्षियों में अधम मांसाहारी तामसयोनि गृध्र तिसको उक्त रामजी ने सो गति प्राप्तकिया कि जिसको कर्मयोगी वा तपयोगी इच्छतेहैं। हे सौम्य! शिवजी कहते हैं कि हे उमा! वह पुरुष जो सम्यक् ज्ञानस्वरूप रामजी को त्यागके विषयानुरागी होतेहैं सो परम अभागी (हतभाग्य) हैं उनका कल्याण कदापि

होता नहीं हे सौम्य! पुनः उक्त रामजी दोनोंभ्राता इस संसाररूप महाभयानक अरण्यमें कि जिसमें आशारूपा लतारागद्वेषसंयोग वियोगरूप कांटोंकरके युक्त जे पंचविषयरूप वृक्षोंका संघट्टहोरहा है तिनपर पसर रहीहै, अरु जहां मदरूप हस्ति विचरतेहैं काल रूप सर्प फिरते हैं, प्रमाद रूप अजगर पड़े हैं, रोग रूप गीदड़ बोलतेहैं, मृत्यु रूप सिंह गरजते हैं तिस वन के कर्म उपासना रूप मार्ग में चलते उक्त सीताको अन्वेषण करते फिरते हैं, तिस ही अवसर में कर्म बन्धरूप कबन्ध नाम राक्षस जो पूर्व जन्मका गन्धर्व था [अर्थात् वो कर्म जो देव गन्धर्व लोकको कि जहां इस मनुष्यलोकके चक्रवर्त्ती राज्य सुखसे तीन सौ गुना आनन्द अधिक है तिसकी; प्राप्तिकरनेवाला, अरु मुमुक्षुओं को बन्धनका कारण, ऐसा जो देव गन्धर्व लोकका प्रापक कर्मसो कबन्धअसुर] सो दुर्वासा [अर्थात् कर्म अरु कर्म के फल तिनसे पृथक् है वास तिसका ऐसा ज्ञानकांडरूप दुर्वासा] मुनि तिसके। "नकर्म्मिणः प्रवेदयन्ते रागात्तेनातुराक्षीणलोकाश्च्यवन्ते"। इत्यादि वाक्य रूप शापसे। "असूर्य्यानामतेलोका"। इत्यादि प्रमाण से असुर भावको प्राप्त हुआ है अरु उसकी विधि निषेध रूप दो भुजा अति विशाल पसरी हुईहैं, सो, उक्त सीता को अन्वेषण करते फिरते जे उक्त रामजी तिनको अपनी उक्त भुजान्तरकर अपनी ओर को आकर्षण करता हुआ, तब उक्त रामजी ने। "नकर्म्मणा"। अरु। न कर्म साधनम्"। इत्यादि प्रमाण वाक्य रूप खड्ग से उसका बाध रूप वध किया, तब वो अपने कर्मकांड वेदरूप पूर्व रूप को पाय अपने शाप की कथा श्रवण कराय ज्ञान द्वारा अपने शापसे मुक्तहोय उक्त रामजी को प्रणामकरता हुआ, तब उक्त रामजीने कहा कि हे गन्धर्व! मुझको ब्रह्मवेत्ता का द्रोही सोहता नहीं अरु जो ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मण से द्रोह करताहै सो साकिल्यवत् अपने विनाशको पावताहै 'यह प्रसंग बृहदारण्य उपनिषद्के पंचमाध्याय में है, अरु हे गन्धर्व! जो पुरुष सर्व छलको त्याग सरलचित्त श्रद्धा-

न्वितहोय काया वाचा मनसा तीनों प्रकार ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मण की सेवा करते हैं तिनके वश मुझ समेत शिव विरंचि आदि सर्व देवता होतेहैं; जैसे अत्रि मुनिके वश ब्रह्मा विष्णु रुद्र तीनों हुये तैसे;। "सर्व्वे देवा वेदविद्ब्राह्मणे वसन्ति"। "आत्मविदर्चयेद्भूति कामः"। इत्यादि प्रमाणसे ब्रह्मवेत्ता ब्राह्मण सर्वप्रकार पूजनीयहै॥

२ हे सौम्य! उक्त प्रकार सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी उक्त गन्धर्वसे कहके पुनः कहतेहुये कि हे गन्धर्व! वेदशास्त्र सन्त ऐसा कहते हैं कि जो कदापि ब्राह्मण शापदे वा ताड़नाकरै वा पारुष्य वाक्य कहे तो तिन सर्वकों सहन करत सन्ते ब्राह्मण सर्व प्रकार पूजनीयहै, अरु जो कदापि ब्राह्मण अपने स्वाभाविक जे। "शमो दमस्तपःशौचं शान्तिरार्जवमेवच, ज्ञानंविज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मक र्म्मस्वभावजम्"। इत्यादि प्रमाणसे शम दम तप आदिक असाधारण गुण कर्म्म हैं तिनसे रहित भी होय परन्तु वह जातिमात्र सेही उत्तम होनेके कारण पूजनीयहै; क्योंकि। "अग्निर्वैदेवेषुब्रह्माभवद्ब्राह्मणोमनुष्येषु"। इत्यादि श्रुति प्रमाणसे मनुष्यों में ब्राह्मण जातिमात्रसेही सर्व्वसे श्रेष्ठहै ताते; अरु हे गन्धर्व! शूद्र जातिका मनुष्य जो कदापि अपने से पर ब्राह्मणके गुण कर्म धर्म ज्ञानादि करके सम्पन्नभी होय तथापि वह पूजनीय नहीं; क्योंकि वह उसके असाधारण धर्म नहीं ताते; अरु। "स्वधर्मेनिधनंश्रेयःपरधर्म्मोभयावहः"। इत्यादि प्रमाणसे उस ब्राह्मणके धर्म्म को धारण करता शूद्र को उसके कर्म्म परलोकमें नरकादिके भय देनेवाले होते हैं अरु हे गन्धर्व! जो सर्व्वजीवोंके कल्याणार्थ दैवी सम्पदारूप निजधर्म्म हैं तिसको धारनेवाला जो कदापि जाति करके नीचभी होय तथापि मैं उसकी जाति को न विचार उसको अङ्गीकार करताहौं अतएव मेरे यहां अङ्गीकार होनेमें दैवी सम्पदारूप धर्म्महीं मुख्य कारणहै इसप्रकार जब उक्त रामजीने कहा तब तिसको श्रवणकर उक्त गन्धर्व अतिप्रसन्न होय निरहंकारतादि दैवी सम्पदारूप धर्म्म अपने विषे धारता हुआ उक्त रामजी को

प्रणामकर आकाश (अन्तःकरणके मार्ग्गहो अपने फलाकांक्षी सरूप लोक को प्राप्त होता हुआ हे सौम्य! उक्त प्रकार उक्त रामजी उक्त गन्धर्वका शापोद्धारकर पुनः सीतान्वेषण करते आगे ज्ञान योग संयुक्त अभेद अनन्य परमोत्तम भक्तिरूपा शबरी तिसके आश्रम को पगधारतेहुये तब उक्त शबरीने देखा कि। "आकाशशरीरंब्रह्म"। इत्यादि प्रमाणसे गगन सदृश श्यामसुन्दर भगवान् रामजीने मेरे सत्वगुणात्मक अन्तःकरणरूप आश्रमपर आवते हैं अरु मुझको मेरे गुरु वेदरूप मातङ्ग ऋषिने कहाहै कि विवेकादि धर्म्मादिकोंकी रक्षार्थ अरु अहंकारादि दुष्टोंके विनाशार्थ शरीररूप अवधके पति क्षेत्रज्ञरूप महाराज दशरथके यहां चैतन्य परमात्मा विशेष ज्ञानरूपसे अवतार धारण करेंगे अरु राम (ज्ञान) इसनाम से विख्यात होंगे, अरु वह अपने पिताकी आज्ञानुसार संसाररूप वनमें वासार्थ आय पञ्चीकृत पञ्चभूतात्मक शरीररूप पञ्चवटीमें निवासकरेंगे तहां उसकी ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञारूपा सीता नाम्नी स्त्री को अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञानरूप रावण हरण करेगा तब वह उक्त सीता को अन्वेषण करते इस उक्त आश्रम पर आवेंगे। सो अब गुरुका वाक्य सिद्ध हुआ, ऐसा विचार उक्त शबरी अपने उक्त आश्रमपर खड़ी होय उक्त रामजी को अवलोकन करनेलगी सो कैसे हैं रामजी श्यामसुन्दर कमलवत् विशाल नेत्र आजानु बाहु जटा मुकुटके धारणकर्त्ता धनुर्बाण हाथमें लिये वनमाला धारण किये श्याम गौर ज्ञान वैराग्य दोनों भ्राता इस आश्रमपर चले आवते हैं, तब उक्त शबरी उक्त रामरूप को अवलोकन करती उक्त गुरुके वाक्यसे उनको साक्षात् सच्चिदानन्द ब्रह्म जानती ब्रह्मानन्दमें मग्न होय अपने उक्त आश्रम से निदिध्यासनकी ओर दौड़ उक्त रामजीके समीप आय साष्टाङ्ग प्रणामकर उनके अद्वैतत्त्व आनन्दत्त्व रूप उभय चरण को ग्रहण करती हुई अरु उसको उक्त रामजीके साक्षात् दर्शस्पर्श होनेके प्रभाव से ऐसा आनन्द बढ़ा कि तिस करके उसकी वाणी गद्गद होने से बोला

जाता नहीं रोमाञ्च अङ्गमें होआये नेत्रसे प्रेमाश्रुका प्रवाह चलने लगा, अरु वारंवार उक्त रामजीके उक्त चरणोंमें प्रणाम निश्चय करतीहुई, तदनन्तर उक्त राम लक्ष्मण दोनों भ्राताओं को अपने आश्रमपर पधराय उनके पद (उक्त चरण) को अपनी श्रद्धा रूप जलसे प्रक्षालनकर उनको अपने विश्वास रूप आसन पर सुशोभितकर आप अपने उक्त आश्रमके निकट जो अनेक जन्मों के पुण्य कर्मोंके सञ्चित संस्काररूप बदरी फलके वृक्ष हैं तिनमें से जिन वृक्षों के मधुर फल कि जिसको वो पूर्वसेही जानती है कि इन कर्मरूप वृक्षों के फल अति मधुर हैं तिनको सहित अपने इस जन्म के योग तप समाधि आदि शुभ कर्मरूप कन्दमूलादिकों के उक्त रामजी के सम्मुख अर्पणकर उनका आतिथ्य करती हुई, तब उसके शुद्ध भक्ति भावसे अर्पणकिये उक्त कन्दमूल फलादिकों को उक्त रामजी अति स्वादसे पावतेहुवे अरु उक्त शबरी महाराज रामजी के सम्मुख "सोहमस्मि" भावसे बैठ अति प्रेमसे धीरे धीरे अनुभवरूप पङ्खा करती हुई अरु उसकी शुद्ध अनन्य श्रद्धाभक्तिको अवलोकन कर उक्त रामजी उसके फलकी प्रशंसा करते हुये । हे सौम्य ! बहुत से लोगों ने ऐसा प्रख्यात किया है कि शबरी ने अपने उच्छिष्ट बेर रामजीको अर्पण किये, सो बने नहीं क्योंकि वह शबरी मातङ्गऋषिके सत्संगके प्रभावसे सज्ञातहुई सर्वधर्मको जानतीरही अतएव उसने रामजी को जो फल अर्पण किये सो उन वृक्षों के किये कि जिनके फल आप पूर्व्व खायके मधुर जानती रही, उसने कुछ अपने दांतके काटे बेर रामजी को अर्पण किये नहीं ॥

२ हे सौम्य ! उक्त प्रकार जब उक्त शबरी ने उक्त रामजी का पादप्रक्षालनादि पूजनकर उनका उक्त कन्दमूल फलादिकों से आतिथ्य किया अरु उक्त रामजी ने अति आदर स्वाद से उक्त फलादि भोजन किये, तदनन्तर उक्त शबरी उक्त रामजी के सम्मुख खड़ीहो हाथजोड़ अतिदीनभावसे विनय करतीहुई कि

हे नाथ ! मैं आपकी स्तुति करने को समर्थ नहीं, क्योंकि आप मन वाणीका विषय नहीं, अरु जो आप अपने इस विशेषरूप से मेरे सम्मुख चक्षु मन वाणीका विषय हुये स्थितहो तौ भी जो आपका भक्तवत्सलतादि अमित गुण प्रभाव है सोभी मन वाणी का विषय नहीं ताते, अरु मैं वेदाध्ययनादि संस्काररहित अधम स्त्री हौं अरु तिसमें भी महाअधम शबर जातिकीहौं अरु अतिमन्द मतिहौं एतदर्थ भी मैं आपकी स्तुति करनेयोग्य नहीं इसप्रकार से जब उक्त शबरी ने विनय किया तब तिसको श्रवण करके उक्त रामजी अपनी मधुरवाणी से कहते हुये कि हे भामिनि ! हे शबरी ! अब जो मैं कहताहौं सो श्रवणकर, हे उक्त मातङ्गऋषि का सत्संग करनेवाली ! मैं केवल एक शुद्ध अनन्यभक्तिकाही सम्बन्ध मानताहौं, अरु जो पुरुष जाति कुल गोत्र अपरधर्म्म धन बल विद्या गुण ज्ञानकरके सम्पन्नहोय अरु उसमें एक शुद्ध अनन्यभक्ति न होय तो वह पुरुष कैसा होताहै, जैसे जल से रहित देखनमात्र सुन्दर मेघ होताहै, अरु जैसे जलविनाका मेघ निरर्थक होताहै तैसेही भक्तिहीन पुरुष की जो कुछ चेष्टा है सो सर्व्वनिरर्थकहै, अतएव हे शबरी ! मैं तुझको नवधाभक्ति रूप धर्म्म उपदेश करताहौं, जो । "स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेपि यान्तिपराङ्गतिम्" । इत्यादि प्रमाणसे स्त्रीआदि सर्वका परमकल्याण करता है अरु सो संस्काररहित पुरुषोंकाभी कल्याणकारी है, हे सुशीले ! प्रथमभक्ति सत्संग है, अरु दूसरी मेरे परमार्थ बोधक चरित्रोंका श्रवणहै, अरु मानादिक सर्व्व विकारसे रहित होय जो गुरुकी सेवाकरनी है सो तीसरी भक्तिहै, क्योंकि । "गुरुर्ब्रह्मागुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवोमहेश्वरः । गुरुःसाक्षात्परब्रह्म तस्मैश्री गुरवेनमः" । इत्यादि प्रमाणसे गुरु साक्षात् मेराही स्वरूप है ताते जो गुरुकी सेवा है सो मेरीही सेवा है, अरु । "यस्य देवे पराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ । तस्यैतेकथिताह्यर्था प्रकाश्यन्तेमहात्मनः" । जिसको ईश्वरके समान अपने गुरुमें भक्ति होती है

तिसको गुरुकरके कहे उपदेशात्मक सूक्ष्मवाक्य अपने अर्थ (लक्ष्य) को प्रकाशते हैं, ताते गुरुभक्ति सर्वोपरि है, अरु चतुर्थ भक्ति मेरे गुणोंका वा स्वरूपका वर्णन वा मनन करनाहै ॥

४ हे सौम्य! उक्त प्रकार उक्त रामजी उक्त शबरीसे कहके पुनः कहतेहुये कि हे शबरी! मेरे रामतारकमन्त्रका वा प्रणव का जो शुद्धमनसे अर्थ विचारपूर्व्वक जप करना है सो पञ्चमभक्ति है, अरु अपर धर्माश्रितकर्मसे वैराग्यपूर्वक शम दमादियुक्त सत्य परधर्म (दैवीसम्पदाका आचरण है) सो छठईं भक्ति है अरु सम्पूर्ण जगत् को मेरा स्वरूप जान सर्वत्र मेरी भावना करनी सो सप्तम भक्तिहै, अरु प्रारब्धवशसे जैसा कुछ सुख दुःख हानि लाभ आय प्राप्त होवे तिसको राग द्वेषसे रहित होय अभिमान रहित भोगना अरु पराये दोष को न देख केवल गुण को, दत्तात्रेयजीवत् ग्रहण करना सो अष्टम भक्तिहै, अरु हे सौम्य! हे शबरी! सर्व सो सर्व प्रकारका छल त्याग सरलभावसे रहना अरु हर्ष शोकसे रहित होय सर्व कार्य्यमें मेरा भरोसा रखना सो नवम भक्ति है। हे शबरी! इन नवो भक्तिमें से एकभी जिस स्त्री वा पुरुष को प्राप्तहुई है सो मुझको अतिशय प्रियहै, अरु तुझको तो अपने गुरु उक्त मातङ्गऋषिकी कृपासे नवो भक्ति प्राप्तहै ताते जो तू मुझको प्रिय है तिसमें क्या आश्चर्य्य है किन्तु कुछभी नहीं अरु हे शबरी! जो गति आसन प्राणायाम प्रत्याहार ध्यान धारणा समाधिके करने वाले योगियों को भी दुर्लभहै सो आज तुझको तेरी भक्तिके प्रभावसे मेरे साक्षात्कार होनेसे प्राप्तहै, अरु हे शबरी! मेरे साक्षात्कार दर्शनके प्रभावसे जीव अनुपम फल जो अपने आप ब्रह्मसे अभिन्न स्वरूप भावकी प्राप्ति सो पावताहै ॥ अरु हे भामिनि! जो तुझको हमारी प्रिया उक्त जनकसुता सीताकी खबर होय तो मुझको बतावो, इसप्रकार जब उक्त रामजीने उक्त शबरीसे प्रश्न किया तब उक्त शबरी हाथ जोड़ कहतीहुई कि हे वेदार्थरूप रघुकुलके प्रकाशक भानु! यहांसे आगे थोड़ीदूर अन्तरङ्ग साधन-

रूप पम्पासरहै वहां आप पगधारिये वहां आप को उत्तर मीमांसारूप सुग्रीवनाम वानर मिलेगा अरु उससे आपसे परस्परमें प्रतिपाद्य प्रतिपादक सम्बन्धरूप मित्रता होगी तब वह आपसे उक्त सीताके सर्व्व समाचार कहेगा अरु उसकी सहायतासे उक्त सीता आप को मिलेगी, हे भगवन्! यह मैंने अपने उक्त गुरु महाराजसे आपके भविष्यत् चरित्र श्रवण किये रहैं, अरु हे स्वामी! आप सर्वान्तर सर्वज्ञ होतसन्ते भी सीताके विषयमें मुझसे प्रश्न करतेहौ यही आपकी विशेषता अरु मायाहै तिसही करके आप अपने स्वाभाविक सर्वज्ञतादि लक्षणरूप गुण तिरोधानकर प्राकृत पुरुषोंवत् विलापचेष्टा करते विचरतेहौ, इसप्रकार उक्त शबरी रामजीसे कहती प्रणाम करती सर्वकथा श्रवण करावतीहुई, तदनन्तर उक्त गुरुकृपासे योगमार्गकी जाननेवाली उक्त शबरी उक्त रामजीका सत्ता समानरूप मुख अवलोकनकर उनके उक्त पदपंकज अपने हृदयमें धर अपने अन्तरके सूक्ष्म विचाररूप वैश्वानर नाम अग्नि को विशेष प्रकटकर उस योगाग्निमें अपने शरीर को भस्म करती आप समुद्रमें नदीवत् उक्त रामजीमें अभेद लीन होतीहुई ॥

५ हे सौम्य! उक्त प्रकार शबरीके प्रसङ्गसे श्रीरामजीने सर्व्व पुरुषों को समान जो दैवीसम्पदारूप असाधारण धर्म तिसका महत्त्व देखाया है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र यह चारवर्ण अरु ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास यह चारआश्रम इनका जो पृथक् २ धर्म है सो साधारण धर्म है क्योंकि इनके परस्परमें व्यभिचार है ताते, अरु। "एतेपुण्यलोकाभवन्ति"। "विद्ययादेव लोकः"। "कर्मणापितृलोकः"। इत्यादि प्रमाणसे केवल उस धर्म का ब्रह्मलोक स्वर्गलोक पितृलोक इनकी प्राप्तिही फलहै, अरु दैवी सम्पदारूप जो सर्वको समान अव्यभिचारी असाधारण धर्म है तिसको ईश्वरकी प्रसन्नतारूप फलहै ताते सो उत्तमहै, अरु जैसे चूल्हेमेंकी जरती लकड़ी हाथमेंले उसको घुमावनेसे उसके मुख

पर लगा जो अग्निविन्दु सो चक्राकार न हुआ भी चक्राकार हुआ भासता है तहां उस काष्ठके भ्रमणमें जो अग्नि चक्राकार भासताहै सो उस चक्र में अग्निका अन्वयहै ताते अग्निबिन्दु सत्यहै, अरु अग्निबिन्दुके बिषे उस चक्रका व्यतिरेक है ताते वह चक्र अग्निबिन्दुमें असत्यहै तैसेही अग्निहोत्रादि धर्म जो वर्णाश्रमके भेदसे पृथक् २ परस्परमें व्यभिचारी हैं तिन सर्वके मध्य सत्यभाषण दया आर्जवता अमानित्वादि दैवीसम्पदारूप धर्म का अन्वय (विधि) है ताते सो धर्म सत्य (मुख्य) है अरु दैवी सम्पदारूप धर्ममें यज्ञ अग्निहोत्रादि कर्मरूप धर्मका व्यतिरेक अविधिहै [अर्थात् आवश्यकता नहीं] ताते सो असत्य (गौण) है [अर्थात् अग्निहोत्रादि साधारण धर्ममें "अमानित्वमदम्भित्वमहिंसाक्षान्तिरार्जवम्। आचार्योपासनंशौचं स्थैर्य्यमात्मविनिग्रहः "। इत्यादि दैवीसम्पदारूप धर्म्मकी विधिहै, अरु दैवीसम्पदारूप असाधारण धर्ममें यज्ञादि धर्मकी विधि नहीं] ताते। "दैवीसम्पद्विमोक्षाय "। इत्यादि प्रमाणसे दैवीसम्पदारूप धर्म मुख्य अरु मोक्षका कारण होने से उत्तमहै, अरु यज्ञादि कर्मरूप धर्म पुण्य लोक जो। "पुण्यचितोलोकःक्षीयते "। इत्यादि प्रमाणसे परिणामी नाशवान्हैं तिनके प्रापक हैं ताते गौणहै-अरु यज्ञ अग्निहोत्रादि कर्मरूप जो धर्म है सो। "देहाभिमानादपिवर्त्ततेक्रिया"। इत्यादि शब्द अरु प्रत्यक्ष प्रमाणसे असत्य अनात्मा देहादिकों में आत्मअभिमानपूर्वक होते हैं ताते अपने फलसहित असत्य हैं, अरु। "विद्यागताहंकृतिनःप्रसिद्ध्यति "। इत्यादि प्रमाण से अमानित्वादि लक्षणरूप जो दैवीसम्पदारूप विद्यात्मक धर्म है सो सत्य आत्मरूप फलवाला होने से सत्यहै, एतदर्थही उत्तम है अरु एतदर्थही विशेष आदरणीयहै। हे सौम्य! देखो सर्वोत्तम कश्यपकुल अरु पुलस्त्यकुल तिनमें उत्पन्न अपर विद्या आश्रित यज्ञ अग्निहोत्रादिकर्म्मके कर्त्ता जगत्विख्यात महापराक्रमी हिरण्याक्ष हिरण्यकशिपु अरु रावण कुम्भकर्ण सो दैवी-

सम्पदारूप धर्मसेरहित आसुरीसम्पदायुक्त होने के अरु दैवी सम्पदारूप धर्मके सेवनकर्त्ताको क्लेश देने के कारण उनके जातिधर्म आश्रमको न देख ईश्वरने आप अवतार धारणकर उनको नाश करदिये, अरु जातिकी अतिअधमपावर शबर (भीलकी जाति विशेष,जाति तिसमेंभी स्त्री अतिही अधम सो शबरी भगवान् मातङ्ग मुनिके सत्संगके प्रभावसे समस्त दैवीसम्पदारूप असाधारण उत्तम धर्म्म करके युक्त साधुहुई [अर्थात् । "अपिचेत्सदुराचारो भजतेमामनन्यभाक्।साधुरेवसमन्तव्यः सम्यग्व्यवसितोहिसः"। इत्यादि प्रमाणसे जो वर्णाश्रम अरु तिनके धर्मसे रहित वा बाह्य हैं सो जो कदापि शुद्ध अनन्यभावसे ईश्वरका स्मरण भजन करताहै तिसको किसी वर्णाश्रम में न मानके केवल साधु मन्तव्यहै] तब ईश्वरावतार रामजी ने उसकाकिया आतिथ्य बड़े प्रेमसे अङ्गीकार किया अरु। " यद्गत्वा न निवर्त्तन्ते तद्धाम परमंमम "। इत्यादि प्रमाणसे उसको अपने स्वरूपरूप धामको प्राप्तकर पुनरावृत्तिसे रहित मोक्षकिया अतएव सिद्धान्त यह है कि दैवी सम्पदारूप धर्म सर्व मनुष्योंकरके आदरणीय माननीय सेवनीय आचरणीयहै। हे सौम्य! अब उक्त दशरथके प्रसङ्ग में। ज्ञान कर्मके समुच्चय सेवन कर्त्ता क्षेत्रज्ञरूप राजा दशरथ के पूर्वजन्मके सकाम कर्मके संस्कारकी प्राबल्यतासे हरण हुई जो उसकी पूर्वकी परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा तिसको रामजी के शरीरके निमित्तसे विरहयुक्त वृक्षादिकों से प्रश्न करनेद्वारा अपराविद्या आश्रित तीर्थयात्रा देवार्चन यज्ञ अग्निहोत्र तपआदिक साधनों में अन्वेषण करत सन्ते वह आगेबढ़ साधारण पराविद्या [अर्थात् उत्तर मीमांसा (ब्रह्मसूत्र) अरु उपनिषदादि असाधारण पराविद्या तिसके अध्ययनका अधिकार होताहै प्रथम जिन आत्मबोध तत्त्वबोध पञ्चदशी आदि वेदान्त पराक्रियात्मक ग्रन्थोंसे सो कहिये साधारण पराविद्या] रूपा शबरीसे मिल प्रश्न करताहुआ कि हे शबरी! तुझको हमारी परोक्षानुभूति ब्रह्मविष-

यिणी प्रज्ञाके जो इस संसाररूप अरण्यमें हरणहुई है, ज्ञातहोय तो मुझसे कहो, तब उक्त शबरी ने कहा कि यहांसे दक्षिणदिशा में अन्तरंग साधनरूप पम्पासर है वहां आपजायके निवासकरो तदनन्तर वहां आपसे अरु उत्तर मीमांसारूप सुग्रीवसे मित्रता होगी तब वह आपको उक्त प्रज्ञाका पता कहेगा अरु आपको उसकी प्राप्ति करावेगा, अतएव जो आपको अपनी हरणहुई उक्त प्रज्ञाकी जिज्ञासाहै तो आप उक्त पम्पासरको पगधारिये। यह उक्त दशरथके विषयमें शबरी समागमका लक्ष्यजानना॥ हे सौम्य ! सम्यक् विशेषज्ञानरूप रामजी सो ज्ञानयोग युक्त जो अनन्य अभेद भक्तिरूपा शबरी तिसके अन्तःकरणरूप आश्रममें अपने सहचारी असाधारण वैराग्यरूप लक्ष्मण सहित प्रकटहोय। "अत्तः चराचर ग्रहणात्"। "भर्त्ताभोक्तामहेश्वरः"। "भोक्तारंयज्ञतपसां" इत्यादि प्रमाणसे, आप उसके किये उक्त कन्दमूल फलादिकके आतिथ्यको अङ्गीकारकर।"ब्रह्मविद्ब्रह्मैवभवति"। इत्यादि प्रमाण से अपने साक्षात्कारके प्रभावकर उसको पुनरावृत्तिसे रहित अपने विषे समुद्रमें नदीवत् अभेद गति देतेहुये, अरु तिस करके सर्वजनोंके हितार्थ अभेद अनन्य भक्ति अरु सम्यक् ज्ञान इन दोनों करके दैवी सम्पदायुक्त पुरुष को कैवल्य मोक्षकी प्राप्ति होती है यह प्रकाशित करतेहुये। यह राम शबरीके समागमका लक्ष्य जानना। हे सौम्य! सन्त कहते हैं कि हे मनुष्यो! नानाप्रकारके कामुक कर्म अरु असत्य भाषण निर्दयता आदि आसुरी सम्पदादिरूप अधर्म अरु बहुमति (एकमें विश्वासका न होना) जो परिणाममें वारंवार जन्म मरणरूप शोकके देनेवाले तिन सर्व को अशेष त्यागके सम्यक् ज्ञानस्वरूप परमात्मा रामजीके चरणमें विश्वास पूर्वक अनुरागवान् होवो, देखो सत्सङ्गके प्रभाव से अरु रामजीके श्रवण मनन ध्यान भजन निदिध्यासन करनेके प्रभावसे अति अधम शबरजातिकी स्त्री तिसको उक्त रामजीने अपना साक्षात्कार दर्शनदे पुनरावृत्ति से रहित कैवल्य मोक्ष को

प्राप्त किया, इस वार्त्ता को शास्त्रोंद्वारा वा ज्येष्ठ श्रेष्ठोंद्वारा जान बूझके भी ऐसे उक्त रामसरीखे प्रभु को विस्मरणकर संसारमें सुखकी इच्छा करता है सो मन महामन्द अधम होनेके कारण वारंवार धिक्कार अरु तिरस्कार करने योग्य है ॥

इति रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डेरामशबरीसमागम वर्णनन्नामत्रयोदशंप्रकरणंसमाप्तम् ॥

अथ रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डे सीताकेविरह मिसउपदेशवर्णनन्नामचतुर्दशमंप्रकरणंप्रारभ्यते ॥

१ ॥ श्रीगुरुरुवाच॥ हे सौम्य! उक्त प्रकार सम्यक् विशेषज्ञान रूप रामजी ज्ञानयोगसमन्वित अभेद अनन्य भक्तिरूपा शबरीके आश्रमपर जाय उसके किये पूजन आतिथ्य को अङ्गीकारकर दैवी सम्पदारूप असाधारण धर्मकी महिमा प्रकाशितकर उक्त शबरी को कैवल्य मोक्षदे आगे उक्त पम्पासरकी ओर चलतेहुये हे सौम्य! जिस वनमें उक्त शबरी रहतीरही तिसको त्याग उक्त राम लक्ष्मण दोनों भ्राता पुरुषोंमें सिंह अपनी उक्त प्रज्ञारूपा सीता को अन्वेषण करते आगे वनको पगधारते हुये तहां उक्त रामजी विरही मनुष्यवत् विरह विषाद करते अनेक कथाप्रसंग करतेहुये [अर्थात् यहां जो रामजीको विरह विषाद करते कहे सो दशरथ के विषय में जानना, अरु अनेक कथा प्रसंगका लक्षण प्रति उपदेश करना उक्त रामजीका चरित्र जानना, इसप्रकार अन्यस्थानमें भी विचार करना] हे लक्ष्मणजी! इस नामरूपक्रियात्मक संसाररूप अरण्यकी शोभा अवलोकन करो, हे तात! इस के अवलोकन से किसके मनको क्षोभ नहीं होता, किन्तु केवल एक अपरोक्षानुभूति ब्रह्म विषयिणी प्रज्ञावाले के सिवाय सर्व के मनको क्षोभ होताहै] हे लक्ष्मण! इस अरण्यके निवासी यावत् खग मृगादि जीव हैं सो सर्व अपनी अपनी। "तंविधाकर्म्मणीसमन्वार-

भेते पूर्वप्रज्ञाच "। इत्यादि प्रमाणसे, पूर्वको प्रज्ञारूपास्त्री को साथलिये विचरते हैं, सो मानो मेरीनिंदा करते होयँ कि हम पशु-होयके भी अपनी पूर्व प्रज्ञाको साथ रखते हैं अरु तुम मनुष्यहोय के ऐसे सकाम क्रिया के वश हुये कि अपनी पूर्व की परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा से पृथक्होय उसको इसअरण्यमें खोय अब उसको अन्वेषण करते रोते फिरतेहौ [अर्थात् इसमें कुछ उक्त दशरथके विषयमें भी जानना, अरु इसकी लक्ष्य यह है कि इस नामरूप क्रियात्मक असत्य जगत्के व्यवहार में ऐसा बेसुध होय के प्रवृत्त न होना कि जिसमें अपना धर्म्म विवेकवती प्रज्ञा जातीरहे, अरु जिसको उक्त प्रकारकीप्रज्ञा जाती रहती है तिस की इस संसारमें निंदाहोती है] हे लक्ष्मण ! देखो मेरे इस मुनिवेष को देख इस वनके मृगादि पशु सभीत होय कि यह मुनिवेषधारी मत कही यज्ञादिक के निमित्त हमारावध करे भागे चलेजाते हैं, अरु उनकी जो प्रज्ञारूपा मृगी है सो उनको कहती है कि हे मृगो ! इनसे तुमको भय नहीं तुम अपने यथेष्ट सुखपूर्वक विचरो यह तो प्रज्ञारहित हुये कञ्चनमृगको अन्वेषण करते हैं [अर्थात् जिस पुरुषकी धर्म विवेक सम्पन्न प्रज्ञा नाम रूप क्रियात्मक मृगतृष्णाके जलवत् असत्य संसारके सम्मुख प्रवृत्तहुई तिसने परमारथ साधक यज्ञभी कब करना है किन्तु कभी नहीं, उसने तो जहां अन्वेषण करना है तहां उक्त कञ्चन मृगकोही करनाहै] अथवा उक्त मृगोंसे उक्त मृगी कहती है कि हे मृगो ! जिनको देखके तुम पलायन होतेहौ तिनका जो तुमको भयदायक मुनिवेष है सो केवल बाह्य दृष्टिसे देखनेही मात्र है क्योंकि यह ज्ञानवान् हैं ताते यह सर्व्वत्र समान एक अविनाशी आत्माकोही देखते हैं । "अहिꣳसꣳसर्व्वभूतानि "। इत्यादि प्रमाणसे इन्हों ने सर्वप्रकारकी हिंसाका त्याग कियाहै अरु यह सर्व्वको अभय करनेवाले हैं अतएव तुमको इनसे भय नहीं, अरु यह जो मुनिवेषधारी धनुर्बाण लिये विचरते हैं सो यह प्रणवरूप

धनुष् अरु श्रुतिवाक्यरूप बाण को धारण किये नामरूप क्रियात्मक संसाररूप कञ्चनमृग को बाध करने के अर्थ फिरते हैं अतएव तुम सर्व इनसे भय मतिकरो [अर्थात् ज्ञानवान् सर्व्वको निर्भय कर आप अभयहोय लोकहितार्थ अहिंसात्मक कर्म करते हैं अरु उक्त धनुष्को धारणकर संसाररूप असत्य मृगका सर्व्वदा बाध रूप वधही चितवते हैं, ताते ज्ञानेच्छु पुरुषने अपनी ओरसे सर्व्व को अभयकरना अरु सर्वकीओरसे आप अभयहोना अरु लोक वा अपने हितार्थ अहिंसात्मक कर्म न करना, अरुश्रुतियुक्तिसे सर्वदा इस नामरूपक्रियात्मक असत्य जगत्का जो सत्यवत् भासताहै, प्रणवोपासनाकी रीतिसे बाध चितवनकरना] हे लक्ष्मण ! देखो यह करि (हाथी) अपनी करिणी (हथिनी) को साथलिये फिरते हैं सो मानो मुझको शिक्षा करतेहोयँ कि जो तुम हमवत् अपनी स्त्रीको अपने साथ रखते तो इसदशाको क्यों प्राप्तहोते [अर्थात् कर्म्मके कर्त्तारूप करि जिस शरीररूप अरण्यमें विचरते हैं तहां अपनी करिणीको साथलियेही विचरते हैं, सो कर्मी परोक्षज्ञानी की कि जिसकी परोक्षानुभूति ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञा इस संसार में आसक्त होनेसे अपने विषयसे पृथक्होय अहंलक्षणात्मक मूलाऽज्ञानके वशहोती है, निंदा करते हैं, अरु कर्म करनेके विषयमें शिक्षा करते हैं अतएव परोक्षज्ञानी ने सांसारिकव्यवहारमें वर्त्ततसन्ते भी अपनी उक्त प्रज्ञाको ठेकानेही रखना] हे लक्ष्मणजी ! यह नीतिहै कि जो शास्त्र सम्यक् प्रकार अध्ययनकियाहै तिसको भी वारंवार विचारतेही रहना, अरु जो राजा अपनी सेवासे प्रसन्नभी होय तथापि उसको अपने वश न जानिये, अरु स्त्रीको चाहे अपने अन्तःकरणमेंही छिपायके वशकर रखिये तथापि उसको अपने वश न जानिये [अर्थात् जो कदापि शास्त्र,राजा, अरु स्त्री, यह तीनों अपने वशहुये सारिखे प्रतीतभीहोयँ तथापि इनसे किञ्चिन्मात्र भी बेखबर रहने से यह वश न रहके अनर्त्थका हेतु होते हैं] हे सौम्य ! उक्त प्रकार कहके उक्त रामजी उक्त लक्ष्मणजीको उनके

वैराग्यरूपताकी दृढ़ताके अर्थ आय प्राप्तहुआ जो वसन्तऋतु तिसद्वारा कामदेवको राजारूपसे वर्णनकरतेहुये कि हे लक्ष्मण जी! हे तात! देखो यह कैसा सुन्दर मनोहर वसन्तऋतुहै सो मुझ को सीतारहित जानके भय उपजावताहै [अर्थात् ब्रह्मविषयिणी प्रज्ञासे रहित मनुष्यको यह कामकी सामग्री वसन्तादिक सो जन्म मरणरूप भय उपजावते हैं] हे लक्ष्मणजी ! देखो मुझको उक्त प्रज्ञारूप सीतासे रहित एकाकी विरहव्याकुल हतपुरुषार्थ जानके इस जगद्विजयी कामदेव ने वसन्तऋतु के मिस अपने सहित समाजके मुझपर हल्लाकिया है, अरु तुम सहित मुझको देख उसके दूत वसन्तऋतुने उसको मेरे विरहके समाचारकहे हैं तिनको श्रवणकर उसने इसवनमें आय आग्रहपूर्वक डेराकियाहै ॥

२ हे सौम्य ! उक्त प्रकार सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी उक्त लक्ष्मणजीसे कह पुनः कहतेहुये कि हे लक्ष्मण!अब कामरूप राजा की सामग्रीको अवलोकन करो, यह जो सुन्दर नवीन पल्लववाले बड़े विशाल वृक्षहैं तिनपर जो नवीनपत्र पुष्पावली लताछायरही हैं सोई उस राजाके नानाप्रकारके वितान (चँदोवा) हैं, अरु यह जो कदली अरु तालके ऊंचे ऊंचे वृक्षहैं सोई उसकी पताकाहैं सो इनको देखके जिनके मनको क्षोभ नहीं उपजता सोई धीरपुरुषहैं, अरु यह जो नानाप्रकारके पुष्पोंकरकेयुत अतिमनोहर वृक्ष हैं सोई उसके अनेक प्रकारके युद्धकरनेवाले वीर हैं, अरु इसवन के जे पृथक् २ उपवन हैं सो इसकी पृथक् २ सेना पृथक् २ स्थान में स्थित सुशोभित हैं, अरु यह जो कोयलनाम पक्षी शब्द करता है सोई मानो कामदेव राजाके हस्ति गर्जना करते हैं, अरु यह जो अपने विशाल कण्ठ को उठाय सारस आदि पक्षी विचरते हैं सो उसकी सेनाके ऊँट हैं, अरु हे लक्ष्मण ! यह जो मोर चकोर तोते नानावर्णके कबूतर फिरते हैं सो इस कामदेवराजाके कुम्मेद सुरङ्ग, सिरगे, समन्द, सबजे, नुक्करे, गर्रे, मुश्की आदि अनेक जातिके उत्तमोत्तम अश्व हैं, अरु यह जो तीतर, बटेर, लवा आदि

पक्षीसमुदाय हैं सो उसकी पदचर सेना हैं, अरु यह जो पर्वतकी विशाल सुन्दर चित्र विचित्र वर्णकी शिला हैं, सोई उसके सुन्दर रथ हैं, अरु पर्वतोंसे जो सुन्दर झरने झरते हैं अरु उनके जो घरघराहट शब्द होते हैं सोई उस राजाके नगारे बजते हैं, अरु यह जो चातृक पक्षी मधुर मधुर शब्द करते हैं सो उस राजाके गुणानुवाद गावनेवाले वन्दीजन हैं, अरु यह जो जहां तहां मधुकर गुंजार करते हैं सोई उसकी सेनामें भेरी सहनाई बजते हैं, अरु यह जो शीतल मन्द सुगन्ध तीन प्रकारका पवन चलता है सो उसका दूत उसके आगमन को सूचित करताहै, हे लक्ष्मणजी ! इसप्रकार राजाकामदेव चतुरङ्गिनी सेना साथले सर्वको चिनोती देता हुआ निर्भय विचरताहै, । हे लक्ष्मण ! इस कामदेवकी उक्त सामग्री देख जिसके चित्तमें धैर्य्य रहताहै उसहीकी धीरोंमें गणनाहै, हे भ्राता ! इसकामदेवका एक परम पुरुषार्थ स्त्री है उसमें से जो बचरहाहै सोई इसजगत्में सुभटहै, अरु इसहीका जय करना परम पुरुषार्थहै। "जहिशत्रुंमहावाहो कामरूपंदुरासदम्"। अरु जो स्त्रीरूप कामास्त्रसे बचाहै सोई इससंसाररूप समुद्रसे पार होताहै॥ जो नहिं होती नारि तो जगमें तरिबो सुगम, यह लम्बी तलवारि मारिलेत अधबीचही॥ हे लक्ष्मणजी ! "त्रिविधं नरकस्येदं द्वारंनाशनमात्मनः कामःक्रोधस्तथालोभस्तस्मादेतत्र यंत्यजेत् "। काम क्रोध अरु लोभ यह तीन अतिही प्रबल दुष्ट हैं इन तीनोंने त्रैलोक्य को जय कियाहै, अरु बड़े बड़े जे ऋषि मुनि विज्ञान विद्याके धाम तपस्वी हैं तिनके चित्तमें भी क्षणमात्रमें क्षोभ उपजावते हैं तहां लोभका इच्छा दम्भ अरु बलहै, कामका स्त्री बलहै, अरु क्रोधका पारुष्य भाषण बलहै ऐसा विचारके विद्वान् कहते हैं [अर्थात् जो विवेकी पुरुष इच्छा, स्त्री, अरु पारुष्य भाषण, इन तीनोंसे बचाहै सोई इससंसारमें उक्त तीनों दुष्टोंसे मुक्त हुआ प्रशंसा करने योग्यहै हे सौम्य! यह जो कामदेवकी महिमा रामजीने लक्ष्मणप्रति उपदेश किया है सो विवेकी

वैराग्य शील पुरुषोंके वैराग्यकी दृढ़ताके अर्थ किया है] ॥

इति रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डेरामजीकाविरहमिस उपदेशवर्णनन्नामचतुर्दशमंप्रकरणंसमाप्तम् ॥

अथ रामायणेऽध्यात्मगोचरे ऽरण्यकाण्डेपम्पासर वर्णनन्नामपंचदशमंप्रकरणंप्रारभ्यते ॥

१॥ श्रीगुरुरुवाच ॥ हे सौम्य! श्रीशिवजी महाराज अपनी प्रिया पार्वतीसे कहतेहुये कि हे उमे! प्रकृतिसे लेके हिरण्यगर्भ पर्यन्त समस्त जगत् को जो अपनी इच्छामात्रसे उपजावने पालने मिटावनेवाला सर्व को अपनी आज्ञामें चलावनेवाला सर्वका स्वामी। "केवलोनिर्गुणश्च"। मायाके गुण अरु प्रतियोगी आपेक्षिक विशेषणोंसे रहित केवल। "शुद्धमपापविद्धम्"। सदा शुद्ध निष्कल निरञ्जन सर्वान्तर्यामी परमात्मा लोक हितार्थ अपने बिषे अवतार शरीर धारणकर अपनी प्राकृत मनुष्योंवत् प्राकृत लीला करके अन्तरङ्ग उपदेश करताहै तहां अपने रामावतारके सीताहरणोत्तर लक्ष्मण प्रति काम महिमाके वर्णनरूप चरित्रसे जे अज्ञानी कामासक्त पुरुष हैं तिनके बिषे दीनता देखाई कि कामी पुरुष काम सामग्री को देख दीनता को प्राप्तहोते हैं, अरु जे विवेकी परम धीर वैराग्यशील पुरुष हैं तिनके अर्थ वैराग्य की दृढ़ता देखाई कि जिसमें काम सामग्री के अतिवेग में सत्पुरुषका चित्त बह न जाय हे उमे! यह काम सामग्री मेरे चित्त को भी जग द्विख्यात क्षोभ उपजावनेवाली है तब अन्य साधारण जीवोंकी क्या कथाहै, हे प्रिये! यह जो काम क्रोध लोभ मोह मद माया आदिक जीवोंको परमबन्धनका कारणहै तिनसे जीव तबहीं छूटताहै कि जब सम्यक् विशेष ज्ञानरूप परमात्मा रामजी की दया होती है, अरु सो तब होती है जब यह जीव दैवी सम्पदा रूप धर्मकरकेयुक्तहोय उनका भजन स्मरण करताहै, अरु हे प्रिये! इस संसारमें जैसे जिसके ऊपर नट अनुकूल होताहै वा दूसरा

नट होताहै सो उस नटकी इन्द्रजाल मायाको देखताभी उसमें आसक्त होता नहीं, तैसेही परममायावी स्वतन्त्र परमात्मा तिसकी प्रकृतिसे तृणपर्यन्त जो मायाहै तिसको देखते सुनते वर्त्ततें सन्ते भी उसके शुद्ध भक्त अरु उसके यथार्थस्वरूपके जाननेवाले जो ब्रह्मभूत सम्यक् ज्ञानी हैं सो मोहको पावते नहीं, हे उमे! मैं तुझसे अपना यथार्थ अनुभव कहताहौं उस परमात्माका जो श्रवण मनन निदिध्यासनरूप स्मर्णभजनहै सोई सत्यहै तद्व्यतिरिक्त सर्व्व जगत् स्वप्नमात्र असत्य है सो अविद्यारूप निद्रादोष करके सत्यवत् प्रतीत होताहै परन्तु वास्तवमें अपने स्वरूपकरके असत्य है ॥ प्रश्न ॥ हे भगवन्! जब समस्त जगत् असत्यहै तब वेद शास्त्रभी असत्य हैं अरु जब वेद शास्त्र असत्यहुये तब तिस करके प्रतिपाद्य जे श्रवण मननादि सोभी असत्यहुये तब उनको सत्य कैसे कहिये ॥ उत्तर ॥ हे प्रिये! यावत् जगत् है सो सर्व्व परिणामी है, अरु यावत् कर्म्म हैं सो सर्व परिणामी असत्य फल वाले हैं अरु यह जो शास्त्रोक्त श्रवणादि साधनरूप क्रियाहै तिसका परिणाम परमात्मरूप सत्यवालाहै ताते श्रवणादिकों को सत्य कहते हैं ॥ हे सौम्य! उक्त प्रकार विशेष ज्ञानरूप रामजी अपने भ्राता वैराग्यरूप लक्ष्मणजी प्रति कामदेवकी महिमा अरु उसको अनर्थ का कारण देखाय उनके स्वरूपकी दृढ़ता करतेहुये। हे सौम्य! देखो सीताके वियोगसे अतिमोहको प्राप्त जे रामजी तिनको नीति धर्म्म परमारथका उपदेश करने रूप विवेकका होना बने नहीं क्योंकि मोह अरु विवेक इनका परस्परमें तेज तिमिरवत् विरोध है ताते इनका एक समयमें होना बने नहीं अतएव जो रामजीके विषयमें मोहका होनाहै सो बाह्य लौकिक चेष्टा है आन्तर्य नहीं ताते देखनेमात्रहीहै स्वरूपसे नहीं, अरु विवेकहै सो आन्तर्य है ताते स्वरूपही सत्यहै, अतएव रामजीमें जो मोहका सत्य आरोग्य करते हैं सो अविचरित असत्य करते हैं हे सौम्य! पूर्व्व एकही शरीरमें प्रेत अरु शरीरके व्यापार होनेके दृष्टान्त करके, एक रामजीकेही शरीर निमित्तसे उक्त राजादशरथ अरु

रामजी दोनोंका व्यापार होना कहाहै सोई यहां स्पष्टहै जो एक रामजी को मोह अरु विवेक दोनों विरोधियोंका एक कालमें होना जो असम्भवहै पाया जाताहै, तहां मोहके व्यापार जो शोक विलापादि सो उक्त दशरथके जानने, क्योंकि पूर्व्वकी परोक्षानुभूति प्रज्ञा उसकी हरणहुई ताते, अरु विवेकके व्यापार जे धर्म नीति परमारथका उपदेशादि करना है सो धर्मरक्षणात्मक रामजीका व्यापार है ऐसा जानना। इसप्रकार विवेचन करके देखिये तो रामजीमें अज्ञान व्यापार शोक मोहादिकोंका स्पर्शभी नहीं, जल कमलवत्। हे सौम्य! असाधारण वैराग्यरूप लक्ष्मण प्रति उपदेश करते जे सम्यक् विशेष ज्ञानस्वरूप श्रीरामजी सो अपने उक्त अनुज सहित आगे बढ़ साधनरूप पम्पासर को प्राप्त होते हुये सो कैसाहै उक्त सर क्षोभसे रहित अति गम्भीरहै अरु जैसे सन्तका हृदय शुद्ध होताहै, तैसेही शुद्ध सत्त्वगुणरूप जल करके पूर्ण है, अरु उसके चारों दिशामें क्रमसे श्रवण, मनन, निदिध्यासन, अरु साक्षात्कार, यह चार विशेष अन्तरङ्ग साधनरूप सुन्दर चार घाट बने हैं, अरु उन घाटों के आश्रय जिज्ञासु मुमुक्षुरूप ऋषि मुनि निवास करते हैं, अरु उस सरके तटपर जहां तहां अनेक भेदवादीरूप मृगपशु जलपान करते हैं तिनकी समय समयपर भीड़ होती है। हे सौम्य! जैसे शुद्ध निर्गुण ब्रह्म अपनी इच्छारूप माया करके अपने बिषे अवतारादि शरीर धारणकर आप लखाई देता नहीं वा। सत्त्वेवसोम्येदमग्र आसीदेकमेवाऽद्वितीयम् तदैक्षतबहुस्यांप्रजोयेयेति"। इत्यादि अनेक श्रुतियोंके प्रमाणसे जो सजातीय विजातीय स्वगत भेदसे रहित निष्फल निर्गुण निरञ्जन ब्रह्महै सो अपनी इच्छासे आप आकाशसे तृण पर्यन्त कार्य्य कारणात्मक सर्व्वरूप होय। " जीवेनात्मनानुप्रविश्य। "तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत्। " इत्यादि प्रमाणसे चिदाभास रूपसे प्रवेशकर आप आच्छादितहुआ अब जानाजाता नहीं जो यह ब्रह्म है, एतदर्थ इसको अज्ञानी जन पापी अपराधी कर्त्ता भोक्ता कामी क्रोधी अल्पज्ञ, आदि विशेषणों करके कहते हैं।

वा जैसे पृथिवी का कार्य भीत (दिवार) सो पृथिवीसेही उठी हुई उसहीको आच्छादित करती है, तैसेही शुद्ध निर्विकार एक अद्वैत ब्रह्मसे स्फुरणहुई जो उसकी इच्छा सो अनेकरूप होय उसको आच्छादितकर अब्रह्मवत् करतीहुई। तैसेही साधकके सामान्य अतःकरणरूप देशमें शुद्ध सत्त्वगुण रूप जलकरके पूर्ण जे सामान्य साधनरूप पंपासर सो संशय विकल्पवृत्तिरूप पुरइन करके आच्छादित होने से प्रतीत नहीं होता जो यहां साधनरूप जल है। अरु उक्त सरमें निवास करनेवाली जे अनेक विचार वृत्तियांरूपा मछलियां सो उक्त जल की आधिक्यतासे अत्यन्त सुखी जीवते हैं; जैसे धर्मशील पुरुष के दिवस सुखसंयुक्त व्यतीतहोते हैं तैसे; ॥

२ हे सौम्य! उक्तप्रकार सामान्य साधनरूप पंपासरके शुद्ध सत्त्वगुणात्मक जल से प्रकटहुये सत्त्वगुणकी सम्पत्ति दैवीसम्पदाके लक्षण सोई उक्त सरमें नानाजातिके कमल प्रफुल्लितहो रहे हैं, अरु तिनके फलरूप भ्रमर उनपर गुंजार शब्द कर रहे हैं अरु उक्त सरमें नानाविद्याके संस्कार रूप, जलकुक्कुट, कलहंस चक्रवाक, बक इत्यादि पक्षी अपने २ शब्दकरते बिचरते हैं मानों सम्यक् विशेषज्ञानरूप रामजी की प्रशंसा करते होयँ; अरु उक्त सरकी शान्तिरूपाशोभा विशेष करके कहने में आवतीनहीं सोई यथार्थ जानता है कि जिसको प्राप्तहुई है, अरु उक्त पक्षी अपना२ शब्दकरते हैं तिसकरके प्रतीत होताहै कि मार्ग के चलनेवाले पथिक जनोंको सुखविश्रामार्थ बोलावतेहोयँ [अर्थात् नानाप्रकार की सद्विद्याके संस्काररूप पक्षी संसारमार्ग में चलनेवाले मनुष्योंको कहते हैं कि इस साधनरूप सरके तटपर आय इसका सत्त्वगुणात्मक जलपानकर सच्छास्त्ररूप वृक्षकीछायामें विश्राम कर सुखीहोवो] अरु उक्त सरके निकट मननशील मुनिजन अपने ब्रह्मचर्य वानप्रस्थादि आश्रमरूप कुटी बनाय तिसमें निवास करते हैं, अरु उक्त सरके सर्वओर पराविद्या सम्बन्धी आस्तिक शास्त्र के समुदायरूप, चंपक, बकुल, कदंब, तमाल पाटल, प-

नस, फरास, आंब, जामुन, अमरूत आदि रसाल वृक्षोंका समुदाय सुशोभितहै, अरु तिनविषे शास्त्रकारोंकी नई नई युक्तियांरूप नवीनपत्र सुशोभित हैं अरु सुन्दर पुष्प अपनी सुगंधिदेतेहैं, अरु उन शास्त्ररूप वृक्षोंपर उनके अर्थरूप चंचरीक कोइल आदि मधुरभाषी पक्षी शब्दकरते हैं अरु उक्त वृक्षों के जे फलहैं सो सर्व भूमिकी ओर झुकरहे हैं [अर्थात् पराविद्यासम्बंधीयावत् शास्त्र हैं तिन सर्व के फल परमात्मा भूमारूपा भूमिसे सम्बन्ध रखतेहैं], जैसे परोपकारी सत्पुरुषको ज्यों ज्यों सम्पत्ति (धन) प्राप्तहोताहै त्योंहीत्यों झुकते (नम्रभावको प्राप्तहोते) हैं तैसे; ॥

३ हे सौम्य ! उक्तप्रकार का जो सामान्य साधनरूप पंपासर तिसको सम्यक् विशेषज्ञानरूप रामजी अवलोकनकर अतिप्रसन्नहोय उक्त सरमें मज्जन (स्नानादि) कर अतिसुखमानतेहुये [अर्थात् जिसकी पूर्वकी परोक्षानुभूति ब्रह्म विषयिणी प्रज्ञा संसाररूप अरण्यमें हरणहोजाती है सो जब अनेकविलाप संकट को पाय पुनः श्रवणादि साधनों में प्रवृत्तहोताहै तब सुखीहोताहै यह प्रसंग उक्त दशरथके विषयमें जानना] अरु उक्त सरके निकट सविकल्पसमाधिरूप सुन्दर वृक्षकी मुदितारूप छाया में सहित अपने सहचारी असाधारण वैराग्यरूप लक्ष्मणके सम्यक् विशेषज्ञानरूप रामजी विश्राम करतेहुये, तहां उक्त रामजी के दर्शनार्थ देवता अरु उस सरके तट निवासी मुनिजन आवते हुये [अर्थात् जो विचार शील देवता मुनिजन हैं सो सम्यक् विशेष ज्ञानरूप आत्मारामजी के दर्शनार्थ सविकल्प समाधिरूप वृक्ष के निकट आवते हैं] अरु उक्त रामजी के दर्शन प्रशंसाकर पुनः अपने अपने उक्त आश्रमको पगधारतेहुये, तदनन्तर उक्त रामजी उक्तवृक्ष के नीचे विश्रामकर प्रसन्नहोय अपने अनुज उक्त लक्ष्मणप्रति उपदेशात्मक अनेक रसाल कथा वर्णन करते हुये, तिस समय सर्वत्र विचरनेवाले ब्रह्मऋषि नारद उक्त रामजी को उक्त सीताके विरहवश व्याकुल देख आप अपनेदिये शापको विचार अति शोचको प्राप्तहुये कि देखो परम ब्रह्मण्य देव

रामजी मेरे शाप को अंगीकारकर इस अरण्यमें नानाप्रकार के क्लेशके भारको सहन कररहे हैं, अरु अब आप उक्त वृक्षके नीचे विराजमान हैं ताते ऐसा एकान्तका समय उनके दर्शनार्थ पुनः प्राप्तहोनेका नहीं, अतएव अब मैं उनके दर्शनार्थ उनके समीप जाय प्राप्तहोवों, इस प्रकार विचार के नारदऋषि हाथमें वीणा ले उक्त रामजी के समीप आय दर्शन प्रणामकर उनके अनेक प्रकारके गुणानुवाद अतिप्रेमसे गान करनेलगे तब उक्त रामजी ने अपने सम्मुख ब्रह्मऋषि नारदको देख आप उठ उनके निकट आय प्रणाम करतेहुये तब उक्त नारदने रामजीको उठाय अपने हृदयसे लगाया अरु रामजी ने अपने भक्त नारदको अपने हृदय से लगाया अरु सूचित किया कि मैं अपने भक्त को अपने हृदय विषे निरन्तर धारताहौं, तदनन्तर उक्त रामजीने नारद मुनिसे स्वागत कुशलप्रश्नकर अपने निकट बैठाया, अरु लक्ष्मणजी ने उक्त पंपासरमें से जल ल्याय नारदके पादप्रक्षालन किये। तदनन्तर नारदमुनि उक्त रामजीको प्रसन्न जान नानाप्रकार विनय कर हाथजोड़ वचन बोलतेहुये [अर्थात्, नार, कहिये स्त्री, द, कहिये दमन ऐसे इच्छारूपा स्त्रीको दमन करने (रोकने) वाले जो अकामरूप नारद सो उक्त रामजीको उक्त पंपासरके निकट उक्त वृक्षके नीचे विश्राम करते देख उस समय को दर्शनार्थ अनुकूल विचार उक्त रामजी के समीप आय प्रणामकर उनसे पूजन सत्कार पाय निकट बैठ विनय करतेहुये ॥

इति रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डेपंपासरवर्णनन्नाम पंचदशमंप्रकरणंसमाप्तम् ॥

अथ रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डे रामनारद समागमवर्णनन्नामषोड़शंप्रकरणंप्रारभ्यते ॥

१ श्रीगुरुरुवाच ॥ हे सौम्य ! उक्त प्रकार सीता के विरहसे व्याकुल सीताऽन्वेषण करते शबरीके आश्रमपर आय उससे आतिथ्य सत्कारपाय तिसको अंगीकारकर उक्त शबरीको नवधा

भक्ति उपदेशपूर्वक निर्वाणमोक्षको प्राप्तकरआगे वन शोभादेखाते विरह मिस लक्ष्मणको उपदेशकरते वसन्त ऋतुके योगसे काम महिमाको देखावते तिसकरके वैराग्य दृढ़ावते आगे पंपासर पर जाय स्नानकर उक्त वृक्षके नीचे विश्रामकरतेहुये, तब उक्त राम जीको एकान्तमें सुखासीनदेख शुभसमय विचार ब्रह्मऋषि नारद रामजीके समीप आय प्रणामकरतेहुये तब रामजीने उनको हृदयसे लगाय कुशल प्रश्नकर अपने निकट बैठाया, तब नारदजी अपने स्वामी रामजीको प्रसन्न देख हाथजोड़ विनयकरतेहुये गहे ज्ञानवानोंको सुगम हे अज्ञानियोंको अगम सम्यक् ज्ञानमूर्त्तिसच्चिदानन्द सर्वव्यापी रामजी ! हे परम उदार सुन्दर वरके देने वाले ! हे नाथ ! यद्यपि आप अन्तर्य्यामी रूप से सर्व के हृदयकी जाननेवाले हौ तथापि मैं आपसे एक वरदान मांगताहौं सो आप मुझको कृपाकरके दीजिये इस प्रकार जब ब्रह्मऋषि नारदने सामान्यसाधनरूप पंपासरके निकट निदिध्यासनरूप घाटपर सविकल्प समाधिरूप वृक्षके नीचे सम्यक् विशेषज्ञानरूप रामजीकी स्तुतिकर वरदानकी याचना किया तब उक्त रामजी कहते हुये कि हे मुनि ! मेरा जो स्वभाव है कि अपने जनसे मैं किसीप्रकार का दुराव (छिपाव) रखता नहीं सो आपको विदित है, अरु इस नामरूप क्रियात्मक संसार में मुझको कौनसी वस्तु प्रिय है कि जिसको आप न मांगसको [अर्थात् हे नारदजी ! जैसे अविद्याके कार्य स्वप्न में ब्रह्मासे तृण पर्यन्त यावत् उत्तम मध्यम कनिष्ठ निकृष्ट पदार्थ भासते हैं सो परस्परमें उत्तम मध्यम दीखते सन्ते भी सर्व समान असत्य हैं क्योंकि जागेहुये उनका एक परमाणु मात्र भी रहता नहीं ताते हे नारद ! तैसेही यह नाम रूप क्रियात्मक हिरण्यगर्भ से तृण पर्यन्त सर्व माया का कार्य परस्पर में उत्तम मध्यम कनिष्ठ अरु निकृष्ट मायाका किया भासता है सो सर्व अधिष्ठान के बोध में असत्य होताहै; जैसे रज्जुमें भासमान जो सर्प सो रज्जुके ज्ञान में असत्य होताहै तैसे; ताते हे मुनि ! हिरण्यगर्भ से तृण पर्यन्त इस मायाके कार्य में मुझको मुझ से

प्रिय कुछ नहीं अरु सो भी तुम्हारा अपना आप है] अतएव हे मुनि ! मुझको अपने जनके अर्थ अदेय पदार्थ कोई नहीं यह आप निश्चय जानों, अरु जो आपकी इच्छा होय सो मांगो । इस प्रकार जब उक्त रामजीने कहा तब नारद बोले कि हे भगवन् ! आप के उपदेश से मैंने जाना है कि सिवाय सर्वाधिष्ठान भूमारूप आपके हिरण्यगर्भ से तृणपर्यन्त सर्व मायामात्र स्वप्नवत् असत्य है, अतएव सत्यस्वरूप आप से इन असत्य वस्तुओं के अर्थ याचना करनी बने नहीं । " अजीर्य्यतामृतानामुपेत्य जीर्य्यन्मर्त्यःक्वधःस्थः प्रजानन् । " अभिध्यायन् वर्णरतिप्रमोदा नति दीर्घे जीविते को रमेत " । अरु हे स्वामी ! सत्यस्वरूप आनन्दघन चैतन्यमूर्त्ति आपहौ सो सर्व के आत्मा अपना आप हौ एतदर्थ आपके अर्थ भी याचना बने नहीं अतएव इन सत्यासत्य से विलक्षण असत्य की बाधक अरु सत्य की साधक ऐसी जो आपकी नाम भक्ति है तिसकी मैं याचना करता हौं, हे भगवन् ! संसारी जीवोंके कल्याण करनेवाले आप के अनन्त नाम हैं अरु सो एकसे एक अधिक हैं तथापि जो यह शिवप्रिय आपका राम, यह नाम है सो सर्व पापोंके नाश करने में अतिही समर्थ है, हे भगवन् ! जैसे इस बाह्याकाश में आनन्द की साधक अरु तस्करादिक रजनीचरों की बाधक पूर्ण चन्द्रमा अरु उडुगण करके शोभित पूर्णिमाकी रात्रि शोभती है; तैसेही हे भगवन् ! आपकी शुद्ध अनन्य भक्ति जो आसुरी सम्पदा रूप रजनीचरों को बाधक अरु भक्तों को परमानन्द की साधक है सो पूर्णिमाकी रात्रिवत् आपके, राम, इस नामरूपी पूर्ण चन्द्रमा करके अरु आपके अपर नाम रूपी उडुगणों करके युक्त आपके भक्तोंके शुद्ध सत्त्वगणात्मक अन्तःकरण रूप अन्तराकाश में विविधान से रहित एकरस प्रकाशित रहै, यह वरदान मैं आपसे मांगताहौं । इस प्रकार जब नारदजीने उक्त रामजी से युक्त वरदानकी याचना किया तब तिसको श्रवणकर कृपासिन्धु भगवान् रामजी कहते हुये कि हे नारदजी ! जैसा आप कहतेहौ तैसेहीहोय, तब नारदजी अपना

अभीष्ट वरदान पाय अति आनन्दित होय उक्त रामजी को प्रणाम करते हुये ॥

२ हे सौम्य! उक्तप्रकार उक्त नारद ने सामान्य साधनरूप पंपासर के तटपर आय निदिध्यासनरूप घाटपर सविकल्प समाधिरूप वृक्षके नीचे सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजीको एकान्त में स्थित देख उनके निकट आय प्रणामकर समीप बैठ नाम भक्ति याचनाकिया तब उक्त रामजी तथास्तु (तैसेहीहो) कहके प्रसन्नमूर्त्ति तूष्णीं स्थितहुये, जब उक्त नारदजी रामजीको प्रसन्न जान हाथ जोड़ पुनः प्रश्नकरतेहुये, कि हे राम! आप सर्व के प्रेरकहौ विना आपकी प्रेरणा के कुछ भी होता नहीं, अरु जब आपने अन्तर्य्यामी रूप से अपनी मायाको प्रेरणा किया तब निरीच्छ जो मैं सो माया करके मोहितहुआ स्त्री की इच्छा करता हुआ, अरु तिसके निमित्त मैंने आपके समीप आय आपका रूप मांगा तब आपने मुझको अपनारूप न दैके वानरका रूपदे मुझको विवाह न करनेदिया, हे भगवन्! तिसका कारण क्या सो कृपाकर कहिये। हे नारद! सत्पुरुषोंको जो हिरण्यगर्भकेपदकी भी इच्छा है सो भी बन्धनका कारण है, तब स्त्री सोभी मानुषी जो केवल अविद्या का स्वरूप है तिसकी कामना तो अत्यंतही अनर्थका हेतु है, तिसको तुम अपने विषे धारणकर मुझसे मेरा रूप मांगने आये तब मैंने अपना रूप न देके वानरका रूपदिया तिसका हेतु यह है कि जो पुरुष संसारिक वस्तु तिसमें भी। "सर्वेन्द्रियाणांजरयन्तितेजः"। इत्यादि श्रुति प्रमाणसे, समस्त इन्द्रिय मन प्राण बुद्धि आदिकोंके बल पुरुषार्थक हरण करनेवाली नरक की सामग्री मानुषी स्त्री तिसकी कामनावाला मेरे स्वरूप को तो स्वप्न में भी पावता नहीं सो एतनाही नहीं किन्तु अवगतिको पावता है, अरु तुमको जो मैंने वानरका रूप दिया सो एतदर्थ दिया कि तुम मेरे मन से उत्पन्न हुये हौ अरु मन अति चञ्चल होताहै अरु पशुवों में वानर अति चञ्चल होताहै ताते चञ्चलतामें वानर अरु मनकी एकता है एतदर्थ वानरका मुख तुम

को दिया, अरु विशेष यह भी कारण था कि जो यह कामना के वश हुये नारद अपने वानराकृति मुखको देख विचारकर समझेंगे जो विष्णु ने मुझको यह चञ्चल पशुका मुख दिया है सो एतदर्थ दियाहै कि मेरा मन स्त्रीकामा हुआ अतिचञ्चलताको प्राप्त हुआ है ताते जैसे वानर चञ्चल स्वभाव पशु होनेसे त्यागने योग्य होताहै तैसे यह कामना युक्त चञ्चल स्वभावको प्राप्तहुआ मनभी विद्वान्करके त्यागनेही योग्यहै, अरु सांसारिक विषयों की कामना करने से अतिविषयी वानरआदि पशुयोनि की प्राप्ति होती है ऐसा विचार तुम अपने मनको कामना से रहित शान्तकर सुखी होते, परन्तु तुम कामना के ऐसे वशहुये कि आन्तर्य्य विचार न करके अपने वानराकृति मुख को देख मेरे उपकार के प्रतिपक्ष में तुमने मुझको शापदिया सो भी उत्तम किया। हे नारदजी! । "अथा कामयमानो योऽकामो निष्काम आप्तकाम आत्मकामःन तस्य प्राणाउत्क्रामन्ति ब्रह्मैवसन् ब्रह्माप्येति"। इत्यादि प्रमाण से जो पुरुष सर्वकामना से रहितहुआ केवल आत्मकामा होता है तब मेरे स्वरूपको पावता है। अरु हे नारदजी! जो पुरुष अन्य सर्वका भरोसा त्याग के मेरा स्मरण भजन करते हैं तिनकी मैं सर्वप्रकार रक्षाकरताहौं, जैसे माता अपने बालक पुत्रकी रक्षाकरती है तैसे, हे नारदजी! देखो जैसे स्त्रीका बालक अरु गौका बछरा आप अज्ञान अवस्थाको पाय अग्नि सर्पादि जो प्राणान्त पर्यन्त क्लेशके दाताहैं तिनको भी ग्रहण करने को दौड़ते हैं तहां उनकी सर्पादिकों से रक्षा माता करती है, अरु जब वो बालक प्रौढ़ (समझनेवाला) होताहै तब माता उसपर प्रीति तो करती है परन्तु पूर्ववत् नहीं, हे नारदजी! तहां ज्ञानी जो हैं सो मेरे प्रौढ़ पुत्रवत् हैं अरु वो ज्ञानवान् होनेसे। "विद्वान्नबिभेतिकुतश्चन"। इत्यादि प्रमाणसे वो कालादि सर्वके भयसे रहित। "ज्ञानीत्वात्मैव मेमतम्"। मेराही स्वरूप होताहै ताते मुझको उनकी चिन्ता नहीं अरु जो मेरे सेवक हैं सो मेरे बालक अज्ञानी पुत्रवत् हैं ताते उनकी रक्षाकी मुझको चिन्ता होतीहै, हे नारदजी! यह जो काम

क्रोध लोभ मोहादि आसुरी सम्पदाहै सो ज्ञानी अरु भक्त दोनोंको दुःखदायी है [अर्थात् ज्ञानी के जे कामादि रिपु कहे हैं सो परोक्ष ज्ञानी के समझने, अरु । "सन साधुना कर्म्मणा भूयान्नो एवासाधुना कनीयान्" । "तदेतदृचाभ्युक्तमेषनित्यो महिमा ब्राह्मणस्य न वर्द्धते कर्म्मणा नोकनीयान् तस्यैवस्यात्पदावित्तं विदित्वान लिप्यते कर्म्मणा पापकेनेति" । इत्यादि प्रमाणसे अपरोक्ष ज्ञानी का साधकबाधक कोई नहीं] हे नारदजी ! उक्तप्रकार विचारके पण्डितलोग मुझको सेवते हैं, अरु ज्ञानको पायके भी भक्ति को त्यागते नहीं । हे नारदजी ! काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सरता आदिक आसुरी सम्पदा अज्ञानकी सेना हैं तिन सर्व में यह स्त्रीरूपिणी माया अतिबलवान् सेनापतिहै इसके पीछे सर्वही आवते हैं । तथाच । "दर्शनाद्धरतेचित्तंस्पर्शनाद्धरतेबलम् । घर्षणाद्धरतेवीर्य्यं नारीप्रत्यक्षराक्षसी" ॥ एतदर्थ मैंने तुमको विवाह से निवारण किया है यह तुम्हारे विवाह न होने में कारण समझना ॥

३ हे सौम्य ! उक्तप्रकार सम्यक् विशेषज्ञानरूप रामजी उक्त नारदमुनि से कहके पुनः कहतेहुये कि अब मैं जो कहता हौं सो श्रवणकरो, मोहरूप जो अरण्य है तिसको प्रफुल्लित करनेवाली स्त्रीरूपा वसन्तऋतु है अरु यावत् जप तप व्रतादि धर्म्माचरण रूप जलाशय हैं तिन सर्वको शोषण करनेवाली स्त्रीरूपा अति दारुण ग्रीष्मऋतु है, अरु यावत् काम क्रोधादिरूप आसुरीसम्पदा रूप मेढकहैं तिन सर्वको हर्ष उपजावनेवाली स्त्रीरूपा वर्षाऋतुहै, अरु दुर्वासनादिरूप कुमुद समुदाय हैं तिनको सदा प्रफुल्लित रखनेवाली अरु सुख देनेवाली स्त्रीरूप शरद्ऋतु है, अरु समस्त धर्म्माचरणरूप जे कमल के वन हैं तिनको विनाश करनेवाली स्त्रीरूपा हेमन्तऋतु है, अरु मोह ममतादि रूप जवासा को वर्द्धमान करनेवाली स्त्रीरूप शिशिर ऋतु है, हे नारदजी ! अनेक प्रकारके जे पापरूप उलूकादि रात्रि के विचरनेवाले जीव हैं तिन को यह स्त्रीरूपा अत्यन्त अँधेरी रात्रि है, अरु हे नारदजी ! तुम सारिखे जे प्रवीण पुरुष हैं तिनके शुद्ध अन्तःकरणरूप सर में

निवास करनेवाले जे सत्यादिक शुभलक्षणरूप मीनगणहैं ति को नाश करनेवाली स्त्रीरूपा बंसी (मीन वेधन करनेका शस्त्र विशेष) है । हे नारदजी ! यह जो प्रमदा (स्त्री) है सो समस्त अवगुणका मूल अरु नरकादि शूलके देनेवाली महाअनर्थका कारणहै, अतएव मैंने तुम अपने भक्तको स्त्रीकी इच्छा से निवारण किया, अरु देखो मैं सीता ऐसी पतिव्रता साध्वी स्त्रीका पाणिग्रहण करनेसे इस दशाको प्राप्तहुआहौं तब अन्य साधारणजीव स्त्री की कामनाकर क्लेश भोगैं तिसमें क्या आश्चर्य है,किन्तु कुछनहीं

४ हे सौम्य ! उक्त प्रकार जब सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी ने नारदजी के विवाह निवारणके कारण निमित्तिक प्रश्नका उत्तर उपदेश कहा तब तिसको श्रवणकर नारदजी उक्तरामजीकी भक्त वत्सलतादेख अतिप्रसन्नचित्तहोय अपने नेत्रों में अश्रुजलको भ ल्याये अरु आपही आप मनमें विचारतेहुये कि जैसी इन रामजी की जनहितार्थ रीतिहै तैसी और किसकी है किन्तु किसीकीभ नहीं, देखो यह रामजी अपने सेवकों पर कैसी ममता अरु प्रीति करते हैं कि उनके अर्थ आप नाना प्रकार के संकट सह उनक सर्वप्रकार रक्षाकरते हैं । "योग क्षेमकरावहम्" । इत्यादिक उनके वाक्य हैं सो सत्यही हैं, अरु जो पुरुष अपने भ्रमको त्या इन रामजी ऐसे समर्थ स्वामीको नहींभजते तिनके समान ज्ञान रूप धनकरके रहित महादरिद्री हतभाग्य कौन है किन्तु को भी नहीं, इसप्रकार विचारकर पुनः नारदजी हाथ जोड़ बोले हे भगवन् ! हे विज्ञान विशारद रामजी ! हे भवकहिये जन्ममरण तिसकी भीरके हरणकर्त्ता ! अब आप सन्तके लक्षण कृपाकरके कहिये । इसप्रकार जब नारदजी ने विनयपूर्वक प्रश्न किया त श्री ज्ञानस्वरूप रामजी कहतेहुये कि हे नारदजी ! अब मैं सन्त के वो लक्षण कि जिनकरके मैं उनके वशहोताहौं तुम्हारे प्रति कहताहौं तिनको सावधानहोय श्रवण करो, काम, क्रोध, लोभ मोह, मद, मत्सरता यह षट्विकाररहित होय, अरु पापाचरण रहित अनघहोय, अरु सर्वकामनासे रहित अकामहोय, अरु अ

चल (विश्वासी) होय, सर्व त्यागीहोय, पवित्र होय, प्रसन्न चित्तहोय, अरु अमित बोधवान् (असाधारण ज्ञानी) होय, अरु अनीह (चेष्टारहित) होय, अरु मितभोगी (थोड़ा भोजनकरनेवाला) होय, अरु सत्यभाषण करनेवाला होय, अरु व्यवहार परमार्थमें चतुरपण्डितहोय, अरु प्राणायामादिकोंका कर्त्ता इन्द्रियजीत योगीहोय, अरु सर्वदा सावधान मान मदसे रहित धैर्य्यवान् धर्मकी सूक्ष्मगतिका जाननेवाला होय हे नारदजी ! । " त्रैगुण्य विषयावेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन " । इत्यादि प्रमाणसे अपराविद्या रूप वेदका विषय जो तीनोंगुणकी आकर संसार तिसके दुःखसे रहित सदा विगत संदेह होय अरु सर्व संशयरहित मेरे चरणकमल में अनन्य प्रीतिवाला होय तिसको गृहरूप बन्धन अरु देहरूप उपाधि रहती नहीं [अर्थात् वो निर्बन्धहुआ जीवन्मुक्त होता है] ॥

५ हे सौम्य ! उक्तप्रकार सम्यक् विशेषज्ञानरूप रामजी नारदजी प्रति सन्तके लक्षण कहत सन्ते पुनः कहतेहुये कि हे नारदजी ! जो पुरुष अपने गुण श्रवण करनेसे चित्त में सकुचताको प्राप्तहोता है, अरु पराये गुणको श्रवणकर अतिहर्षवान् होताहै, अरु सर्व प्राणी के सुख दुःख सम जानताहै, अरु राग द्वेषके ताप से रहित शीतल हृदय रहताहै, अरु धर्मनीति जो शास्त्र मर्य्यादाहै तिसको कदापि त्यागता नहीं, अरु छल कपट विषमभावसे रहित सदा एकरस सरलस्वभाव सर्वके साथ प्रीतिकरता वैरभाव जिसके हृदयसे उठगयाहै, अरु वेद शास्त्र करके जो जप, तप, व्रत, शम, दम, दान, संयम, नेम आदिक कहे हैं तिन सर्वको निष्कामहुआ करताहै, अरु जो सर्व संशयको छेदनकर सत्य वस्तुका उपदेष्टा गुरु, अरु गोविन्द [अर्थात् गोकहिये शास्त्र तिसकरके जो प्राप्त होय सो गोविन्द] अर्थात् वेदान्त शास्त्रकरके ब्रह्म से अभिन्न आत्मा, अथवा गो कहिये इन्द्रियां तिसकरके जो प्राप्त होय सो कहिये गोविन्द, इस अर्थ में विषयोंको गोविन्द विशेषणकी प्राप्ति है परन्तु सो यहां ग्राह्यनहीं, यहां यह विचारनीय है कि जो इन्द्रियोंद्वारा विषयादिकोंको अनुभवकर्त्ता अनुभवी आत्मा है सो चक्षुरादि इन्द्रियोंद्वारा अनुभवमें आवताहै तातें प्रतीक आत्माको गोविन्द कहते हैं, अथवा गोविन्द कहिये भगवान् विष्णुदेव, अरु। " शमोदमस्तपःशौचंक्षान्तिरार्जवमेवच । ज्ञानंविज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्मस्वभावजम् "। इन ब्राह्मणके स्वाभाविक असाधारणलक्षणकरके युक्त ब्राह्मण, इन तीनोंके चरणोंमें भेदरहित प्रेम रखता है अरु श्रद्धा जो। "श्रद्धावान् लभते ज्ञानं ज्ञानवान्माभ्युपयते"। इत्यादि प्रमाणसे, मेरी प्राप्तिमें मुख्यकारणहै, अरु क्षमा जो क्रोध रूप असुरको नाशकरनेवाली कालिका देवी है, अरु मैत्री जो सर्वत्र सुख उपजावनेवाली लक्ष्मी है, अरु दया जो सर्वको अभयकरनेवाली है, अरु मुदिता (सन्तोषसेहुई सुखाकार वृत्ति) इन सर्व सत्त्वगुणात्मक परमउत्तम वृत्तियांसहित मेरे। " तद्विष्णोः परमंपदम् "। परमव्यापक चैतन्य सर्वाधिष्ठानरूप परमपदमें, कि जो ब्रह्मा विष्णु शिवादिकरके पावने योग्य पदहै, अरु जिसके साक्षात् अनुभव स्थितीके अर्थ ब्रह्मा कमलकीनालमें स्थितहोय निर्विकल्प समाधिको, अरु विष्णु भगवान् क्षीरसागरमें शेषशय्या के ऊपर योगनिद्रारूप समाधिको, अरु शिवजी महाराज श्मशानमें बैठके शरीरकी अन्तस्थितिको देखावते असम्प्रज्ञातसमाधिको, इस प्रकार मुख्य तीनोंदेवता उक्त समाधियोंको करतेहैं। तिस विष्णुपद में, कि जो। " वित्तात्प्रेयो पुत्रात्प्रेयो प्राणात्प्रेयो "। इत्यादिप्रमाण से सर्वका प्रेमास्पदहै, माया (भेद)रहित प्रीति(जिज्ञासा)करताहै अरु तिसके साधन सत्यासत्यवस्तुकाविवेक, अरु असत्यसे वैराग्य अरु ज्येष्ठश्रेष्ठोंसे विशेष सामान्यसे सामान्य विनय नम्रता निरभिमानता रखताहै, अरु शुभअशुभ कर्तृत्व अकर्तृत्वआदिकोंका जाननेवाला अरु वेदशास्त्रका बोधवालाहै। अरु हे नारद ! व्यवहारदशामें भी किसीसे दंभ (अपनेकोश्रेष्ठ कहलावनेकेअर्थ नानास्वांग रचने)अरु मान(अपनेविषे महत्त्वपानेकीबुद्धि)अरु मद(धनादिहोनेके निमित्तसे अभिमान) इत्यादि करता नहीं, अरु भूलके भी वेद शास्त्रकी मर्यादरूप मार्गको त्याग अन्य मार्गमें चलता नहीं, अरु

निरन्तर मेरी लीलाका वा स्वरूपका श्रवण कीर्त्तन वा मनन करनेवालाहै, अरु अपने प्रयोजन से रहित दूसरे के हित में रति शीलहै, हेनारद! इत्यादि लक्षणवान् पुरुषको तुम मेरासेवकजानो अरु हे नारद! जितने साधुके लक्षणहैं सोसर्व शास्त्रादिकभी कहने को समर्थ नहीं॥ गीतोक्ति प्रमाण भक्त के लक्षण॥ हे नारदजी! मैंने अपने कृष्णावतारूप से अपने भक्त सखा भ्राताऽर्ज्जुनप्रति साधुके लक्षणकहे हैं। तहां प्रथम अर्ज्जुनने प्रश्नकियाहै कि हे कृष्ण!। "स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्यकेशव। स्थितधीःकिं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् "॥ स्थितप्रज्ञ किसको कहते हैं अरु समाधिस्थ किसको कहते हैं अरु कैसे बैठते हैं अरु कैसे चलते हैं सो कृपाकरके कहिये, तब कृष्ण ने कहा कि। "प्रजहाति यदा कामान् सर्वान्पार्थमनोगतान्। आत्मन्येवात्मनातुष्टःस्थितप्रज्ञस्तदोच्यते"॥दुःखेष्वनुद्विग्नमनाःसुखेषुविगतस्पृहः। वीतरागभयक्रोधःस्थितधीर्मुनिरुच्यते"॥ "यःसर्व्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्यशुभाशुभम्। ननिन्दतिनवैद्वेष्टितस्यप्रज्ञाप्रतिष्ठिता"॥"यदासंहरतेचायं कूर्मोंगानीवसर्वशःइन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्यप्रज्ञाप्रतिष्ठिता"॥ हे सखा! हे अर्ज्जुन! जो पुरुष अपनेमनकी सूक्ष्मकामनाको जिस कालमें अशेषत्यागताहै अरु अपने आप आत्मानन्दकरके आपसन्तुष्टहोजाता है तब तिसपुरुषको स्थितप्रज्ञ कहतेहैं॥ हे अर्ज्जुन! जो पुरुष दुःखमें उद्वेगवान् होता नहीं अरु सुखमें हर्षवान् होता नहीं, अरु रागद्वेषभय क्रोध तिनसर्वसे रहित होताहै तिसकोबुद्धिमान् मननशीलपुरुष स्थितप्रज्ञकहतेहैं॥ अरु जो सर्वके स्नेहसे रहितहोताहै अरु शुभाशुभमें आग्रह करता नहीं, अरु न किसीकी स्तुतिकरताहै न निन्दाकरताहै तिसको स्थितप्रज्ञ कहतेहैं॥ अरु हे सखा! जैसे कच्छप अपने अंगोंको सकोचलेताहै, तैसेही जो पुरुष अपनी बाह्य विषयासक्त इन्द्रियोंको विषयोंसे हटाय अन्तर्मुख अपने आत्माकी ओर करताहै सोईस्थितप्रज्ञ प्रतिष्ठित साधुहोताहै॥ हे नारदजी! अब औरप्रकार भी भक्तोंकेलक्षण श्रवणकरो श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे अर्ज्जुन!। "अद्वेष्टासर्वभूतानां मैत्रःकरुण एवच।

निर्ममोनिरहङ्कारः समदुःखसुखःक्षमी" ॥ "सन्तुष्टःसततंयोगी यतात्माद्दढनिश्चयः। मय्यर्पितमनोबुद्धिर्योमेभक्तःसमेप्रियः"॥ "यस्मान्नोद्विजतेलोकोलोकान्नोद्विजतेचयः। हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यःसचमेप्रियः"॥ "अनपेक्षःशुचिर्दक्ष उदासीनोगतव्यथः। सर्व्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तःसमप्रियः"॥ योन हृष्यतिनद्वेष्टिनशोचति न काङ्क्षति। शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः समेप्रियः"॥ समः शत्रौच मित्रेच तथामानापमानयोः। शीतोष्णसुखदुःखेषु समःसंगविवर्जितः" ॥ तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टोयेनकेनचित्। अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान् मे प्रियोनरः" ॥ येतु धर्म्मामृतमिदंयथोक्तं पर्य्युपासते। श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः" ॥ जो प्राणिमात्रसे द्वेषकरता नहीं, अरु सर्व्वसे मित्रता रखताहै, सर्वपर करुणाकरता है [अर्थात् दूसरेको दुःखी देख आपभी दुःखी होताहै] अरु ममतास्पद (पुत्र कलत्रधनादि) अरु अहंतास्पद देहादि तिनमें से ममता अहंताका त्यागकियाहै। अरु दुःख सुखको आगमापायी जानताहै अरु अपनेको दुःख देनेवाले पर भी क्षमाकरता है अरु यथालाभ सन्तुष्टरहताहै अरु निरन्तर आत्मयोगी होताहै, अरु जितेन्द्रिय होताहै, अरु जिसको मेरेबिषे द्दढनिश्चयहै। अरु मेरेबिषे मनबुद्धि अर्पणकियाहै ऐसा जो मेरा भक्त है सो मुझको प्रियहै॥ हे अर्ज्जुन! जिससे लोक उद्वेग पावतेनहीं अरु लोगसे वो उद्वेग पावतानहीं, अरु हर्ष अरु आमर्ष भय उद्वेग रहित हुआहै ऐसा जो पुरुषहै सो मुझको प्रियहै अरु सर्वसे अनपेक्षहुआ सदा पवित्ररहताहै, सर्वकार्य में चतुरहोता है अरु निर्दुःख हुआ सर्वसे उदासीन रहता है अरु सर्व आरम्भको परित्याग किये है [अर्थात् जिसके हृदयसे यह भाव कि मुझको यह कर्त्तव्य है सो उठगयाहै अरु जिस समय जैसा कुछ कार्य्य आवता है तिसको निरभिमान हुआ करताहै] ऐसा जो मेराभक्त है सो मुझको प्रियहै॥ हे सखा! जो सुखपायके हर्षित नहींहोता अरु दुःखपायके द्वेष नहीं करता अरु गई वस्तुको शोचतानहीं अन्यकी आकांक्षा नहीं अरु सर्वको मायामात्र असत्यजानके यह

शुभ है यह अशुभहै इसभावना को त्यागकर केवल एक मुझको सत्य जान मेरी भक्ति करताहै सो मुझको प्रियहै ॥ हे अर्जुन ! जो अपनेमित्र अरु शत्रुमें समभाव रखताहै [अर्थात् अपने मित्रको देख राग नहींकरता अरु शत्रुको देख द्वेष नहींकरता ऐसा जो सर्वत्र राग द्वेषसे रहित होताहै] अरु अपने मान अपमानको तुल्य जानताहै [अर्थात् जो किसीने अपमान किया तो वा किसीने मान्यप्रतिष्ठा किया तो दोनों को शरीरके आश्रय जानके आप तिनसे पृथक्हुआ समरहताहै] अरु शीत उष्ण दुःख सुख इन सर्वको आगमापायी जान सर्वको सहन करतसन्ते सम अरु शरीरके धर्म्म जानके आप असंग रहता है, ऐसा जो पुरुष है सो मुझको प्रियहै ॥ हे पाण्डव ! जो अपनी निन्दास्तुतिको श्रवणकर मौन रहताहै [अर्थात् निन्दास्तुति करनेवाले के वाक्यकी प्रवृत्ति जो कहनेवाले को दृश्य शरीरहै तिसमें होती है ऐसा विचार आप शरीरादिकों से पृथक्हुआ किसी को कुछभी उत्तर देता नहीं] अरु जैसा कुछ हानि लाभ आय प्राप्त होता है तिसही में सन्तुष्ट रहताहै, अरु गृह कुटुम्ब में आसक्त होता नहीं, अरु सदा स्थिर मति रहताहै ऐसा जो मेराभक्तहै सो मुझको प्रिय है ॥ हे कौंतेय! जिसप्रकार यह मैंने अमृतमय भक्तिधर्म उपदेश कियाहै तिसको कहे प्रकार जो सेवता है अरु शुद्ध श्रद्धान्वित हुआ मेरे परायण रहताहै ऐसा जो मेरा अनन्यभक्तहै सो मुझको अतीव प्रियहै ॥ हे नारदजी ! कहेप्रकार के लक्षणोंकरके युक्त जो पुरुषहै तिसको आप मेरा भक्त साधु सेवकजानो ॥ हे सौम्य ! कहेप्रकार सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी सामान्य साधनरूप पर्य्यासरके निदिध्यासनरूप घाटके निकट सविकल्प समाधिरूप वृक्षके नीचे जिज्ञासुरूप नारदमुनिसे अपने भक्त साधुके लक्षण कहके कहतेहुये कि हे नारद ! यावत् साधुके लक्षणहैं तिनको कहनेको श्रुति शेष शारदा आदि कोई भी समर्थ नहीं [अर्थात् यहां जो कहा कि सन्तके लक्षण कहनेको श्रुति शेषादिकभी समर्थ नहीं सो श्रुति शेषादिकों की असमर्थता देखावने के अर्थ नहीं किन्तु सन्तके

लक्षणों की प्रशंसाके अर्थमें है] इसप्रकार दीनबन्धु परमकृपालु भगवान् रामजीने अपनेभक्तके लक्षणोंकी प्रशंसा अपने श्रीमुखसे नारदप्रति वर्णन किया, तब तिसको श्रवणकर उक्त नारदजी अतिप्रसन्नहोय उक्तरामजीको वारंवार प्रणामकर आज्ञाले ब्रह्मलोक को जातेहुये ॥ हे सौम्य ! सन्त कहते हैं कि वो पुरुष कि जिन्होंने मोक्षपर्यन्तकी आशा त्यागके उक्त रामरंगमें रंग रहे हैं सोई सर्व प्रकार धन्यवाद करनेयोग्य हैं। हे सन्तो ! यह अहंलक्षणात्मक मूलाज्ञानरूपरावणके नाशकर्त्ता जे सम्यक् विशेष ज्ञानरूप रामजी तिनका जो परम पावन यश (शास्त्र) है तिसको जो कहते सुनते हैं सो वैराग्यादिसाधन विनाहुये भी उक्त रामजी विषयक दृढ़ अनन्य भक्ति पावतेहैं। अब सन्त अपने मनको शिक्षाकरते हैं कि हे मन ! यह जो देखने में अति सुन्दर अस्थि मांसादि अति अपवित्र मलमय पूतलीजो स्त्री, बल, धर्म, विवेक, प्रज्ञाका नाश करनेवाली दीपक की शिखावत् रूपवान् देख तू इस में आसक्त मति हो नतु; जैसे पतंगनाम कीट दीपक में आसक्त हुआ अपने नाशको पावता है तैसे तू भी अपने नाश को प्राप्त होगा अतएव तू अपने परमकल्याणार्थ काम क्रोध मद मत्सरतादि आसुरी सम्पदा को त्याग सत्पुरुषोंका सत्संग करत सन्ते उक्त रामजी के श्रवण मनन निदिध्यासन परायण हो ॥

इति रामायणेऽध्यात्मगोचरेऽरण्यकाण्डे रामनारद समागमवर्णनन्नामषोडशमंप्रकरणंसमाप्तम् ॥

इति रामायण अध्यात्मविचार अरण्यकाण्डं समाप्तम् ॥

॥ इश्तिहार ॥

भगवद्गीता नवलभाष्य ३ ॥) पुस्ता ॥

प्रकटहो कि यह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति सांख्यादि सारभूत परमरहस्य गीता शास्त्र का सर्व्वविद्यानिधान सौशील्य विनयौदार्य्य सत्यसङ्गर शौर्य्यादिगुणसंपन्न नरावतार महानुभाव अर्जुन को परम अधिकारी जानके हृदयजनित मोहनाशार्थ सब प्रकार अपार संसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचर कराया है यही उक्त भगवद्गीता वज्रवत् वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको अच्छे २ शास्त्रवेत्ता अपनी बुद्धि से पार नहीं पासक्के तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठन पाठन करने की सामर्थ्य है वह कब इसके अन्ताभिप्राय को जानसक्के हैं और यह प्रत्यक्षही है कि जबतक किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तुका अन्ताभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तबतक आनन्द क्योंकर मिलै इसप्रकार सम्पूर्ण भारतनिवासी श्रीमद्भगवत्पादाब्जरसिकजनोंके चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्ततधर्म्मधुरीण सकलकलाचातुरीण सर्व्वविद्याविलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमान् मुंशी नवलकिशोरजी (सी. आई. ई) ने बहुतसा धन व्ययकर फर्रुखाबादनिवासि पण्डित उमादत्तजी से इस मनोरञ्जन वेद वेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशङ्कराचार्य्यनिर्मित भाष्यानुसार संस्कृत से सरल देशभाषा में तिलक रचाय नवलभाष्य आख्य से प्रभातकालिक कमलसदृश प्रफुल्लित करादियाहै कि जिसको भाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्के हैं ॥